

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186227

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 290/Ab 16^k Accession No. H 23 02

Author अबु महम्मद इमामुद्दीन

Title कुरआन का परिचय. N.D

This book should be returned on or before the date last marked below.

कुत्रानि का परिचय

या

अमपारा मऽ. तर्जमा व तशरीह



अज्ञ

मौलाना अबू मुहम्मद इमामुद्दीन
रामनगरी



पब्लिशर

इस्लामी साहित्य सदन
रामनगर, बनारस स्टेट ।

क्रीमत् १॥)

कुछ ज़रूरी बातें

अरबी इबारत हिन्दी में सहीह नहीं लिखी जा सकती लेकिन सहीह लिखने की जितनी कोशिश हो सकती थी वह की गई है। अगर मेरे पास प्रेस होता और मैं ज़रूरत के मुताबिक़ टाइप बनवा सकता तो इससे भी ज़ियादा सहीह इबारत हो सकती थी लेकिन मेरी माली हालत ऐसी नहीं है कि मैं प्रेस खरीद सकूँ इन दिक्कतों के होते हुए भी हिन्दी में अमपारा छापने की वजहें यह हैं।

१—बहुत से ग़ैर मुस्लिम भाई क़ुअ्रान शरीफ़ को तालीम से वाकिफ़ होना चाहते हैं ख़ुद हमारा भी फ़र्ज़ है कि हम क़ुअ्रान को तालीम को उन तक पहुँचाएं। उनके लिए सिर्फ़ तर्जमा छापना मुनासिब न था, फिर उन में बहुत से ऐसे हैं जो तर्जमा के साथ अस्ल इबारत को भी देखना चाहते हैं, उनके लिए अस्ल इबारत हिन्दी में छापने के सिवा और कोई सूरत न थी

२—इसे मुसलमानों की बद किस्मती समझिए या उलमा की ग़फ़लत कि मुल्क में लाखों मुसल्मान हैं जो न अरबी में क़ुअ्रान पढ़ सकते हैं न उर्दू से वाकिफ़ हैं वह सिर्फ़ हिन्दी जानते हैं और हिन्दी ही में अमपारा, पंजसूरा, दुआ, वज़ीफ़ा और नमाज़ वग़ैरह सब चीज़ें पढ़ते हैं। ऐसे मुसल्मानों के लिए बम्बई, कलकत्ता, देहली, और दूसरे शहरों के ताजिर अमपारा और पंज सूराह वग़ैरह तहरीफ़ की हद तक शलत छाप कर बेच रहे हैं। उनको गुनाह से बचाने के लिए इसके सिवा और कोई तरीका नहीं है कि उनकी ज़रूरत की चीज़ें मुम्किन हद तक सहीह हिन्दी में छाप दी जाएं।

३—जैसा कि हम बता चुके हैं अरबी इबारत हिन्दी में सहीह नहीं लिखी जा सकती न हर ज़रूरत के टाइप मौजूद हैं फिर भी जो थोड़ी सी कोशिश हो सकी है वह यह है। अरबी के बहुत से हुरूफ़ हिन्दी में नहीं हैं उन में से कितने हुरूफ़ ऐसे हैं जिनकी

आवाज एक दूसरे से मिलती जुलती है, इन सभ का फर्क जाहिर करने के लिए हमें मुतासिब चीजें नहीं मिल सकीं। इस सिलसिले में मैं ने थोड़ी सी कोशिश यह की है कि ऐन (ع) हे (ح) द्वाद (ض) और तो (ط) की पहचान के लिए अ, ह., द., और त के नीचे नुक्ते लगा दिए हैं। से (ث) सीन (س) और स्वाद (ص) का फर्क जाहिर करने के लिए सिर्फ स्वाद (ص) के नीचे नुक्ता लगाया गया है। ग़ैन (غ) फ़े (ف) और क़ाफ़ (ق) के जाहिर करने के लिए भी ग, फ, क के नीचे नुक्ते लगा दिए गए हैं। ज़ाल (ز) ज़े (ذ) और जो (ظ) का फर्क जाहिर नहीं हो सका, जहां लफ्जों के नीचे ऐन (ع) और हम्ज़ा (ء) हैं वहां ऐन के लिए यह निशान ۛ और हम्ज़ा के लिए ۞ लगाया गया है। हो सकता है कि कहीं कहीं नुक्ते रह भी गए हों।

छोटी बड़ी मदों के लिए २ और ३ के अदद डाले गए हैं जिस हर्फ के सामने २ का अदद हो उसे कुछ खींच कर पढ़ना चाहिए और जिस हर्फ के सामने ३ का अदद हो उसे कुछ और भी खींच कर पढ़ें (सूरह 'नबा' में मदों का इतिजाम नहीं हो सका है) दो निशानों के बीच में जो सिलसिलेवार गिन्तियां लिखी हुई हैं वह आयतों का निशान हैं, जिस आयत के आखिरी हर्फ के नीचे हलन्त यानी यह निशान ۞ लगा हुआ है वहां रुक कर सांस तोड़ देना चाहिए। आयत के इलावा बीच में जिस हर्फ पर हलन्त लगा है वह हिन्दी क़ाएदे के मुताबिक आधा पढ़ा जाएगा।

४- अरबी न जानने वाले जो मुसल्मान इस पारे से फायदा उठाना चाहें वह एक बार उसे किसी ऐसे शख्स को सुना लें जो अरबी में क़ुआन शरीफ पढ़ा हुआ है। हर मुसल्मान को अरबी में क़ुआन शरीफ पढ़ने का कोशिश करनी चाहिए, और अपने बच्चों को तो जैसे भी हो अरबी में क़ुआन शरीफ पढ़वाना चाहिए।

दीवाचा

कुर्आन शरीफ के आखिरी पारे का जो "अम पारा" के नाम से मशहूर है यह तजुमा हिन्दी में छप रहा है। इसलिये इसे वह मुसल्मान भी पढ़ेंगे जो सिर्फ हिन्दी ही जानते हैं और हिन्दी जानने वाले वह गैर मुस्लिम भाई भी जो इस्लाम को समझना और कुर्आन की तालीम से वाक़िफ़ होना चाहते हैं। ऐसे मुसल्मान और गैर मुस्लिम भाइयों के लिये नीचे लिखी हुई बातों का समझ लेना इस्लाम और कुर्आन शरीफ़ की तालीम के समझने में बहुत मदद देगा।

इस्लाम के तीन बुनियादी अक़ीदे (विश्वास) हैं और इन्हीं तीनों अक़ीदों से बाक़ी अक़ीदे और सारे अहक़ाम (आदेश) निकले हैं।

ख़ुदा का अक़ीदा :—आस्मान, सूरज, चांद, सितारे, ज़मीन, समुन्दर, पहाड़, आदमी, पेड़ पौदे और दूसरी सारी चीज़ें आप से आप पैदा नहीं हो गई हैं, सब चीज़ों का एक पैदा करने वाला है और वह ख़ुदा है।

ख़ुदा को किसी ने पैदा नहीं किया है, वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा, उसमें कोई ऐब और कमी नहीं है। वह ख़ूबी ही बी और कमाल ही कमाल है। न वह किसी का मुहताज है और न किसी काम में बेबस, वह सब से बेपर्वा और बेनियाज़ है। वह जो चाहे कर सकता है, और जो चाहता है, करता है। सब कुछ उसी के इक़्तियार से हो रहा है। कोई उसे रोकने टोकने

वाला नहीं। वही सब को रोज़ी देता है और वही सब को जिलाता मारता है। उससे कोई चीज़ छिपी नहीं है न छिप सकती है। उसके लिये खुला और छिपा सब बराबर है। वह दिलों के भेद और आंखों के गुनाह को भी जानता है। कोई उसकी बराबरी का नहीं, न कोई उसके मर्तबे और इख्तियार में उसका साभी है, वह अकेला है।

ख़ुदा के सिवा कोई पूजा और इबादत के लायक नहीं है, उसीने सबको पैदा किया है इसलिये वही इस लायक है कि उसकी पूजा और इबादत की जाये और उसके हुक्मों को माना जाये। सारी मख़लूक अपनी क़िस्मत (प्रकृति) में उसी की हुक्म बर्दार है।

पैग़म्बरी का अकीदा:—ख़ुदा ने इन्सान को पैदा करके आज्ञाद नहीं छोड़ दिया है कि वह जिस तरह चाहे रहे सहे और उसकी पैदा की हुई चीज़ों को जिस तरह चाहे काम में लाये और उनसे फ़ाइदा उठाये। ख़ुदा ने जिस तरह इन्सान के लिये ज़िन्दगी गुज़ारने का सामान किया उसी तरह उसने इस बात की तालीम और हिदायत का भी इन्तिज़ाम किया कि आदमी दुनिया में कैसे रहे सहे, और उसकी पैदा की हुई चीज़ों को किस तरह काम में लाये ताकि वह आराम, इत्मीनान और इन्सानियत के साथ ज़िन्दगी गुज़ार सके। इसके लिये ख़ुदा ने आदमियों में से कुछ को अपना रसूल और पैग़म्बर बनाया, और अपनी तरफ़ से उनके पास इन्सान के रहने सहने के उसूल और अहक़ाम (आदेश) भेजता रहा। हज़रत आदम जिन से इन्सान की नस्ल चली ख़ुदा के पहले पैग़म्बर थे, उनके बाद उनकी औलाद में बराबर ख़ुदा के पैग़म्बर और रसूल होते रहे जो दुनिया के हर मुल्क, हर क़ौम और हर

जमाने में हुए, खुदा के उन पैगम्बरों ने पूरी सच्चाई और पूरी कोशिश के साथ खुदा के अहकाम और आदेश आदमियों तक पहुँचाये ।

हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) खुदा के अखिरी पैगम्बर हैं, आपके बाद न कोई पैगम्बर होगा और न खुदा की तरफ से कोई किताब आएगी, क्योंकि क़ुर्आन खुदा की अखिरी किताब है, आप की पैगम्बरी और क़ुर्आन शरीफ सारी दुनिया की क़ौमों के लिये और क़ियामत तक के लिये है । १४०० बरस की दुनिया की तारीख गवाह है कि हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद न कोई पैगम्बर हुआ न खुदा की तरफ से कोई किताब आई ।

आखिरत का अक़ीदा:—इस्लाम का तीसरा बुनियादी अक़ीदा यह है कि एक रोज़ आस्मान और ज़मीन का यह कार-ख़ाना तहस नहस कर दिया जायेगा, यह बड़ा ही भयानक और डरावना दिन होगा, सूरज चांद और सितारे टूट जावेंगे, समुन्दर खोल उठेंगे, पहाड़ धुनी हुई ऊन की तरह उड़ने लगेंगे, आदमी और सारे जानदार उस दिन की हौलनाकी को सह न सकेंगे और सब के सब मर जायेंगे, एक खुदा की ज़ात बाक़ी रह जाएगी, इसके बाद वह दूसरा आस्मान और ज़मीन पैदा करेगा और हजरत आदम से लेकर क़ियामत तक जितने इन्सान पैदा होकर मरे होंगे उन सब को दोबारा ज़िन्दा कर देगा और उन सब को अपने सामने बुलायेगा और उन से दुनिया के कामों का रत्ती रत्ती भर हिसाब लेगा, जिन लोगों ने उसकी खुशी का ध्यान रखा होगा और पैगम्बरों के ज़रीआ उसके भेजे हुए जानते और क़ानून के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी होगी उन को जन्नत में जगह देगा जिस में आराम और राहत के ऐसे ऐसे सामान होंगे

किसी के खयाल में भी नहीं आ सकते । और जिन लोगों ने स की खुशी और मर्जी की पर्वा न की होगी, उसके भेजे हुए सूल और कानून को तोड़ कर अपनी पसंद और खाहिश की ज़न्दगी गुज़ारी होगी एनको इस बगावत और बेहुकमी की आज़ा में दोज़ख में डाल देगा, उस में तकलीफ और मुसीबत का ऐसा ऐसा सामान होगा जो किसी के खयाल में भी नहीं आ सकता ।

क़ुरआन शरीफ की पूरी तालीम और हिदायत ऊपर के तीन अक़ीदों पर फैली हुई है और क़रीब क़रीब क़ुरआन के हर सफ़हे पर इन तीनों अक़ीदों की बातें मिली जुली पाई जाती हैं ।

क़ुरआन की खास खास बातें यह हैं—

क़ुरआन की खास खास बातें

१—आस्मान, ज़मीन, सूरज, चांद, सितारे, दिन, रात, हवा, पानी, बादल, बारिश, दरिया, पहाड़, इन्सान, जानवर, अनाज, फूल, फल वगैरह से ख़ुदा की हस्ती (अस्तित्व) और उसकी कुदरत और हिक्मत की दलीलें और सुबूत, आसमान कैसा साफ़ और मज़बूत बना हुआ दिखाई देता है ! ज़मीन कैसी फैली और बराबर बिछी हुई मालूम होती है ! सूरज और चांद कैसे हिसाब से निकलते और डूबते हैं ! हवा किस तरह बादल को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचा देती है । उन से पानी कैसे बरसता है, पानी से किस तरह अनाज और फूल फल पैदा होते हैं जिन से आदमी और जानवर पलते और जीते हैं । ख़ुद आदमी कितने गन्दे पानी की एक बूंद से पैदा होता है, और वह बड़ा हो कर इल्म और अक़ल के कितने ऊँचे दर्जे पर पहुँच जाता है । कैसी कैसी चीज़ों का पता लगाता, हिक्मत और साइंसके कैसे कैसे भेद मालूम करता, कैसी कैसी चीज़ें बनाता और कैसे बड़े बड़े काम

करता है ।

यह और दूसरी सारी चीजें जिन को आदमी जानता है और जिन को नहीं जानता किसी बनाने वाले के बगैर नहीं बन गईं और जो इन चीजों का पैदा करने वाला है वही आस्मान और ज़मीन के सारे कारखाने को चला रहा है, वह अपने हक़ और इख्तियार में अकेला और अपनी शान और क़दरत में निराला है, किसी बात में कोई उसका शरीक और उसकी बराबरी का नहीं ।

२—जब सब कुछ खुदा ही का बनाया हुआ है, वही सब का मालिक है, सब जगह उसी का हुक्म चल रहा है और हर चीज़ उसी की मर्ज़ी के मातहत काम कर रही है तो इन्सान को भी उसी का हुक्म बर्दाश्त और उसी का बन्दा बन कर रहना चाहिये, इसी में उसको दुनिया और आख़िरत की भलाई है ।

३—चूँकि खुदा सब का ख़ालिक और मालिक है और सारी ही चीज़ें उसकी मख़लूक (पैदा की हुई) और मइकूम (अधीन) हैं इस लिये इससे बढ़ कर ग़लत और बुरी बात कोई नहीं हो सकती कि उसके हक़ और इख्तियार में किसी को शरीक किया जाये, किसी को उसकी बराबरी का माना जाये और उसके साथ किसी और की पूजा बंदीगी की जाये, सूरज हो या चांद सितारे, आग़ हो या पानी, जानवर हों या दरख़्त, फरिश्ते हों या जिन, पैग़म्बर हों या अवतार, इमाम और वली हों या ऋषि मुनि, कोई भी इबादत और पूजा के लायक़ नहीं, खुदा के सिवा किसी और को इस लायक़ समझना कुआन के नज्दीक 'शिरक' है, खुदा को शिरक से ज़्यादा कोई चीज़ नापसंद नहीं, वह इसे अपने ख़िलाफ़ बगावत करार देता है कि कुआन शरीक में सब से ज़्यादा जोर खुदा की तौहीद (एकत्व) पर दिया गया है, और सब से ज़्यादा बुराई कुफ़्र और शिरक की क़्यान की गई है ।)

४—पैगम्बरी और खुदा की तरफ से तालीम और हिदायत आने की जरूरत पर दलीलें दी गई हैं और खुदा के पैगम्बरों के हालात बयान किये गये हैं कि वह कितने नेक इन्सान थे और उन को इन्सानों की भलाई और ख़ैरखाही की कितनी फ़िक्र थी, फिर यह कि उनको अपनी पैगम्बरी का कितना सच्चा यकीन था, उन्होंने ने कितनी लगन और कोशिश से ख़ुदा के पैग़ाम उसके बन्दों तक पहुँचाये, इस फ़र्ज़ के अदा करने में उन्हें कैसी कैसी मुसीबतें भेलनी पड़ीं, लोगों ने उनको झुठलाया, बदनाम किया, हंसी उड़ाई, बुरा भला कहा, उन पर तुहमत लगाई. उनके खिलाफ़ ग़रोह बन्दी की, उनका बाईकाट किया, ढेले पत्थर मारे, बतन छोड़ने पर मज्बूर किया, कितने पैगम्बरों को जान से मार डाला ।

बताया गया है कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आपकी क़ौम ने कितना सताया, कितना दुख दिया, किन किन तरीक़ों से आपको झुठलाया, आप पर कैसे कैसे बुहतान बांधे, आपके खिलाफ़ लोगों को भड़काया, सारे मुल्क को आपके मुक़ाबिले में खड़ा कर दिया, आप की जान लेने की कोशिश की, यहां तक कि आप अपना बतन छोड़कर मदीना चले गये, फिर भी आप पर चढ़ाई की और बरसों तक आपसे जंग करते रहे । आपने ख़ुदा की राह में सब कुछ भेल लिया, लेकिन अपने फ़र्ज़ से मुंह न मोड़ा, मक्का में जब आप बिल्कुल बेबस थे और दुश्मनों का मुक़ाबला न कर सकते थे, और मदीना जाने के बाद भी जब आप थोड़े से मुसल्मानों को साथ लेकर जिनके पास न पेट भर खाने को था न लड़ने के लिये पूरा सामान, दुश्मनों का मुक़ाबला कर रहे थे, ख़ुदा आपको बराबर तसल्ली और दिलासा देता रहा कि कामयाबी आप ही के

लिये है । आखिर यही हुआ कि खुदा की मदद आना शुरू हुई, मक्का फतह हो गया, आपके दुश्मन मर मिट गये या मुसलमान हो गये और सारे अरब में इस्लाम फैल गया ।

५— उन लोगों का हाल जो खुदा और उसके पैगम्बरों पर ईमान लाये और उनके साथ हर तरह की तकलीफें और मुसीबतें उठाईं, हजरत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सहा-बियों (साथियों) को हर तरह की तकलीफें और मुसीबतें झेल कर भी दीन पर जमे रहने और हजरत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का साथ देने रहने की हिदायत, दुनिया में फतह और कामयाबी और आखिरत में निजात और जन्नत की खुश खबरी, पैगम्बरे इस्लाम के साथियों के सच्चे ईमान, उनकी दीनदारी, इबादत, इस्लाम की सच्ची खिदमत और जानी बखाली क़ुर्बानियों की तारीफ़ ।

६— उन लोगों के हालात जिन्होंने खुदा और उसके पैगम्बरों का इन्कार किया, खुदा की तरफ़ से आई हुई तालीम और हिदायत को झुठलाया, और खुदा के पैगम्बरों और उनके मानने वालों को सताया, इनके बारे में बताया गया है कि यह दुनिया में किन किन सूरतों से खुदा के अज़ाब में गिरफ़्तार हो कर तबाह हुए और आखिरत में उनको दोज़ख़ के कैसे कैसे अज़ाब भुगतने पड़ेंगे । हजरत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के दुश्मनों को डांट फटकार, दुनिया की ज़िल्लत और नाकामी और आखिरत के अज़ाब की धमकी ।

७—क्रियामत का बयान—कि उस रोज़ आसमान, ज़मीन, और दूसरी चीज़ों की क्या हालत होगी, और आदमी कैसी परीशानी और मुसीबत में पड़ा होगा ।

८—इस बात की दलीलें कि जिस ख़ुदा ने आसमान, ज़मीन, सूरज, चांद वगैरह चीज़ें बना दीं और इन्सान को जब कि पहले वह कुछ न था पैदा कर दिया तो आखिरत में उसको इन सब का दोबारा पैदा कर देना मुश्किल क्यों होगा ? और इसमें लोगों के लिये अचंभे की क्या बात है ?

९—जन्नत को नेमतों और जहन्नम की तकलीफों का बयान ।

१०—इस बातकी तालीम कि इन्सान को दुनिया की ज़िन्दगी इसी हालत में सुख और शान्ति की ज़िन्दगी हो सकती है जब वह ख़ुदा, रसूल और आखिरत पर अक़ीदा रखता हो और ख़ुदा की भेजी हुई तालीम और हिदायत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता हो । जब तक इन्सान का यह विश्वास न हो कि ख़ुदा मौजूद है, वह हमारे हर ज़ाहिर और छुपे काम को देख रहा है एक रोज़ हमें उसके सामने जाना और अपने रत्तो रत्ती भर काम का हिसाब देना है, और यह कि अगर हमने उसको ख़ुश और अपने हिसाब को पाक और साफ़ न रखा तो हमारी आखिरत बर्बाद और नष्ट हो जायेगी जिसकी मुसीबतें और विपत्तियां कभी ख़त्म होने वाली नहीं, उस वक्त तक आदमी जुल्म और अत्याचार, फ़साद और उपद्रव, बेईमानी और बदमुआमलगी, ज़्यादती और बेसाफ़ी से बाज़ नहीं आसकता, और दुनिया से बेईमानी, बेइन्साफ़ी, लूट खसोट जंग और लड़ाई ख़त्म नहीं हो सकती ।

इन्सान की भलाई इसी में है कि वह ख़ुदा को अपना हाकिम और उसके क़ानून को अपनी ज़िन्दगी का क़ानून माने । एक हाकिम और एक क़ानून की हुकूमत ही से इन्सानों में एकता, बराबरी, भाई चारा और अदल और इन्साफ़ कायम हो सकता है, यही इस्लाम है । हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) से लेकर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तक

दुनिया की सारी कौमों सारे मुल्कों और सारे ज़मानों में आने वाले तमाम पैगम्बरों ने इन्सानों को यही पैगाम दिया कि खुदा को मानो और उसके कानून पर चलो, इसलिये खुदा की तरफ से सारी दुनिया के इन्सानों के लिये आया हुआ सब से पहला और सच्चा दीन यही इस्लाम है। यह तमाम तालीमें और सारी हिदायतें क़ुर्आन शरीफ में इस तरह मिली जुली हैं कि क़ुर्आन शरीफ का कोई सफ़हा इनसे ख़ाली न मिलेगा और एक बात की तालीम में दूसरी बातों की तालीम भी मौजूद होंगी।

क़ुर्आन शरीफ में जिस तरह खुदा और उसके रसूल को मानने और उनकी तालीम और हिदायत पर चलने का हुक्म है इसी तरह खुदा और रसूल को मानने और उनकी तालीम और हिदायत पर चलने का नाम ईमान और इस्लाम है, और इसके ख़िलाफ़ जो कुछ है वह कुफ़्र और बेदीनी है।

इन सारी बातों को अच्छी तरह ध्यान में रख कर क़ुर्आन शरीफ पढ़ा जायेगा तो खुदा से उम्मीद है कि वह उसके समझने में आसानी पैदा कर देगा।

फ़रिश्ते

क़ुर्आन शरीफ में फ़रिश्तों का ज़िक्र आया है, अम पारे की सूरहों में भी आयेगा, इसलिये फ़रिश्तों के बारे में इस्लामी अक़ादे (विश्वास) को समझ लेना चाहिये। फ़रिश्ते भी खुदा की एक मख़लूक हैं, उनकी पैदाइश नूर (प्रकाश) से हुई है, वह न मर्द हैं न औरत, न उनको देखा जा सकता है और न उनकी इक़ीक़त (वास्तविकता) मालूम की जा सकती है। हमें सिर्फ़ उनके वस्फ़ (गुण) बताये गये हैं, और उन पर अक़ीदा, रखना ज़रूरी ठहराया गया है, वह खुदा के बड़े हुक्म बर्दार बन्दे हैं, उसके हुक्म के ख़िलाफ़ कोई काम नहीं

करते । खुदा के पैगम्बरों ने फ़रिश्तों के बारे में हमेशा यही ताळीम दी, लेकिन मुश्रिक क़ौमों उनको देवी देवता और खुदा की खुदाई में शरीक मानती हैं, और खुदा के साथ उनकी भी पूजा भक्ति करती हैं, हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पहले अरब के लोग भी फ़रिश्तों के बारे में यही अज़ीदा रखते थे और उनकी पूजा करते थे, उनका आम अज़ीदा यह था कि फ़रिश्ते खुदा की बेटियां हैं, क़ुर्आन शरीफ़ में मुश्रिकों के सारे अज़ीदों को ग़लत और शिर्क ठहराया गया है ।

खुदा कायनात (विश्व) के इन्तेज़ाम के लिए किसी का मुहताज नहीं, वह खुद सब कुछ कर सकता है लेकिन उसने आस्मान और ज़मीन का जो कारख़ाना बनाया है उसमें हर वाम वसीला और ज़रीआ (साधन) से हो रहा है । वह मर्द और औरत के जोड़े के बग़ैर इन्सान पैदा कर सकता था और मां बाप के बग़ैर उसको पाल सकता था । सूरज, चांद, और सितारों के बग़ैर वह सारे काम हो सकते थे जो इनके ज़रीआ होते हैं । बादल के बग़ैर बारिश हो सकती थी और पानी के बग़ैर ज़मीन से नाज और फूल फल पैदा हो सकते थे, लेकिन इन सब कामों के लिये खुदा ने वसीले और ज़रीआ मुक़र्रर कर दिए हैं । इसी तरह बहुत से कामों के लिए खुदा ने फ़रिश्तों को ज़रीआ बनाया है और वह काम उन्हीं से ले रहा है । क़ुर्आन और हदीस के मुताबिक़ फ़रिश्तों के काम यह हैं:—

१—सबसे बुज़र्ग़ (महत्तर) फ़रिश्ते हज़रत जिब्रील हैं, खुदा के पैगम्बरों के पास खुदा के अहक़ाम (आज्ञाएँ) पहुँचाने का काम इन्हीं के सिपुर्द था, यह कभी कभी पैगम्बरों के दुश्मनों के मुक़ाबले में पैगम्बरों की मदद के लिए भी आते थे, और कभी कभी खुदा के नाफ़रमानों पर इनके ज़रीआ अज़ाब भी भेजा जाता था ।

२—कुछ फ़रिश्ते हवा, बादल बारिश, और रोशनी के इन्तेज़ाम पर, कुछ रोज़ी पहुँचाने के इन्तेज़ाम पर और कुछ जान क़ब्ज़ करने पर मुक़र्रर हैं ।

३—हर इन्सान के साथ दो फ़रिश्ते रहते हैं, एक फ़रिश्ता नेक काम लिखता है, दूसरा फ़रिश्ता बुरे काम, इनको “किरामन-कातिबीन” कहते हैं ।

४—कुछ फ़रिश्तों के ज़िम्मा इन्सानों की आकृतों और बलाओं से हिफ़ाज़त करने का काम सिपुर्द है, जिन बूढ़ों, बच्चों, कमजोरों और दूसरे लोगों के बारे में खुदा का हुक्म होता है यह फ़रिश्ते उनकी हिफ़ाज़त करते हैं । कुछ फ़रिश्ते नेक इन्सानों के लिये खुदा से भलाई और बख़्शिश की दुआ मांगते हैं और बुरे इन्सानों के लिये बद दुआ करते रहते हैं ।

५—कुछ फ़रिश्ते जन्नत के इन्तेज़ाम पर मुक़र्रर हैं और कुछ फ़रिश्ते दोज़ख़ के इन्तेज़ाम पर ।

६—कुछ फ़रिश्ते खुदा के अर्श (सिंहासन) के उठाने वाले हैं (खुदा का अर्श कैसा है और वह किस तरह काम में आता है इसकी इक़रीक़त (वास्तविकता) को हम किसी तरह समझ नहीं सकते) ।

७—कुछ फ़रिश्ते खुदा की इबादत और उसकी तस्बीह और तक्रदीस (पवित्रता वर्णन) करते रहते हैं ।

क़सम

खुदा ने क़ुरआन शरीफ़ में कसमें खाई हैं अमपारे में भी क़समें हैं । बाज़ लोगों का ख़याल है कि क़सम खाना कुछ अच्छी चीज़ नहीं, क़सम खाने वाला इसी सूरत में क़सम खाता है जब वह समझता है कि उसकी बात न मानी जायेगी, यह ख़याल दुरुस्त नहीं, क़सम खाना इसी सूरत में बुरा है जब बुरी शरज़ से क़सम खाई जाये । क़सम अपनी बात पर ज़ोर देने के लिए भी खाई जाती है , बात भी सच्ची होती है और बात कहने वाला भी

सच्चा होता है और वह कसम खाकर बात कहता है तो बात में जोर पैदा हो जाता है और सुनने वालों पर इस का बड़ा असर पड़ता है ।

बाज़ लोग समझते हैं कि कसम तो अपने से बड़ी चीज़ की खाई जाती है और खुदा तो खुद सबसे बड़ा है फिर उसने कसम क्यों खाई और इन्सानों की तरह उसे कसम खाने की ज़रूरत क्या थी ? ऐसा समझना भी दुरुस्त नहीं । मुसल्मानों के सिवा दूसरे लोगों में अपने से छोटी और प्यारी चीज़ों की कसम खाने का रिवाज है जैसे “अपनी जान की कसम, तुम्हारे सर की कसम” वगैरह अरब के लोग घोड़े, तलवार, शहर जैसी चीज़ों की कसम खाया करते थे । कुर्आन शरीफ इन्सानी ज़बान में उतरा है, इसलिये उन्हीं की बोल चाल का तरीका इस्तेमाल किया गया है ।

कुर्आन के आलिमों ने कसमों के बारे में जो कुछ लिखा है उसका खुलासा यह है —

१—दूसरी ज़बानों की तरह अरबी ज़बान में भी ज़रूरत के मुताबिक कसम खाकर बात करने का रिवाज था और कुर्आन भी अरबी ज़बान में उतरा इसलिये इसी रिवाज के मुताबिक कसमें खाई गई हैं ।

२—कुर्आन की सारी कसमें ताज़ीमी (आदर सूचक) ही नहीं हैं इस्तिद्लाली (प्रमाण सूचक) भी हैं ।

यानी जिन चीज़ों की कसम खाई गई है वह उन चीज़ों की सच्चाई की दलील और सबूत के तौर पर जानदार और बेजान सभी तरह की चीज़ों की कसमें खाते थे । अरबी शाइरी में आस्मान, ज़मीन, हवा, ज़माना, शहर, घोड़े, सवार वगैरह की कसमें मौजूद थीं । वही तरीका कुर्आन शरीफ में भी इस्तियार

किया गया है। खुद कसम में शहादत और सबूत का मनशा मौजूद है यानी आदमी कसम उसी वक्त खाता है जब उसके पास कोई गवाह या सबूत नहीं होता तो इसका मतलब यही है कि कसम या गवाही अस्त में एक ही चीज है।

३—बाज्र जगहों पर कुछ चीजों की इसलिये भी कसम खाई गई कि लोग उनकी बड़ाई और फाइदे पर गौर करें और सोचें कि इन चीजों का पैदा करने वाला कैसी कुदरत और हिक्मत वाला है।

खुदा ने तीन चीजों की कसम खाई है, एक खुद अपनी ज्ञात और सिफात (सत्ता और गुण) की, दूसरे अपनी कुदरत और हिक्मत की, तीसरे अपनी पैदा की हुई चीजों की, अगर सोचा जाये तो तीसरी किस्म की चीजें भी दूसरी किस्म में दाखिल हैं।

जिन चीजों के बारे में कसम खाई गई है वह खास तौर पर तीन हैं, एक खुदा की हस्ती और उसकी तौहीद (सत्ता और एकत्व) दूसरी नुबूवत और 'वही' यानी खुदा का पैगम्बर होना और उसके पास खुदा का पैगाम आना, और तीसरी आखिरत, खुदा ने जहां अपनी ज्ञात और सिफात की कसम खाई है वह ताजीमो है और बाक़ी चीजों की कसम इस्तिदाली।

सूरः नवा

[मक्का में उतरी और इसमें ४० आयतें हैं]

जरूरी तथरीह

मक्का के वह लोग जो इस्लाम के मुसलमान थे, क्रियामत का इन्कार करते और इस अक्कीदे की हँसी उड़ाते, कहते क्या वाकई क्रियामत आयेगी ? कैसे आयेगी ? क्या सचमुच तमाम मरे हुए आदमी उस रोज़ ज़िन्दा हो जायेंगे ? उनसे उनके आमाऊ का हिसाब किताब होगा और वह अपने आमाल के मुताबिक़ जन्नत और दोज़ख़ में जायेंगे ?

इस सूरह में उन लोगों को जवाब दिया गया है कि क्रियामत आकर रहेगी । किसी के न मानने और हँसी उड़ाने से क्रियामत का आना झूठ नहीं हो जायेगा, हँसी उड़ाने वाले ज़िन्दगी के थोड़े से दिन पूरे कर लें, मरने के बाद जल्द ही उन पर क्रियामत का मुआमिला खुल जायेगा ।

जिस खुदा ने अपनी क़ुदरत से आस्मान और ज़मीन के इस कार-ख़ाने को बनाया, उसके लिए उसका बिगाड़ देना और फिर बना देना क्या मुश्किल है ? और जिसने आदमी को इतनी नेऽमतें दीं यह कैसे हो सकता है कि उनको काम में लाने के लिये कोई ज़ाबता (नियम) न दे, और आदमी को इस ज़ाबते का पाबन्द न बना दे, फिर एक रोज़ यह न देखे कि आदमी ने उसके दिये हुए ज़ाबते की कहां तक पाबन्दी की, कहां तक उसकी मर्ज़ी का ध्यान रक्खा, और कहां तक अपनी खाहिशों और दूसरों की मर्ज़ी पर चला ?

क्या आख़िरत का इन्कार करने वाले समझते हैं कि उनकी पैदाइश का कोई मन्त्रसद नहा है ? वह खेल तमाशे के तौर पर पैदा कर दिये गये हैं ? वह खुदा की नेऽमतों के जिस तरह चाहें मज़े लूँ उनके बारे

में किसी ज्ञाते और पूछ गछ का सिर से कोई मुआमिला ही नहीं !

क्रियामत का आना हक है, उस रोज़ खुदा के रोब और जलाल का यह हाल होगा कि उसकी मर्ज़ी के बग़ैर कोई ज़वान न खोल सकेगा । दुनिया में खुदा रसूल और आख़िरत का इन्कार करने वाले उस दिन के हाल की सफ़ती देखकर बड़ी हसरत (कामना) के साथ कहेंगे कि क्या अच्छा होता कि हम आदमी न होते मिट्टी होते कि आज के हिसाब किताब और जज़ा सज़ा से तो वास्ता न पड़ता !

इसलिये जो शरूस अपना भला चाहे, दुनिया में खुदा की बन्दगी और हुक्म बदांरी कर के आख़िरत के लिये उसके पास अच्छा ठिकाना बना ले ।

—c*ॐ*o—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम ।

अम्म यतसाअलून् (१) अनिन्नबइल् अज़ीमिल्
(२) लज़ी हुम् फ़ीहि मुख़तलिफून् (३) कल्ला सयऽ-
लमून्, (४) सुम्म कल्ला सयऽलमून् (५) अलम्
नज् अलिल् अर्द मिहादौं (६) वल् जिवाल औतादौं
(७) वख़लक़्नाकुम् अज़्वाजौं (८) व जअल्ना नौम
कुम् सुवातौं (९) व जअल्नन्नैल लिबासौं (१०) व
जअल्नन्नहार मअ़ाशा (११) व बनैना फ़ौक़कुम् सब
अन् शिदादौं (१२) व जअल्ना सिराजौं वह्हाजौं
(१३) व अन्ज़ल्ना मिनल् मुऽसिराति माअन् सज्जा
जल् (१४) लिनुख़रिज बिही हब्बौं व नबातौं (१५)
व जन्नातिन् अल्फ़ाफ़ा (१६) इन्न यौमल् फ़सूलि

कान मीक्रातै (१७) यौम युन्फखु फिस्सरि फतातून
अफवाजौ, (१८) व फुतिहतिस्समाउ फकानत् अब्वाबौ
(१९) व सुयिरतिल् जिबालु फकानत् सराबा (२०) इन्न
जहन्नम कानत् मिसादिल् (२१) लितागीन मअबल्
(२२) लाबिसीन फीहा अह्काबा (२३) लायज्जूकून
फीहा बदाँ वला शराबा (२४) इल्ला हमीमौ व गस्साकन्
(२५) जज़ाअौ विफाका (२६) इन्नहुम् कानू लायजून हिसा-
बौ, (२७) व कज्जबू बिआयातिना किज़ाबा (२८) व
कुल्ल शैइन् अहसैनाहु किताबन्, (२९) फज्जूकू फलन्नजीद
कुम इल्ला अज़ाबा (३०) इन्नलिल् मुत्तकीन मफाज़न्
(३१) हदाइक व अज़्नाबौ (३२) व कवाइब अतराबौ
(३३) व कासन् दिहाका (३४) ला यस्मऊन फीहा
लग्बौ व ला किज़ाबा (३५) जज़ाअम्मिररब्बिक अता
अन् हिसाबर् (३६) रब्बिस्समावाति वलूअदि व माबैन
हुमर्रह्मानि ला यम्लिकून मिन्हु खिताबा (३७) यौम
यकूमरूहु वल् मलाइकतु सफ़ल्लायतकल्लमून इल्ला मन्
अज़िन लहुर्रह्मानु व काल सवाबा (३८) ज़ालिकल्
यौमुल् हक्क फमन् शाअत्तख़ज इला रब्बिही मअबा
(३९) इन्ना अन् ज़र्नाकुम् अज़ाबन् क़रीबयौम यंजुरुल्
मउमक्कदमत् यदाहु व यकूलुल् काफिरु या लैतनी कुन्तु
तुराबा (४०)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा हो मेहबान बहुत रहम वाला है ।

(यह लोग) किस चीज़ के बारे में एक दूसरे से पूछ रहे हैं ? (१) क्या उस बड़ी ख़बर (क़ियामत) के बारे में (पूछ ग़ल्ल कर रहे हैं ?) (२) जिस में यह लोग (मुसलमानों से) इस्तेलाफ़ रखते हैं (३) याद रक्खें, यह लोग जल्द ही जान लेंगे (४) फिर याद रक्खें, यह लोग जल्द ही जान लेंगे (५) क्या हम ने ज़मीन को बिछौना नहीं बनाया ? (६) और पहाड़ को मेखें नहीं बनाया ? (७) और हमीं ने तुम को जोड़ा जोड़ा पैदा किया (८) और हमीं ने तुम्हारी नींद को आराम की चीज़ बनाया (९) और हमीं ने रात को पर्दा (का ज़रीआ) बनाया (१०) और हमीं ने दिन को कमाने का वक्त् बनाया (११) और हमीं ने तुम्हारे ऊपर सात मज्बूत (आस्मान) बना दिये (१२) और हमीं ने (सूरज को) एक जगमगाता हुआ चिराग़ बनाया (१३) और हमीं ने पानी भरे हुए बादलों से मूसला धार मेंह बर्साया, (१४) ताकि हम उससे अनाज और घास पात उगाएं (१५) और घने घने बाग़ (१६) बेशक फ़ैसले का दिन मुक़र्रर हो चुका है (१७) (यानी) वह दिन जिस में सूर फूँका जायेगा फिर तुम गोल के गोल चले आओगे (१८) और आस्मान खोल दिये जायेंगे फिर उस में दर्वाज़े ही दर्वाज़े हो जायेंगे (१९) और पहाड़ चला दिये जायेंगे फिर वह चमकती हुई रेत हो जायेंगे (२०) बेशक दोज़ख़ घात में है (२१) वह शरीर (दुष्ट) लोगों के लौट कर जाने की जगह है (२२) जिस में वह लम्बी मुद्तों तक पड़े रहेंगे (२३) वह उसमें न तो (किसी क़िस्म की) ठण्डक (राहत) का मज़ा चख पायेंगे और न (किसी) पीने की चीज़ का (२४) सिवाय खौलते

हुए पानी और बहते हुए पीप के (२५) (यह है उनकी शरारत का) ठीक ठीक बदला (२६) यह लोग (क्रियामत के) हिसाब किताब का खटका नहीं रखते थे (२७) और हमारी आयतों को सरासर झुठलाया करते थे (२८) और हम ने (उनके आमाल में से) एक एक चीज को लिख कर गिन रक्खा है (२९) तो (हम उनसे कहेंगे कि अब अपने किये का) मज्जा चखो, हम तो तुम्हारे अज्जाब को बराबर बढ़ाते ही चले जायेंगे (३०) बेशक, (खुदा से) डरने वालों के लिये (आखिरत में) कामयाबी है (३१) (वहां उनके रहने और खाने के लिये) बाग और अंगूर हैं (३२) और बराबर उम्र वालो नौजवान औरतें हैं (३३) और (पाक शराब के) छलकते हुए प्याले हैं (३४) वह लोग न उसमें (किसी के मुंहसे) कोई बेहूदा बात सुनेंगे न झूठ (३५) यह बदला है तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ से हिसाब के साथ दिया हुवा (३६) वही आस्मानों का और जमीन का और उन दोनों के बीच जितनी मरुलूक है सब का पर्वरदिगार बढ़ा रहम वाला है, (क्रियामत के दिन) कोई उससे बोलने की मजाल न रखता होगा (३७) उस दिन जिव्रील और (तमाम) फ़रिश्ते (उसके सामने) परा बांध कर खड़े होंगे, वहां कोई बोल न सकेगा, सिवाय उसके जिसको वह रहमान (खुदा) इजाजत दे और वह शरूस बात भी ठीक कहे (३८) उस दिन का आना सच है, तो जो कोई चाहे अपने पर्वरदिगार के पास वापसी का ठिकाना बना रखे (३९) बेशक हम ने तुम को (क्रियामत के) करीबी अज्जाब से डरा दिया है, उस दिन हर इन्सान (उन कामों को) देख लेगा जो उसने अपने हाथों किये होंगे और काफ़िर कह उठेगा (हाय !) कहीं मैं (आदमी की जगह) मिट्टी हुआ होता ! (४०)

२—सूरः नाजिआत

(मक्का में उतरी और इसमें ४६ आयतें हैं)

जरूरी तथीह

इस सूरह के शुरू में कस्में आई हैं, कस्मों का बयान दीवाचे में हो चुका है। इस सूरह में एक वाकिया का भी मुस्तसर जिक्र है, उसकी जरूरी तफसील यह है—

मिस्र में एक बहुत बड़ा शाही खानदान गुजरा है जिसके बादशाहों का लकब (उपनाम) 'फिअ्रैन' था, वहां का बादशाह खुदाई का दावा करता था, हजरत मूसा (अलैहिस्सलाम) की कौम जो 'बनी इस्राईल' कहलाती है और जो उयादातर यहूदी के नाम से मशहूर है फिअ्रैन की गुलामी में पड़ गई थी। फिअ्रैन बनी इस्राईल पर बहुत जुल्म करता था, उनके बेटों को पैदा होते ही मार डालता था, और लड़कियों को अपनी कौम की खिदमत के लिए जिन्दा छोड़ देता था। हजरत मूसा (अलैहिस्सलाम) इसी गुलामी की हालत में पैदा हुए और खुदा का कुछ ऐसा करना हुआ कि फिअ्रैन ही के महल में पल कर जवान हुए और फिर फिअ्रैन की कौम के एक शख्स को मार डालने की वजह से आपको मिस्र से 'मद्यन' भागना पड़ा। आप वहां के पैगम्बर हजरत शुऐब (अलैहिस्सलाम) के पास दस बरस तक रहे और उन्हीं की बेटी से आपने शादी की।

दस साल बाद 'मद्यन' से शाम को जाते हुए 'तूर' पहाड़ के मैदान में जो 'तुवा' कहलाता था खुदा ने हजरत मूसा को अपना पैगम्बर बनाया, और उनको अपनी पैगम्बरी की निशानी देकर फिअ्रैन के पास भेजा और फर्माया कि तुम फिअ्रैन के पास जाओ, और उससे कहो कि वह खुदाई के दावे से बाज

आये, खुदा की बन्दगी का रास्ता इस्तेयार करे खुदा के बन्दों पर जुल्म करना छोड़ दे, और बनी इस्राईल को तुम्हारे हवाले कर दे, खुदा के इस हुक्म के मुताबिक हज़रत मूसा फ़िर्अौन के पास गये, उसको खुदा का पैग़ाम पहुँचाया उसे अपनी पैग़म्बरी की निशानी (मुऽज्ज्जा) दिखाया, लेकिन फ़िर्अौन ने आपकी बात न मानी, उसने मुऽज्ज्जों को जादू समझ कर अपने जादूगरों का आपके मुक़ाबिले के लिये जमा किया, जादूगरों ने आपका मुक़ाबिला किया वह मुक़ाबिले में हार कर मुसल्मान हो गये ।

फ़िर्अौन फिर भी अपनी हठ और अपने खुदाई के दावे से बाज़ न आया और बनी इस्राईल पर बराबर जुल्म करता रहा, कई साल इसी तरह गुज़र गये, आखिर एक रात खुदा के हुक्म से हज़रत मूसा अपनी क़ौम को लेकर मिस्र से चल खड़े हुए, फ़िर्अौन को ख़बर हुई तो उसने लश्कर लेकर आपका पीछा किया, सुबह होते होते फ़िर्अौन आपके सर पर पहुँच गया, अब आपके आगे 'बहरे अहमर' (लाल सागर) था और पीछे फ़िर्अौन, हज़रत मूसा अपनी क़ौम के साथ जैसे ही समुन्दर के किनारे पहुँचे, खुदा की क्रुद्रत से समुन्दर का पानी फट कर बीच में रास्ता बन गया । और रास्ते के दोनों तरफ पानी की दीवारें खड़ी हो गई । हज़रत मूसा अपनी क़ौम को लेकर समुन्दर से पार हो गये उनके पीछे फ़िर्अौन भी इसी रास्ते से पानी में दाख़िल हो गया लेकिन उसके पार होने से पहले ही फटा हुआ पानी आपस में मिल गया और फ़िर्अौन अपने लश्कर समेत उसी में डूब गया ।

अन्दाज़ा है कि जहाँ से हज़रत मूसा ने समुन्दर को पार किया वह स्वेज़ और इस्माईलिया के दरमियान का मक़ाम था ।

खुदा ने फ़िअ्रौन का हाल बयान करके हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के दुश्मनों को ख़बरदार किया है कि उनको फ़िअ्रौन के वाकिअ़ा से सबक़ लेना चाहिये, उनका ज़त्था और जोर कितना ही ज़्यादा सही लेकिन वह फ़िअ्रौन से बढ़ कर नहीं हैं, अगर वह दुश्मनी से बाज़ न आये तो जिस तरह खुदा ने फ़िअ्रौन को दुन्या में भी अपने अज़ाब में पकड़ा और आख़िरत में भी खुदा के अज़ाब में पकड़ा जायेगा, इसी तरह यह लोग भी दुन्या और आख़िरत के अज़ाब में गिरफ़्तार होकर रहेंगे। और लोग जो कहते हैं कि क्या हम ग़ली सड़ी हड्डियां हो जाने के बाद भी दोबारा ज़िन्दा किये जायेंगे ? और जो हँसी करते हैं कि ऐसा हुआ तो हम बड़े घाटे में पड़ जायेंगे तो इनकी हँसी ही नहीं खोजने की बात है।

इस अक़ीदे के बग़ैर दुन्या में नेकी, इंसानियत, इमानदारी और इंसान की ज़िन्दगी गुज़ारी ही नहीं जा सकती।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

बन्नाजिअति गकौं (१) वन्नाशिताति नशतौं, (२)
वस्साबिहाति सब्हन् (३) फस्साबिकाति सब्कन्
(४) फल् मुदबिराति अम्रा (५) यौम तर्जुफुरा-
जिफतु (६) तत्बउहरादिफह् (७) कुलूबुय्यौम-
इजिँव्वाजिफतुन् (८) अब्सारुहा खाशिअह् (९)
यकूलून अइन्ना लमदूदून फिल् हाफिरह् (१०)
अइजा कुन्ना इजामन् नखिरह् (११) कालू तिल्क
इजन् कर्तुन् खासिरह् (१२) फइन्नमा हिय जजरतू
वाहिदह् (१३) फइजा हुम् बिस्साहिरह् (१४)
हल्अताक हदीसु मूसा (१५) इज् नादाहु रब्बुह् बिल्
वादिल् मुकदसि तुवा (१६) इज्हब् इला फिअ्रौन
इन्नहू तगा (१७) फकुल् हल्लक इलाअन् तजक्का,
(१८) व अह्दियक इला रब्बिक फतख्शा (१९)
फअराहुल् आयतल् कुब्रा (२०) फकज्जब वअसा
(२१) सुम्म अद्वर यस्आ (२२) फ हशर फ
नादा (२३) फकाल अना रब्बुकुमुल् अऽला (२४)
फअखज हुन्लाहु नकालल् आखिरति वल्ऊला (२५)
इन्न फीजालिक ल इब्रतन्लि मँय्यख्शा (२६) अ
अन्तुम अशद् सुल्कन् अमिस्समाअउ बनाहा (२७)
रफअ समूकहा फसब्बाहा, (२८) व अगत्श लैलहा

वअखूरज दुहाहा, (२६) वल् अर्द, बज्द जालिक
दहाहा, (३०) अखूरज मिन्हा मा३अहा व मअ्राहा
(३१) वल् जिबाल अर्साहा, (३२) मताअल्लकुम्
वलिअन्अमिकुम् (३३) फइजा जा३अतित्ता३म्मतुल्
कुत्रा (३४) यौम यतजक्कहल् इन्सानु मा सआ,
(३५) व बुरिजितिल् जहीमु लिमँय्यरा (३६) फ
अम्मा मन् तगा, (३७) वआसरल् हयातदुन्या,
(३८) फइन्नल् जहीम हियल् मावा (३९) व
अम्मा मन् खाफ मकाम रब्बिही वनहन्नफ्स अनिल्
हवा, (४०) फ इन्नल् जन्नत हियल् मावा (४१)
यस् अलूनक अनिस्ताअति अय्यान मुर्साहा (४२)
फीम अन्त मिन् जिक्काहा (४३) इला रब्बिक मुन्त-
हाहा (४४) इन्नमा अन्त मुंजिरु मँय्यख्शाहा (४५)
कअन्न हुम् यौम यरौनहा लम् यल्बस्सइन्ला अशीयतन्
औ दुहाहा (४६) ।



तजमा



(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा ही मेहबान बहुत रहमवाला है ।

कसम है (बुरे लोगों की जानें) सख्ती से खींच निकालने वाले फरिश्तों की (१) और (नेक लोगों की जानों के बंधन) आसानी से खोल देने वाले फरिश्तों की (२) और (ज़मीन आसमान के बीच) तेज़ी से तैरने वाले फरिश्तों की (३) फिर दौड़ कर आगे बढ़ जाने वाले फरिश्तों की (४) फिर हर काम का बन्दोबस्त करने वाले फरिश्तों की (कि क्रियामत आकर रहेगा) जिस दिन हिला देने वाली चीज़ (यानी नरसिंहे की पहली आवाज़ ज़मीन को) हिला डालेगी (५) उसके बाद एक पीछे आने वाली चीज़ (यानी दूसरी फूँक की आवाज़) आयेगी (७) कितने दिल उस दिन दहल रहे होंगे (८) उनकी निगाहें झुकी हुई होंगी (९) (मुन्किर लोग) कहते हैं—क्या हम (मरने के बाद) फिर पहली हालत में लौटा दिये जाने वाले हैं ? (१०) क्या ऐसी हालत में भी जब कि हम सड़ी गली हड्डियाँ बन चुके होंगे ? (११) वह लोग कहते हैं कि तब तो यह वापसी बड़े घाटे की वापसी होगी (१२) तो वह तो बस एक ही (भयानक) आवाज़ होगी (१३) जिसे सुनते ही सब लोग फ़ौरन एक मैदान में एकट्ठे हो जायेंगे (१४) (ऐ पैग़म्बर !) क्या तुम्हारे पास मूसा का किस्सा पहुंचा ? (१५) जब उनके पर्वरदिगार ने एक پاک मैदान में जिस का नाम 'तुवा' था, उन्हें पुकारा था (१६) कि 'फ़िअ्रौन' के पास जाओ, वह (शरारत में) हृद से बढ़ गया है (१७)

और उससे कहना—“क्या तेरा जी चाहता है कि तू पाक सुथरा बने ? [१८] और मैं तुझे तेरे पर्वरदिगार की तरफ रास्ता दिखाऊँ सो तू उससे डरने लगे [१९] (इस हुक्म के मुताबिक मूसा फिअ्रौन के पास गये, उसको खुदा का पैगाम सुनाया, और अपने पैगम्बरी की) एक बड़ी निशानी उसे दिखाई [२०] पर फिअ्रौन ने उन को झुटला दिया और उनकी बात नहीं मानी [२१] फिर उनसे पोठ फेर कर (उनके खिलाफ) दौड़ धूप करने लगा [२२] फिर (अपने आदमियों को) इकट्ठा किया, और उन्हें आवाज दो [२३] उसने कहा—मैं ही तुम्हारा सब से बड़ा पर्वरदिगार हूँ [२४] इस पर खुदा ने उसे आखिरत और दुन्या दोनों के अज्जाब में गिरफ्तार कर लिया [२५] बेशक इस वाकिअ में उस आदमी के लिये बड़े सोच को बात है जो अल्लाह से डरता है । [२६]

(ऐ क्रियामत के बारे में शक करने वालो !) क्या तुम्हारा (मरने के बाद) पैदा करना ज्यादा मुश्किल है या आसमान का, जिसे अल्लाह ने बनाया है [२७] उसकी छत ऊँची बनाई फिर उसे ठीक किया [२८] और उसकी रात अंधियारी बनाई और उसके (दिन) की रोशनी बाहर निकाली [२९] इसके बाद ज़मीन को बराबर बिछा दिया [३०] (और) उसमें से उसका पानी और चारा निकाला [३१] और पहाड़ों को उसमें गाड़ दिया [३२] तुम्हें और तुम्हारे चौपायों को फ़ायदा पहुँचाने के लिये [३३]

फिर जब वह सबसे बड़ी मुसीबत (यानी क्रियामत) आ जायेगी [३४] तो उस दिन आदमी याद करेगा कि उसने (दुन्या में) क्या कुछ किया है [३५] और दोज़ख देखने वालों के सामने जाहिर कर दी जायेगी [३६] तो जो शख्स

(अपनी शरारतों में) हृद से बढ़ गया होगा [३७] और (आखिरत के मुकाबले में) दुनिया की ज़िन्दगी को पसंद किया होगा [३८] तो बेशक दोज़ख ही (उसका) ठिकाना होगी [३९] और जो शख्स अपने पर्वर्दिगार के सामने खड़े होने से डरा होगा [४०] और अपने दिल को (बुरी) खादिशों से रोकता रहा होगा [४१] तो बेशक जन्नत उसका ठिकाना होगी [४२] (ऐ पैगम्बर) लोग तुमसे क्रियामत के बारे में पूछ रहे हैं कि उसका ठहराव कब होगा [४३] उसका आखिर (इल्म) कि वह कब आएगी तुम्हारे पर्वर्दिगार ही का है [४४] तुम तो सिर्फ उस शख्स को खबरदार कर देने वाले हो जो क्रियामत का डर रखता हो [४५] जिस दिन यह लोग उसे देखेंगे तो उनको ऐसा मालूम होगा जैसे (दुनियाँ में) एक शाम या सुबह ही रहे हैं [४६]

३—सूरः अबस

(मक्का में उतरी और इसमें ४२ आयतें हैं)

ज़रूरी तथीह

इस सूरह के शुरू में एक वाक़िआ की तरफ़ इशारा है। इस्लाम की तरज़्ज़ी देना और उसे कामयाब बनाना ही हज़रत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम) की ज़िन्दगी का अस्स मक़सद था, इस लिये आप चाहते थे कि मक्का के सरदार जो इस्लाम की मुख़ालफ़त कर रहे हैं मुसल्मान हो जायें तो इस्लाम को बहुत मदद मिले। इस गरज़ से आप एक रोज़ मक्का के बड़े बड़े सरदारों से इस्लाम के बारे में बात चीत कर रहे थे, उसी हालत में एक अन्धे सहाबी जिनका नाम हज़रत इब्नेउम्मे मकतूम था, चले आये, उनको पता न था कि कौन

लोग बैठे हैं और क्या बातें हो रही हैं । वह आंहुज़रत से क़ुर्आन पूछने लगे, मक्का के सरदारों को अपनी बड़ाई का बड़ा घमण्ड था, वह ग़रीबों और मामूली आदमियों को अपने बराबर बैठाने में अपनी बड़ी बे इज़्जती ख़्याल करते थे, इसलिये हज़रत इब्नेउम्मेमक्तूम का बे मौक़्क़ू आना और बातचीत में ख़लल डालना आं हुज़रत को बहुत नागवार हुआ, आपने उनकी तरफ़ से मुंह फेर लिया ।

ख़ुदाने इसी वाक़िआ के बारे में आं हुज़रत (सल्लल्लाहुअलैहि-वसल्लम) को समझाया है कि अंधा जो ख़ुदासे डरता है और जो तुम्हारे पास क़ुर्आन की तालीम हासिल करने आया ताकि उसपर अमल करके अपनी हालत दुस्त करले, उसके आने पर तो तुमने ख़ूरी चढ़ाही और उन लोगों की फ़िक्र में पड़े हो जिनको अपनी बड़ाई के घमण्ड में दीन की कोई पवां ही नहीं है, हालां कि अगर ऐसे लोग तुम्हारी बात न मानें और दीन क़बूल न करें तो तुमपर कोई इल्ज़ाम नहीं ।

इसी के साथ ख़ुदाने मक्का के सरदारों को भी डांट फटकार सुनाई है, कि वह अमीरी ग़रीबी और छोटाई बड़ाई नहीं देखता, वह दिल देखता है, उसके नज़्दीक उसी की इज़्जत है जिसके दिल में नेकी और ख़ुदाका डर है, चाहे वह कितना ही ग़रीब और नीचे दर्जे का आदमी हो, और जिसके दिल में नेकी और उसका डर नहीं उसके नज़्दीक उसकी कोई इज़्जत नहीं चाहे वह कितना ही बड़ा आदमी हो ।

ख़ुदाका कलाम इन्सानों के लिये बहुत बड़ी नेमत है, इस नेमत के हक़दार वही लोग हैं जो ख़ुदा को मानते हैं, जो ख़ुदा को नहीं मानते उनका इस नेमत में कोई हिस्सा नहीं । ख़ुदा का कलाम किसी के मानने का मुहताज नहीं, जो इसे मानेगा और इसकी हिदायतों पर अमल करेगा अपने भले के लिये मानेगा । जो इसे न मानेगा और इसकी हिदायतों पर अमल न करेगा अपना ही नुक़सान करेगा ।

नुफ़्ते [वीर्य] की एक नाचीज़ और तुच्छ बूंद से पैदा होने वाला

और खुदा की नेमतों पर पलने वाला इन्सान, जिसको एक दिन मर जाना है वह आखिर घमण्ड किस बातपर करता है ?

दुनिया में खुदा के हुक्म बर्दार बनकर रहने वाले चाहे वह गरीब और मुहताज ही हों आखिरत में उनके चेहरे ख़ुशी से चमकते होंगे । और दुनिया में खुदाकी नाफ़रमानी करने वाले चाहे वह बड़े ही लोग हों आखिरत में उनके चेहरों पर गर्द उड़ रही होगी और सियाही छा रही होगी ।



बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम् ।

अवस व तवल्ता (१) अन् जा३अहुल्अऽमा (२)
वमा युद्रीक लअल्लहू यज़्ज़क्का (३) औयज़्ज़क्करु फत-
न्फअहुज़्ज़क्का (४) अम्मा मनिस्ताना (५) फअन्त लहू
तसदा (६) व मा अलैक अल्ला यज़्ज़क्का (७) व अम्मा
मन् जा३अक यस्त्रा (८) व हुव यख़शा (९) फअन्त
अन्हु तलह्हा (१०) कल्ला २ इन्नहा तज़्ज़िरह्, (११)
फमन् शा३अ ज़करह् (१२) फीसुहुफ़िम्मुकर्मतिम् (१३)
मर्फ़ अतिम्मुतह् हरतिम् बिऐदी सफ़रतिन् (१४) किरामिम्
बररह् (१५) कुतिलल् इन्सानु मा२अक्फरह् (१७) मिन्
अय्यि शैइन् खलकह् (१८) मिन् नुत्फह्, खलकह् फकदरह्
(१९) सुम्मस्सबील यस्सरह्, (२०) सुम्म अमातह् फअक्

बरह, (२१) सुम्म इजा शा३अ अनशरह् (२३) कल्ला
लम्मा यक्जि मार अमरह् (२३) फल् यन्जुरिल् इन्सानु
इला तअमिही (२४) अन्ना सब्वन्न्मा३अ सब्वन् (२५)
सुम्म शक्कनलअर्द शक्कन् (२६) फ अम्बत्तना फीहा
हब्बों (२७) व इन्नयों व क्कज्बों (२८) व जैतूनों व नख
लों (२९) व हदा३इक् गुब्बों (३०) व फाकिहतों व
अब्बम् (३१) मता अल्लकुम् वलि अन्नामिकुम् (३२)
फइजा जा३अतिस्सा३ख्खह् , (३३) यौम यफिरुल् मउ
मिन् अखीहि, (३४) व उम्मिही व अवीहि (३५) व
साहिवतिही व वनीह् (३६) लि कुल्लिम् रिइम् मिन्हुम्
यौ महजिन् शञ्जुय्युणीह (३७) व वुज्जहुं य्यौमइ जिम्मुस्
फिरतुन् (३८) दाहिकत्तुम्मुस्तब्बिशिरह् (३९) व वज्जहु-
य्यौमइजिन् अलैहा गवरतुन् (४०) तर्ह कुहा कतरह्
(४१) उला३इक् हुमुल् कफरतुल् फजरह् (४२) ।

तर्जमा

(शुरु)अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत ही रहम वाला है।

पैगम्बर ने त्यूरी चढ़ाली और मुंह फेर लिया (१) इस बात पर
कि उनके पास एक अन्धा चला आया (२) और (ऐ पैगम्बर !)
तुम क्या जानते थे शायद अन्धा (तुम्हारी तालीम से) सँवर
जाता (३) या नसीहत कबूल कर लेता और उसको नसीहत

फाएदा पहुंचाती (४) मगर जो शख्स दीन से वे पर्वाई बरतता है (५) तो तुम उसकी फिक्र में पड़ते हो (६) हालांकि अगर वह न सँवरे तो तुम पर इसका कुछ इल्जाम नहीं (७) मगर जो शख्स तुम्हारे पास (दीन सीखने के शौक में) दौड़ा हुआ आता है (८) और वह खुदा से डरता भी है (९) तो तुम उससे बे रुखी करते हो (१०) नहीं, नहीं, (ऐसा न करो) यह कुआन तो एक नसीहत है (११) सो जो चाहे इसे सोचे समझे (१२) कुआन (खुदा के पास) इज्जत वाले वक्तों में (लिखा हुआ) है (१३) ऊँचे दर्जे के पाकीजा (वक्तों में) (१४) जो उन लिखने वाले (फरिश्तों) के हाथों में रहते हैं (१५) जो बुजुर्ग और नेक हैं (१६)

बुरा हो इन्सान का, वह कैसा ना शुक्रा है ! (१७) (वह सोचता नहीं कि खुदा ने) उसे किस चीज से पैदा किया है ? (१८) एक बूंद ही से तो उसे बनाया, फिर उसके लिये अन्दाजा ठेरा दिया (१९) फिर उसके लिये राह आसान करदी (२०) फिर उमे मौत दी और कब्र में पहुंचा दिया (२१) फिर जब वह चाहेगा उसे जिला खड़ा करेगा (२२) नहीं, नहीं, खुदा ने इन्सान को जो हुक्म दिया है उसने उसे पूरा नहीं किया (२३) तो इन्सान को चाहिये कि ज़रा अपनी खोराक ही को देख ले (कि हमने उसे किस तरह पैदा किया ?) (२४) (पहले) हमने जोरों का पानी बरसाया (२५) फिर ज़मीन को फाड़ दिया (२६) फिर उससे अनाज उगाया (२७) और अंगूर और तरकारियां (२८) और जैतून और खजूरें (२९) और घने घने बाग (३०) और (दूसरे) मेवे और (जानवरों का) चारा (३१) जो तुम्हारे लिये भी फाएदे की चीजें हैं और तुम्हारे चौपायों के लिये भी (३२)

फिर (ज़रा उस वक्त का विचार करो) जब वह कानों को बहरा कर देने वाली बिंघाड़ आ पहुँचेगी (३३) उस दिन

आदमी दूर भागेगा अपने भाई से (३४) और अपनी माँ से और अपने बाप से (३५) और अपनी बीवी से और अपने बेटों से (३६) उस दिन उनमें से हर आदमी ऐसी फिक्र में पड़ा होगा जो उसके लिये काफी होगी (३७) कितने चिहरे उस दिन चमक रहे होंगे (३८) हँसते और खुशियाँ मनाते होंगे (३९) और कितने चिहरे उस दिन ऐसे होंगे कि उन पर गर्द पड़ी होगी (४०) (और) भियाही छा रही होगी (४१) यही लोग हैं (हक़ का) इन्कार करने वाले बदकार ! (४२) ।

४—सूरः तक्वीर

मक्का में उतरी और इशामें २६ आयतें हैं ।

जरूरी तशरीह

इस सूरह में क्रियामत के दिन की हौलनाकियों [भयंकरताओं] का हाल सुनाकर नसीहत की गई है कि क़र्आन की हिदायतों पर चलो, इस में तुम्हारी भलाई है । हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) न पागल हैं न क़र्आन कोई शैतानी कलाम है, वह खुदा का कलाम है और खुदा के बुज़ुर्ग़ फ़रिश्ते जिब्रील के ज़रीआ पहुँचा है जिनको हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम) ने आसमान के खुले किनारे [क्षितिज] पर देखा है ।

इस सूरह की कुछ खास बातें यह हैं:—

१—अरब में ऐसे लोग भी थे जो अपनी लड़कियों को ज़िन्दा गाड़ देते थे, उनका ख़ियाल था कि लड़कियों के पालने और उन के खाने कपड़े का खर्च बर्दाश्त करने से क्या फ़ायदा जब यह बड़ी हो कर बियाही जायेंगी और पराये घर की हो जायेंगी । कुछ लोग उनको इसलिये मार डालते थे कि लड़की बिबाह कर ससुर बनने को बेइज्जती की बात समझते थे, इस रस्मको बुरा ठहराया गया है और लोगों को डराया गया है कि क्रियामत के दिन इस नाहक़ खून की पूछ होगी ।

इस्लाम ने औरतों पर जो इहसान किये हैं उनमें से एक बड़ा

इइसान यह भी है कि अब से १४०० बरस पहले लड़कियों का कलक बंद करदिया, और मर्दोंकी झूठी शान मिटादी, हालां कि हिन्दोस्तान की कुछ बिरादरियों में कुछ ज़माना पहले तक यह रस्म मौजूद थी ।

२—क़ुर्आन शरीफ़ की सच्चाई पर कुछ सितारों की क़सम खाई गई है, यह सितारे ज़ुहल, मुश्तरी, मिर्रीख़, ज़हरा और उतारद हैं, यह कभी सीधे चलते हैं, कभी ठिठक कर उलटे फिरते हैं, कभी सूरज के पास जाकर छिप रहते हैं। इन सितारों की क़सम खाकर यह समझना मक़सूद है कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले भी ख़ुदाके पैग़म्बर होते रहे हैं, और उनके पास भी ख़ुदा के पैग़ाम और हिदायतें आती रही हैं, कभी बराबर पैग़म्बर होते रहते, कभी यह सिलसिला बन्द हो जाता, मगर उनकी तालीम का असर बाक़ी रहता, फिर कभी ऐसा भी होता कि वह असर भी मिटजाता, हज़रत मुहम्मद [सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम] से पहले भी दुनिया की यही हालत हो गई थी कि बेदीनी की रातका अंधेरा छा गया था, अरब के लोगों को बताया गया कि अब वह रात ख़त्म हो चुकी है, और एक नई सुबह हो रही है ।

३—फ़रिश्तों और इन्सानों की तरह जिन भी एक मख़्लूक हैं, जो भाग से पैदा हुए हैं, उनमें ग़ुरुर और बेहुकमी का माहा बहुत ज़्यादा है, शैतान भी जिन है, वह और उसके पीछे चलने वाले ख़ुद भी ख़ुदा की बेहुकमी करते हैं और आदमियों को भी बहकाकर ख़ुदाके हुक़म के ख़िलाफ़ चलाते हैं, क़ुर्आनशरीफ़ में उन आदमियों को भी शैतान कहा गया है जो ख़ुद भी बुरे काम करते हैं और दूसरों को भी बुरे कामों में फंसाते हैं ।

शैतान दिखाई नहीं देता ऐसी और भी कितनी चीज़ें हैं जिस को इंसानी आंखें देख नहीं सकतीं, एक हवाही है जो इंसान के अन्दर बाहर हर जगह मौजूद होती है लेकिन इंसान उसे देख नहीं सकता

विस्मिन्नाहिरर्हमानिर्हीम् ।

इज्जशमसु कुव्विरत् (१) व इज्जन्नुज्जुम्कदरत् (२)
 व इज्जल् जिवालु सुय्यिरत् (३) व इज्जल् इशारु उत्तिलत्
 (४) व इज्जल् बुह्मशु हुशिरत् (५) व इज्जल् बिहारु
 सुज्जिरत् (६) व इज्जन्नुफूसु ज्जुव्विजत् (७) व इज्जल् मौ-
 ऊदत्तु सुइलत् (८) वि अय्यि जम्बिन् क तिलत् (९)
 व इज्जस्सुहुफु नुशिरत् (१०) व इज्जस्समा३उ कुशितत्
 (११) व इज्जल् जहीम् सुइरत् (१२) व इज्जल् जन्नत्तु
 उज्जलिफत् (१३) अलिमत् नफूसुम्मा२ अह्दरत्
 (१४) फला२उक् सिमु बिल् खुन्नसिल (१५) जवारिल्
 कुन्नसि (१६) वल्लैलि इजा अस् अस् (१७) वस्सुब्हि
 इजा तनप्फस (१८) इन्नह् लकौलु रम्मालिन् करीमिन्
 (१९) जीक् वतिन् इन्द जिल् अर्शि मकीनिम् (२०)
 मुताइन् सम्म अमीन् (२१) व मा साहिबुकुम् बिमज्जन्न्,
 (२२) वलक्कद् रआहु बिल् उफुक्किल् मुबीन् (२३)
 वमा हुव अलल् गैवि बिदनीन् (२४) वमाहुव बिकौलि शैता-
 निर्रजीम् (२५) फएेन तज्जह्वून् (२६) इन् हुव इल्लाजिक्कु-
 ल्लिल् अलमीन्, (२७) लिमन् शा३अ मिन्कुम् अय्यस्त-
 कीम् (२८) वमा तशा३ऊन इल्ला२ अय्यशा३अल्लाहु
 रब्बुल् अलमीन् (२९)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत हो रहम वाला है ।

जब सूरज लगेट दिया जायेगा [१] और जब सितारे मैले पड़ जायेंगे [२] और जब पहाड़ चला दिये जायेंगे [३] और जब दस महीने की गायिन ऊँटनियाँ छूटी फिरंगी (जिन को कोई पछने वाला न होगा) [४] और जब जंगल के जानवर (घबराहट के मारे एकट्ठे हो जायेंगे) [५] और जब समुन्दर खौला दिये जायेंगे [६] और जब (मरे हुए लोगों की) जानें (जिस्मों से) मिला दी जायेंगी [७] और जब जीते जी गाड़ी हुई लड़की से पूछा जायेगा [८] कि वह किस गुनाह पर मार डाली गई [९] और जब लोगों के आमाल नामे खोल दिये जायेंगे (ताकि सब अपने अपने आमाल देख लें) [१०] और जब आसमान की खाल उधेड़ दी जायेगी [११] और जब दो जख दहका दी जायेगी [१२] और जब जन्नत (नेक लोगों के) करीब कर दी जायेगी [१३] (उस वक्त) हर शख्स जान लेगा कि वह अपने साथ क्या क्या (आमाल) लेकर हाज़िर हुआ है [१४]

तो मैं क्रसम खाता हूँ पीछे फिर जानने वाले [१५] सोधे चलने वाले और थम जाने वाले सितारों की [१६] और रात की जब वह ढलने लगे [१७] और सुबह की जब वह सांस ले (यानी आने लगे) [१८] कि बेशक यह क़ुर्आन (खुदा के) एक बुजुर्ग क़ासिद (फ़रिश्ते) का (लाया हुआ) कलाम है [१९] जो ताक़त वाला है, अर्श के मालिक (यानी खुदा) के नज़्दीक मर्तबा पाया हुआ है [२०] वहां (फ़रिश्तों में) उसका कहा माना जाता है और अमानत दार है [२१] ।

(और ऐ मक्का के लोगो !) यह तुम्हारे साथी (मुहम्मद) कुछ पागल नहीं हैं [२२] और बेशक इन्होंने उस (फरिश्ते) को आसमान के खुले किनारे पर देखा है [२३] और वह ग़ैब की बातें बताने में (जो उन्हें खुदा की तरफ से मालूम होती हैं) कुछ बखील नहीं हैं [२४] और यह कुआन किसी धुतकारे हुए शैतान की कही हुई बात नहीं है [२५] फिर तुम किधर घले जा रहे हो [२६] यह तो सारे जहान के लोगों के लिए एक नसीहत की चीज़ है [२७] (खासकर) तुम में से उस शख्स के लिये जो सीधी राह चलना चाहे [२८] और तुम (कोई बात) नहीं चाह सकते मगर यह कि अल्लाह उसे चाहे जो सारे जहानों का पर्वरदिगार है [२९]

—०*०—

५—सूरः इन्फितार

(मक्का में उतरी और इस में १६ आयते हैं)

ज़रूरी तथरीह

क्रियामत के रोज़ आसमान और ज़मीन की क्या हालत हो जायेगी, इसकी तरफ इशारा करके आदमी का नेकी करने और बदी से बचने की हिदायत की गई है और बताया गया है कि आदमी दुन्या में जो कुछ करेगा आखिरत में उसका नतीजा देखलेगा । खुदा ने हर आदमी के साथ निगरानी करने वाले दो फरिश्ते मुक़रर कर दिये हैं जो उसके अच्छे बुरे सब काम लिखते रहते हैं, उनके लिखने को कोई झुटला नहीं सकता, खुदा लोगों को उनके अच्छे बुरे आमाल के मुताबिक जन्नत और दोज़ख में जगह देगा, किसी की मजाल न होगी कि उसके इस्तिथार में दखल दे, इसलिये हर शख्स को चाहिये कि वह अपने को नेक इंसान और खुदा का हुक्म बदाँर बनाये ।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम्

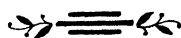
इजस्समा३उन्फतरत् (१) वइजल् कवाकिबुन्तसरत्
 (२) वइजल् बिहारु फुज्जिरत् (३) व इजल् कुबूरु
 बुऽसिरत् (४) अलिमत नफ्सुम्मा कदमत व अख्खरत्
 (५) या२ अय्युहल् इन्सानु मा गरक बि रब्बिकल्
 करीमिल् (६) लजी खलकक फसव्वाक फअदलक (७)
 की२अय्यि सूरतिम्मा शा३अ रक्कबक् (८) कल्ला बल्
 तुकज्जिबून बिदीनि (९) वइन्न अलैकुम् लहाफिजीन
 (१०) किरामन् कारिबीन् (११) यऽलमून मातफ्-
 अलून (१२) इन्नल् अब्रार लफी नईमिन् (१३)
 वइन्नल् फुज्जार लफी जहीमीं (१४) यस् लौनहा
 यौमदीन (१५) वमाहुम् अन्हा बिगा३इबीन् (१६)
 व मा२ अद्गाक मा यौमुदीन (१७) सुम्म मा२अद्गाक
 मायौमुदीन् (१८) यौम ला तम्लिकु नफ्सुन्लि नफ्सिन्
 शौआ वल् अमूर यौमइजिल् लिन्लाह् (१९)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जोबड़ा ही मेहबान बहुत रहम वाला है ।

जब आस्मान फट जाएगा [१] और जब सितारे भड़ जायेंगे
 [२] और जब समुन्दर फूट पड़ेगे [३] और जब कबरे उखाड़ कर
 तले ऊपर कर दी जायेंगी [४] हर आदमी अपने अगले और
 पिछले आमाल को जान लेगा [५] ऐ इन्सान ! तुझे किस चीज

ने तेरे ऐसे करम वाले पर्वरदिगार की तरफ से बहका रखा है ?
 [६] (वह पर्वरदिगार) जिसने तुझे पैदा किया, फिर तुझे दुरुस्त किया, फिर तुझे मौजूब बनाया [७] जिस सूरत में भी चाहा तुझे जोड़ दिया [८] नहीं तुम्हें खुदा से बहकाने वाला) कोई नहीं, बल्कि वजह यह है कि तुम (क्रियामत की) जज्जा व सज्जा को भूट जानते हो [९] हालांकि तुम पर निगहबानी करने वाले फरिश्ते मुकर्रर हैं [१०] जो इज्जत दार और (तुम्हारे आमाल) लिखने वाले हैं [११] तुम जो कुछ करते हो वह उसे जानते हैं [१२] बेशक नेक लोग (जन्नत के) ऐश आराम में होंगे [१३] और बे शुब्हा बुरे लोग दोज्ख में होंगे [१४] वह क्रियामत के दिन उसमें दाखिल होंगे [१५] और वह उससे शायब न हा सकेंगे [१६] और (ऐ इन्सान !) तुम्हें क्या मालूम कि जज्जा व सज्जा का दिन कैसा है ? [१७] फिर (हम कहते हैं कि) तुम्हें क्या मालूम कि जज्जा व सज्जा का दिन कैसा है ? [१८] उस दिन कोई शरूस किसी शख्स के लिये कुछ भी अख्तियार न रखता होगा और सारा अख्तियार उस दिन सिर्फ अल्लाह ही के हाथ होगा ! [१९]



६—सूर: तत्फीफ.

(मक्का में उतरी और इसमें २६ आयतें हैं)

जरूरी तशरीह

खरीद फ़रोज़्त और लेन देन में बेईमानी और बद दिशानती बहुत बुरी चीज़ है, खुद कुछ लेना तो ठीक नाप तौल से/लेना और दूसरों को देना तो नाप तौल में कमी कर देना, यह बुराई का ऐसा

बीज है जिस से बड़ी बड़ी बुराइयां पैदा हो जाती हैं। जरूरत की चीजों का स्टॉक करना, ताकि उनको महंगा कर के बेचें, हृद से ज्यादा नफ़ा लेना, चोर बाज़ारी, सूद, सर्मायादारी यह सब उसी ज़हरीले पेड़ के फल हैं। इस्लाम ने ज़ह की इस जड़, नाप तोड़ में बेईमानी को बहुत बुरा ठहराया है, और बताया है कि यह काम वही लोग करते हैं जो खुदा और आखिरत के अज़ाब और सवाब पर ईमान नहीं रखते, अपने को बड़ा चालाक और हंगियार समझते हैं, नेक और ईमानदार लोगों पर हंसते हैं, यह लोग समाज के दुश्मन हैं। ऐसे लोगों को क्रियामत के रोज़ मालूम हो जायेगा कि बेईमानी से दुनिया कमाने और पेश उड़ाने का नतीजा क्या होता है ?

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ।

वैलुन्निलल् मुताफ़्फ़ीनल् (१) लज़ीन इज़क़्ताल् अल-
न्नासि यस्तौफ़ून् (२) व इज़ा काल् हुम् अव्वजन् हुम्
युख़् सिरून् (३) अला यज़ुन्न उलाइक़ अन्नहुम् मब्-
ऊसून् (४) लियौमिन् अज़ीमीं (५) यौम यक्क़ुम्नासु
लिरब्बिल् आलमीन् ६) कल्ला इन्न किताबल् फ़ुज्जारि
लफ़ी सिज्जीन् (७) वमार अद्राक मा सिज्जीन् (८)
किताबुम्मक़्म् (९) वैलुँय्यौमइज़िल् लिल् मुक़्ज़िज्-
बीनल् (१०) लज़ीन युक़्ज़िज्बून् बियौमिदीन् (११)
वमा युक़्ज़िज्बु बिहीर इन्ला कुल्लु मुऽतदिन् असीमिन्
(१२) इज़ा तुत्ला अलैहि आयातुना क़ाल असातीरुल्
अव्वलीन् (१३) कल्ला बल् रान अला कुलूबिहिम्
माकानू यक़््सिबून् (१४) कल्ला इन्नहुम् अर्रब्बिहिम्

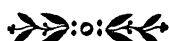
यौमइजिल्ल महज्जबून् (१५) सुम्म इन्नहुम् लसालुल्
जहीम् (१६) सुम्म युक्कालु हाज्जल्लजी कुन्तुम् विही
तुकज्जिबून् (१७) कल्लार इन्न किताबल् अब्रारि लफी
इल्लीयोन् (१८) व मार अद्राक मा इल्लीयून् (१९)
किताबुम्मकूँइ (२०) यश्हदुहुल् मुक्करबून् (२१)
इन्नल् अब्रार लफी नईमिन् (२२) अलल् अराइकि
यंजूरुन् (२३) तऽरिफु फी बुज्जहिहिम् नद्रतन्नईम् (२४)
युस्कौन मिरहीकिम् मख्तूमिन् (२५) खितामुहू मिरक,
व फी जालिक फल्यतनाफसिल् मुतनाफसन् (२६) व
मिजाजुहू मिन् तस्नीमिन् (२७) ऐनँय्यशरबु बिहल्
मुक्करबून् (२८) इन्नल्लजीन अजरूम कानू मिनल्लजीन
आमनू यद्दहकून् (२९) व इजा मरू बिहि म यतगा-
मजून (३०) व इज्जन्कलबू इलार अहलि हिमुन् कलबू
फकिहीन् (३१) वइजा रअौहुम कालू इन्न हाइउलाइइ
लदाइल्लून (३२) व मारउसिलू अलौहम हाफिजीन्
(३३) फल् यौमल्लजीन आमनू मिनल् कुप्फांग यद्-
दहकून् (३४) अलल् अराइकि यन्जूरुन् (३५) हल् सुन्वि-
बल् कुप्फारु माकानू यफ् अलून (३६)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है ।
बड़ी खराबी है (नाप तौल में) कमी करने वालों के लिये

[१] (यानो) उन लोगों के लिये कि जब वह लोगों से (कोई चीज) नाप कर लेने लगते हैं तो पूरा पूरा लेते हैं [२] और जब उनको नाप कर या तौल कर देने लगते हैं तो घटा कर देते हैं [३] क्या यह लोग ख्याल नहीं करते कि वह (मरने के बाद हिसाब के लिये) उठाये जायेंगे [४] एक बड़े दिन में [५] जिस दिन तमाम लोग सारे जहान के मालिक के सामने खड़े होंगे [६] याद रखो, बदकारों का आमाल नामा सिज्जीन में होगा [७] और तुम को क्या मालूम कि सिज्जीन क्या है ? [८] वह एक लिखा हुआ दफ्तर है [९] उस रोज़ बड़ी खराबो है फुटलाने वालों की [१०] जो फुटलाते हैं जज्जा व सज्जा के दिन को [११] और उस को तो वही शरूस फुटला सकता है जो हृद से गुजरा हुआ गुनह गार है [१२] जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहता है कि यह तो अगले लोगों की कहानियां हैं [१३] नहीं नहीं, बल्कि बात यह है कि उनके दिलों पर उनके करतूतों का जङ्ग बैठ गया है [१४] हां, हां, बेशक यह लोग उस दिन अपने पर्वरदिगार (के दीदार) से जरूर रोक दिये जायेंगे [१५] फिर बेशक वह जरूर दोज्जख में दाखिल होंगे [१६] फिर उनसे कहा जायेगा—यही वह (दोज्जख) है जिसको तुम फुटलाया करते थे [१७] याद रखो—बेशक नेक लोगों का आमाल नामा 'इल्लीयोन' में होगा [१८] और तुमको क्या मालूम कि इल्लीयोन क्या है ? [१९] एक लिखा हुआ दफ्तर है [२०] जिसको (ख़दा से) करीब रहने वाले (फरिश्ते) देखा करते हैं [२१] बेशक नेक लोग (जन्नत के) ऐश आराम में होंगे [२२] तख्तों पर बैठे हुए (वहाँ के मनाजिर (दृश्य)) देख रहे होंगे [२३] तुम उनके चेहरों में आराम का ताजगी पाओगे [२४] उन्हें मुहर लगी हुई खालिस शराब पिलाई जायेगी [२५] जिसका मुहर मुश्क का होगा, तो हिंस करने वालों

को चाहिये कि इस चीज़ की हिंस करें [२६] और उस में 'तस्लीम' की मिलावट होगी [२७] जो एक चश्मा है, उसमें से वह लोग पियेंगे जो खुदा के नज्दोकी होंगे [२८] बेशक जो लोग गुनहगार थे वह (दुनिया में) ईमान लाने वालों के साथ हँसी किया करते थे [२९] और जब उनके पास से गुज़रते थे तो (शरारत से) आपस में आँख मारते थे [३०] और जब अपने घर लौटते उस वक्त भी (उनके बारे में) हँसी दिल लगी ही करते हुए लौटते थे [३१] और जब उन्हें देखते थे तो कहते थे देखो यही लोग हैं जो गुमराह हो गए हैं [३२] हालाँकि वह लोग उन (ईमान वालों) पर कुछ चौकीदार बना कर नहीं भेजे गये थे [३३] तो आज (क्रियामत) के दिन ईमान वाले उन कुफ़्र करने वालों की हँसी उड़ा रहे हैं [३४] तख़्तों पर बैठे हुए (जन्नत के मनाज़िर) देख रहे हैं [३५] सचमुच कुफ़्र करने वालों को उनके करतूतों का ख़ूब बदला मिला [३६]



७—सूरः इंशिकाकः

(मक्का में उतरी और इसमें २५ आयतें हैं)

जरूरी तशीह

इस सूरह में क्रियामत का नज़्श खींचकर इंसान को शफ़लत पर तंबीह की गई है और कहा गया है कि तुझे बहर हाल अपने पर्वरदगार के पास पहुँचना है इसके लिये तू क्या तैय्यारी कर रहा है ? उस रोज़ हिसाब किताब के बाद नेक लोग ख़ुश ख़ुश लौटेंगे और बदकार लोग मौत मौत चिल्लाते होंगे और जहन्नम में डाले जायेंगे ।

इस सूरह में शफ़र, रात, और चांद की क्रसम खाई गई है, इन

चीजों की कृपय खा कर जो बात कही गई है उसका मतलब यह है कि रद्दोबदल क़द्रत का एक खास क़ानून है, इसलिये जिस तरह खुद इन चीजों की हालत में रद्दोबदल होता रहता है इसी तरह इंसान की हालत में भी रद्दोबदल होते हुए दर्जा बदर्जा उसे आशिरत की मंज़िल तक पहुंचना है। फिर इन्सान को क्या हो गया है कि वह इस बात पर यक़ीन नहीं करता, और जब उसके सामने क़र्आन पढ़ा जाता है तो वह खुदा के आगे झुक नहीं जाता।

विस्मिल्लाहिरहेमानिर्रहीम् ।

इजस्समा३उन् शक्कत् (१) वअज़िनत् लिगब्विहा बहुक्कत् (२) वइज़ल्अदु मुदत् (३) वअल्कत् माफीहा वतख़ल्लत् (४) वअज़िनत् लिगब्विहा बहुक्कत् (५) या अय्युहल इन्सानु इ नक काश्हिनु इला रब्बि कद्हन् फ़मुलाकीह (६) फ़अम्मा मन् ऊतिय किताबहू बियमी-निही (७) फ़सौफ़ युहासबु हिमाबय्यमारौ (८) व यन्क़लिव् इला२ अहलिही मसरुरा (९) वअम्मा मन् ऊतिय किताबहू वरा३अ जह्रिही (१०) फ़सौफ़ ग़दुम्वरौ (११) व यसला सईरा (१२) इन्नहू कान फ़ा२ अहल्ही मसरुरा (१३) इन्नहू जन्न अल् लय्यहूर् (१४) वला२ इन्न रब्बहू कान बिही बसीरा (१५) फ़ला उक् मिमु विशशफ़ि (१६) वल्लैलि दमा वसक़ (१७) वल् कमरि इज़त्तसक़ (१८) लतर्फ़ वन्न तवक़न् अन् तवग् (१९) फ़मालहुम् लायुडमिनून (२०) वइजा कुरिअ अलैहिमुल् कुर्आनु लायमज़ुदून* (२१)

*इस आयत को पढ़ कर सज्दा करना चाहिये।

बलिल्लजीन कफरू युक्ज़िज़्बून (२२) वल्लाहु अऽलमु
बिमा यूऊन् (२३) फ़वशिर्हुम बिअज़ाबिन् अलीमिन्
(२४) इन्नल्लजीन आमनू व अमिलुस्सालिहाति लहुम्
अज़रून ग़ौरु मम्नून (२५)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहवान बहुत रहम वाला है

जब आस्मान फट जायेगा (१) और वह अपने पर्वरदिगार का हुक्म सुनलेगा और उसे ऐसा ही करना चाहिये (२) और जब ज़मीन तान दी जाएगी (३) और जो कुछ उसके अन्दर है उसे निकाल बाहर करेगी और खाली हो जायेगी (४) और वह अपने पर्वरदिगार का हुक्म सुन लेगी और उसे ऐसा ही करना चाहिये (५) ए इन्सान ! तुझे अपने पर्वरदिगार के पास पहुंचने तक (अपने कामों में) ख़ूब मिहनत करना है (६) फिर एक दिन उसके सामने हाज़िर होना है (७) तो (उस दिन) जिस शख्स को उस (के आमाल) का पर्चा उसके दायें हाथ में दिया जायेगा तो उसका हिसाब जल्दही कर दिया जायेगा, बिल्कुल आसान हिसाब (८) और वह हँसी खुशी अपने घर वालों के पास लौट आयेगा (९) लेकिन वह शख्स जिसको उस (के आमाल) का पर्चा उसकी पीठ के पीछे दिया जायेगा (१०) तो वह मौत मौत पुकारेगा (११) और (दोज़ख की) दहकती हुई आग में दाखिल होगा (१२) बेशक वह शख्स (दुनिया में) अपने घर वालों में मगन रहा करता था (१३) बेशक उसने समझकर खा था कि वह कभी (खुदा की तरफ) लौटेगा ही नहीं (१४) क्यों नहीं (उसे तो लौटना ही था) बेशक उसका पर्वरदिगार उसे ख़ूब देखता था (१५) तो मैं कसम खाता हूँ उस सुखी की जो शाम के वक्त

(आस्मान पर) होती है (१६) और कसम खाता हूँ रातकी, और उन चीजों की जिन्हें रात समेट लेती है (१७) और कसम खाता हूँ चाँद की जब वह पूरा हो जाये (१८) कि तुम जरूर एक हालत से दूसरी हालत में पहुँचोगे (१९) तो इन लोगों को क्या हुआ है कि ईमान नहीं लाते ? (२०) और जब उनके सामने क़र्आन पढ़ा जाता है जब भी (खुदा के आगे) नहीं झुकते (२१) बल्कि कुफ़्र करने वाले (उल्टा उसे) झुटला रहे हैं (२२) और खुदा ख़ब जानता है कि यह लोग अपने दिलों में क्या भरे हुए हैं (२३) सो (ऐ पैग़म्बर !) ऐसे लोगों को दुख देने वाले अज़ाब की ख़ुश ख़बरी सुना दो (२४) लेकिन जो लोग ईमान लाये और भले काम किये तो उनके लिये कभी ख़त्म न होने वाला सिला है (२५)

—:०:—

द—सूर: बुरूज

(मक्का में उतरी और इसमें २२ आयतें हैं)

जरूरी तशरीह

बेदीनों ने दीन दारों पर सदा ज़ुल्म ढाये हैं और उन को सताया है । उनके ज़ुल्म के तरीक़ों में से एक तरीक़ा यह भी रहा है कि वह आग जलाकर दीन दारों को उसमें झोंक देते । खुदा के मशहूर पैग़म्बर हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को भी उनके मुल्क के बेदीन बादशाह ने आग में झोंकवा दिया था, खुदा ने उनको अपनी कुदरत से बचा लिया ।

इस सूरह में इसी तरह के एक वाक़िआ का ज़िक्र है, जो हज़रत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ज़माने के पहले के दीन दारों के साथ हुआ था, उनके इलाक़े के बादशाह को पता लगा कि

वह उसके मज़हब के ख़िलाफ़ खुदा पर ईमान रखते हैं और हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) को पैग़म्बर मानते हैं तो उसने शहर में बड़े बड़े गड़हे खुदवाये और उनमें आग जलवाई, जब आग ख़ूब भड़क गई तो उसने हुक्म दिया कि लोगों से कहा जाये कि वह अपना दीन छोड़ दें, जो लोग यह हुक्म न मानें उनको आग में झोंक दिया जाए । जो लोग पक्के ईमान वाले थे उन्होंने जल कर मर जाना क़बूल किया मगर दीन को नहीं छोड़ा ।

जिस ज़माने में यह सूरह उतरी मक्का के बे दीन लोग वहां के मुसलमानों पर बड़ा ज़ुल्म कर रहे थे, ख़ुदा ने इस वाक़िआ का ज़िक्र करके मुसलमानों को समझाया और दिलासा दिया कि यह जो तुम पर ज़ुल्म हो रहा है कोई नई बात नहीं है, दीनदारों पर हमेशा ज़ुल्म हुआ किये हैं, जिस तरह पहले लोग ज़ुल्म सहते रहे और दीन पर जमे रहे उसी तरह तुम्हें भी जमे रहना चाहिये, एक रोज़ सबको ख़ुदा के सामने हाज़िर होना है, उस रोज़ सब अपने अपने अमल के मुताबिक़ दोज़ख़ या जन्नत में जायेंगे । बे दीनों के लिये जहन्नम का अज़ाब और तुम्हारे लिये जन्नत की नेमतें हैं ।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम्

वस्समा ३३ ज़ातिल् बुरूजि (१) वल् यौमिल् मौ-
ऊदि (२) वशाहिदिब्ब मश्हूद् (३) कुतिल् असह्दा-
बुल् उख़्दूदिन् (४) नारि ज़ातिल् वकूदि (५)
इज़्हुम् अलैहा कुऊद् (६) वहुम् अला मायफ़्-
अलून बिल् मुऽमिनीन शुहूद् (७) वमानक़म्
मिन्हुम् इल्लार अंग्युऽमिन् बिल्लाहिल् अजीज़िल्
हमीदिल् (८) लजी लहू मुल्कुस्समावाति वल् अदू

बल्लाहु अला कुलि शैन् शहीद् (६) इन्नल्लज़ीन
 फ़तुल मुऽमिनीन वल् मुऽमिनाति सुम्म लम् यतूबु फ़तहुम्
 अज़ाबु जहन्नम व लहुम् अज़ाबुल् हरीक् (१०)
 इन्नल्लज़ीन आमनु वअमिलुस्सालिहाति लहुम्-
 जन्नातुन् तजरी मिन् तह्तिहल् अन्हार ज़ालिकल्
 फौज़ुल् कवीर् (११) इन्न वन्श रब्बिक लशदीद्
 (१२) इन्नहू हुव युब्दिउ व यूईद् (१३) व हुबल्
 गफ़ूल् वदूद् (१४) जुल् अशिल् मज़ीदु
 (१५) फ़ऽआलुल् लिमा युरीद् (१६) हल्
 अताक हदीसुल् जुनूदि (१७) फ़िअ्रीन व समूद् (१८)
 बलिल्लज़ीन कफ़रु फ़ी तक्ज़ीबिन् (१९) बल्लाहु
 मिँव्वरा इहिम् मुहीत् (२०) बल् हुव कुअनुम्मजीदुन्
 (२१) फ़ी लौहिम् महफूज़् (२२)

तर्जमा

शुरू अल्साह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है
 कसम है बुजों (यानी बड़े बड़े सितारों) वाले आसमान की
 (१) और कसम है उस (क्रियामत के) दिन की जिस का
 वादा हो चुका है (२) और कसम है (उस दिन की पेशी में)
 हाज़िर होने वाले की, और उन बातों की जो (उसदिन) देखने
 में आयेंगी (३) बुरा हो खाइयां खोदने वालों का (४) ईंधन भरी
 आग वाली (खाइयां) (५) जब वह (ज़ालिम) उन (खाइयों)
 पर बैठे हुए थे (६) और (उन के कारिन्दे) ईमान वालों के
 साथ जो कुछ कर रहे थे वह उसे देख रहे थे (७) और उन्होंने

उनसे सिर्फ इसी बातपर दुश्मनी ठान रखी थी कि वह खुदा पर ईमान ले आये थे जो जबर्दस्त और हर तरह की खूबियाँ वाला है (८) जो आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत का मालिक है, और खुदा हर चीज़ से अच्छी तरह वाकिफ है (९) जिन लोगों ने ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को सनाया फिर तौबा भी नहीं की तो उन के लिये जहन्नम का अज़ाब है और (ख़ासकर) उन के लिये जलाने वाला अज़ाब है (१०) वेशक जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उन के लिये जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, यह (जन्नतों का मिलना) बड़ी कामयाबी है (११) वेशक तेरे पर्वरदिगार की पकड़ बहुत सख्त है (१२) वेशक वही पहली बार पैदा करता है, और वही (क्रियामत) में दोबारा पैदा करेगा (१३) और वह बड़ा बख़्शने वाला बड़ी मुहब्बत वाला (१४) अर्श का मालिक और बड़ी शान वाला है (१५) वह जो कुछ चाहता है कर गुज़रता है (१६) क्या तुमको लश्क़रों की बात पहुंची ? (१७) फ़िर्आन और समूद १* के लश्क़रों की (१८) (इन हालात में नसीहत हासिल नहीं करते) बल्कि जिन लोगोंने कुफ़्र का रास्ता इस्तिथार किया है वह (कुर्आनके) झुटलाने में लगे हुए हैं (१९) और अल्लाह है कि उन को हर तरफ़ से घेरे हुए है (२०) (खुदा का कलाम ऐसा नहीं कि उसे झुटलाया जाये बल्कि वह कुर्आन बड़ी शान वाला है (२१) और लौहि महफ़ूज़ २* में (लिखा हुआ) है (२२)

१*फ़िर्आन की तरह समूद भी एक जालिम कौम भी उसका बयान आगे सूरः फ़ज्र में है । २* लौहि तख़्ती को कहते हैं इससे मुरद एक ऐसी चीज़ है जिसमें खुदा ने अपनी कुद्वत से वह सारी बातें लिख दी हैं जो होने वाली हैं कुर्आन भी दुन्या में उतरने से पहले उस में लिखा हुआ था उस तख़्ती और उस में लिखने की इस्तीक़त (वास्तविकता) इतनी ऊँची है कि इन्साननी अक्ल उसको समझ नहीं सकती ।

९—सूरः तारिकः

(मक्का में उतरो और इसमें १७ आयतें हैं)

जरूरी तशरोह

ऊंचे आस्मान और जगमगाते हुए सितारे की क्रसम खा कर यक्रीन दिखाया गया है कि खुदा की तरफ से हर इन्सान के आमाल की निगरानी हो रही है। जिस खुदा ने एक बूंद से इन्सान को पहली बार पैदा किया है उसको दोबारा पैदा करने की भी क़ुदरत है वह एक दिन इन्सान के आमाल का हिसाब ज़रूर लेगा। फिर आस्मान और ज़मीन की क्रसम खा कर कहा गया है कि क़ुर्आन और उसका बताया हुआ आख़िरत का अक़ीदा कोई हंसी दिल्लीगी की चीज़ नहीं एक पक्की बात है। मक्का के जो लोग ज़िद और सरकशी से क़ुर्आन और आख़िरत के अक़ीदे को झुठलाने की तद्बीरों में लगे हुए हैं वह खुदा के क़ानून को बदल नहीं सकते वह अपनी तद्बीरों में लगा हुआ है यानी अपना काम कर रहा है। ऐसे लोग ज़िन्दगी के थोड़े दिनों की मुहलत से फ़ाहदा उठा लें लेकिन जैसे ही आंखें बन्द होंगी सारी हक़ीक़त खुल जायेगी।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम।

वस्समा३इवत्तारिकि (१) वमा२ अद्राक मत्तारि-
कुन् (२) नज्मुस्साकिवु (३) इन् कुन्लु
नफ्सिन्लम्मा अलैहा हाफ़िज़् (४) फ़ल् यन्जु, रिल्
इन्सानु मिम्म ख़ुलिक् (५) ख़ुलिक मिम्मा३इन्
दाफ़िक्की (६) यख़् रुजु मिम्बैनिस्सुल् बि वत्तरा३इब्
(७) इन्नहू अला रज्ज़ही लकादिर् (८) यौम तुब्-

लस्सराइरु (६) फ़मा लहू मिनू कूवतिन्वला
 नासिर् (१०) वस्समाइरु जातिरज्ज (११) वल
 अर्दि जातिस्सइ (१२) इन्नहू लकौलुन् फ़सलू
 (१३) वमा हुव बिल्हज़ल् (१४) इन्नहुम्
 यकीदून कैदों (१५) व अकीदु कैदा (१६)
 फ़महहिलिल् काफ़िरीन अम्हिल् हुम् रुवैदा (१७)

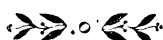
तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ाही मेहबान बहुत रहम वाला है ।

क़सम है आसमान की और क़सम है रात को आनेवाले की
 (१) और तुमको क्या मालूम कि वह रात को आने वाला क्या
 है ? (२) वह एक चमकता हुआ सितारा है (३) कोई आदमी ऐसा
 नहीं जिसपर (खुदा की तरफ़ से) एक निगहबान मुकर्रर न हो (४)
 तो इंसान को चाहिये कि वह इसी बात को देख ले कि वह किस
 चीज़ से पैदा किया गया है ? (५) एक उछलने वाले पानी (नुत्का-
 वीर्य) ही से तो पैदा किया गया है (६) जो (मर्द की) रीढ़
 और औरत के) सोने की हड्डियों के बीच से निकला है (७) बेशक
 खुदा (इंसान के मरने के बाद) उसके लौटाने की पूरी कुद़रत
 रखता है (८) जिस दिन छिपी बातों की जांच की जायेगी (९)
 तो (उसदिन) न इन्सान के पास कोई (अपना) जोर होगा न
 कोई उसका मददगार ही होगा (१०)

क़सम है मेंह बरसाने वाले आसमान की (११) और क़सम
 है (बीज के उगते वक्त) फट जानेवाली ज़मीन की (१२) कि
 यह कुआन (हक़ और बातिल—सत्य और असत्य में) कैसला

कर देने वाला कलाम है (१३) और यह कोई हंसी ठठठे की बात नहीं (१४) यह (कुफ़ करने वाले) दांव पर दांव कर रहे हैं (१५) और मैं तदबोर पर तदबोर कर रहा हूँ (१६) तो (ऐ पैगम्बर !) तुम कुफ़ करने वालों को ढोल दो (ज्यादा नहीं बस) थोड़ी सी ढील दे दो (१७)



१०—सूरः अऽला

(मक्का में उतरी आर इस में २६ आयतें हैं)

ज़रूरी तशरीह

इस सूरह में हज़रत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को तसल्ली दी गई है और समझाया गया है कि ख़ुदा ने जो चीज़ भी पैदा की है उसे पूरे दर्जे तक पहुंचाने का इन्तेज़ाम किया है, इसलिये तुम इसकी फ़िक्र न करो कि कुर्बान को भूल जाओगे, उसका पढ़ना और पूरा करना ख़ुदा का काम है। तुमको मुश्किलों और दुश्वारियों से भी घबराना नहीं चाहिये। नर्साहत और हिदायत का सिलसिला जारी रखो, जिन लोगों के दिल में ख़ुदा का डर है वह ज़रूर तुम्हारी नसीहत क़बूल कर लेंगे, इसका इन्कार तो वह करेंगे जो परले सिरेके बदबख़्त हैं और जिन्हें हमेशा जहन्नम की आग में जलना है।

कुर्बान ने जिन सच्चाइयों की तालीम दी है वह कुछ नई नहीं हैं इब्राहीम और इज़रत मूसा (अलैहिमस्सलाम) के पास जो किताबें भेजी गई थीं उनमें भी इन्हीं बातों की तालाम और हिदायत मौजूद है।

हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) बहुत बड़े पैगम्बर गुज़रे हैं, उनकी औलाद में इतने पैगम्बर हुए कि सारी दुनिया में इस्लाम फैल गया, हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) भी बहुत बड़े पैगम्बर थे जिनको ख़ुदा की किताब तौरात मिली थी, यही उन्हीं को अपना पैगम्बर

मानते हैं, हज़रत ईसा, और हज़रत मुहम्मद (अलैहिमस्सलाम,) सब हज़रत इब्राहीम ही की नस्ल से थे ।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सब्बिहिस्म रब्बिकल् अऽलल् [१] लज़ी
खल्क़ फ़सव्वा [२] वल्लज़ी क़दर फ़हदा [३]
वल्लज़ी अख़्दरजल् मर्था [४] फ़जअलहू गुसाऽअन्
अहवा [५] सनुक्क़रिउक़ फ़ला तन्सा [६] इल्ला
माशाऽअल्लाह, इन्नहू यऽलमुल् ज़हूर वमा यख़्फ़ा
[७] व लुयस्सिक्क़ लिल् युस्त्रा [८] फ़जक्किर इन्न-
फ़अतिज़्ज़िक़रा [९] सयज़्ज़क्क़रु मँय्यख़्शा [१०]
व यतजन्नबुहल् अरकल् [११] लज़ी यऽलन्नारल्
कुब्रा [१२] सुम्म लायमूत फ़ीहा वला यहूया
[१३] क़द् अफ़लह, मन् तजक्का [१४] वज़क्क़-
रस्म रब्बिहो फ़सल्ला [१५] वल् तुऽसिरूनल् हयात-
हुन्या [१६] वल् आख़िरतु ख़ैरूँ व अब्का [१७]
इन्न हाज़ा लफ़िस्सुहु, फ़िल् अला [१८] सुहुफ़ि
इब्राहीम व मूसा [१९]

तर्जमा

(ऐ पैग़म्बर !) अपने पर्वरदिगार के नाम की पाकी बयान
करो जो सब से ऊंचा है (१) जिसे (हर चीज़ को) बनाया,
फिर उसे ठीक किया (२) और वह जिस ने (हर चीज़ का)

अन्दाज़ा ठहरा दिया, फिर (उसे ज़िन्दगी की) राह दिखा दी (३) और वह जिसने (ज़मीन से जानवरों का) चारा निकाला (४) फिर उसको काला कूड़ा करकट बना दिया (५) (ऐ पैगम्बर !) हम तुम्हें (कुर्बान) पढ़ावेंगे, तो तुम (उस में से कुछ) भूलोगे नहीं (६) सिवाय उसके जितना अल्लाह ही (भुलवा देना) चाहे, बेशक वह खुले को भी जानता है और उस बात को भी जो छिपी हुई हो (७) और हम तुम्हें इस आसान (दीन यानी इस्लाम) पर चलने के लिये सुहूलत देंगे (८) तो अगर (तुम देखो कि लोगों को तुम्हारा) समझाना फ़ाएदा पहुंचाता है तो समझाते रहो (९) वह शरूस जल्दही समझाने को कबूल कर लेगा जो (अल्लाह से) डरता है (१०) और वह बड़ा बदवस्त इससे दूरही भागेगा (११) जिसको (दोज़ख की) बड़ी आग में जलना है (१२) फिर उसे वहां (तकलीफों की ज्यादाती के होने पर भी) न मौत ही आयेगी और न वह (चैन से) जी ही सकेगा (१३) बेशक वह शरूस कामयाब हो गया जो (कुफ़र और बदअमली से) पाक होगया (१४) और अपने पर्वरदिगार का नाम याद करता रहा और नमाज़ पढ़ता रहा (१५)

(ऐ दुन्या दारो ! तुम आखिरत की फ़िक्र नहीं करते) बल्कि दुन्या ही की ज़िन्दगी को मुक़द्दम रखते हो (१६) हालां कि आखिरत ही ज्यादा बेहतर और ज्यादा बाक़ी रहने वाली है (१७) बेशक (नेक बख़्ती और बदवस्ती के) यह उसूल खुदाकी भेजा हुई) अगली किताबों में भी मौजूद हैं (१८) (यानी) इब्राहीम और मूसा की किताबों में (१९)

११---सूरः गाशियः

(मक्के में उतरी और इसमें २६ आयतें हैं)

जरूरी तशीह

इस सूरह में पहले क्रियामत की खबर देकर यह बात बताई गई है कि नेक और बुरे ज़िन्दगियों का नतीजा एक सा नहीं हो सकता । आखिरत में नेकों के लिये ऐश ही ऐश और आराम ही आराम होगा और बुरकारों की तकलीफों और मुसीबतों का कोई ठिकाना न होगा । इसके बाद हज़रत रसूलुल्लाह [सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम] को तसल्ली और आपकी बात न मानने वालों को झिड़की दी गई है, और कहा गया है कि अगर इनमें सोच समझ का मादा होता और वह ऊँट आस्मान, पहाड़ ज़मीन और इनकी हालत पर गौर करते तो यही चीज़ें उनसे ईमान लाने के लिये काफ़ी थीं, बहर हाज़ आप अपना काम जारी रखिये, अगर वह आप की बात नहीं मानते तो आप पर इसकी ज़िम्मेदारी नहीं । इनको छोट कर आना तो है हमारे ही पास, फिर हम उनसे पूरा पूरा हिसाब चुका लेंगे ।

आस्मान, ज़मीन और पहाड़ों के साथ ऊँट का मेल शायद अरब के बाशिन्दों की तरह दूसरे मुल्क के लोगों की समझ में न आये, लेकिन एक अरब जब अपने ऊँट पर सवार होकर अपने मुल्क में सफ़र करता है तो अपनी जात के अलावा उसे चार ही चीज़ें दिखाई देती हैं, एक उफ़का ऊँट, दूसरे उसके सर पर ऊँचा आस्मान, तिसरे इर्द गिर्द खड़े हुए पहाड़, चौथे उसके नीचे बिछी हुई ज़मीन । यह मंज़र [दृश्य] ऐसा होता है कि बेहज़ितयार ख़ुदा की क़द्रत यद आने लगती है ।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम् ।

हल् अताक हदीसुल् गाशियः (१) वुजूहुं ययौमइजिन्

खाशितुन् (२) आमिलतुन् नासिवतुन् (३) तस्ला नारन्
 हासियतुन् (४) तुस्का मिन् एनिन् आनियः (५) लैस लहुम
 तआसुन् इल्ला मिन् दरीइल् (६) लायु भिन्नु वला युगनी
 मिन् जूअ. (७) वुजूहुंय्योमइजिन् नाइमतुल् (८) निसर्गयहा
 रादियतुन् (९) फी जन्नतिन् आलियतिल् (१०) ला तस्मउ
 फीहा लागियः (११) फीहा ऐलुन् जा ग्यः (१२) फीहा सुरु-
 रुम्मफू अतूँ (१३) व अक्वाद्दुम्माद्दुअतूँ (१४) व नमारिकु.
 मस्फू फ. तूँ (१५) व जरावीयु मब्बूसः (१६) अफला यन्जु-
 रुन् इलल् इ. बलि कैफ. खु लि. त (१७) इलाममाइइ कैफ
 रुफिअन् (१८) व इलल् जिवा. ल कैफ नुसिवन् (१९) व
 इलल् अदि कैफ सुतिहत् (२०) फज. विकर, इन्नमार अन्त
 मुज. विकर (२१) लस्त अलैहिम् बि सुसैतिरन् (२२) इन्ला
 मन् तबल्ला व कफर (२३) फयुअजि. जवहुल्लाहुल् अजा-
 वल् अक्वर (२४) इन्न इलैनाइयावहुम् (२५) सुम्म इन्न
 अलैना हिसावहुम् (२६)

तर्जमा

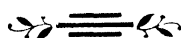
(शुरु) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है।

(ऐ पैगम्बर !) क्या तुम्हें उस ढांक लेने वाली (यानी क्रियामत) का भी कुछ हाल पहुंचा है ! (१) उस दिन कितने चेहरे जिल्लत से लटके हुए होंगे (२) (और उस दिन की मशक्कत से थके और मांदे (३) दहकती हुई आग में दाखिल होंगे (४) उन्हें एक खौलते हुए चशमे का पानी पिलाया जायेगा (५) (वहां)

उनके लिये बदबूदार भाड़ कांटे के सवा कोई खाना न होगा (६) जो न (बदन को) मोटा ही करेगा, और न भूक ही को दूर करेगा (७) कितने चेहरे उस दिन रौनकदार होंगे (८) अपने (नेक , आमाल (के अच्छे नतीजे) से राजी होंगे (९) आला दर्जे की जन्नत में (१०) वहां वद लोग कोई बेहूदा बात न सुनेंगे (११) उसमें बहता हुआ चश्मा होगा (१२) ऊँच ऊँचे तरल होंगे (१३) ढंग से रखे हुए प्याले होंगे (१४) बराबर बराबर लगे हुए गाव तकिये होंगे (१५) और मखमल के बढिया कालीन फैले पड़े होंगे (१६)

तो क्या लोग ऊंट को नहीं देखते कि वह कैसा (अजीब) पैदा किया गया है ? (१७) और आसमान को नहीं देखते कि उसे कैसा ऊंचा बनाया गया है ! (१८) और पहाड़ों को नहीं देखते कि किस तरह खड़े कर दिये गये हैं, (१९) और ज़मीन को नहीं देखते कि कैसी बिछा दी गई है (२०)

तो (ऐ पैगम्बर !) तुम लोगों को समझाते रहो, क्योंकि तुम तो बस समझा देने वाले हो (२१) तुम उन लोगों पर कुछ दारोगा नहीं हो, (कि अपनी बात ज़बर दस्ती मनवालो) (२२) लेकिन (तुम्हारे समझाने पर भी) जो शरूस मुँह मोड़ेगा, और इन्कार करेगा (२३) तो खुदा (आखिरत में) उसे बहुत बड़ी सज़ा देगा (२४) बेशक उनको हमारे ही पास लौट कर आना होगा (२५) फिर बेशक हमारे ही ज़िम्मे उनका हिसाब लेना है (२६)



१२—सूरः फ़ज्र

(मक्का में उतरी और इसमें ३० आयतें हैं)

ज़रूरी तशरीह

इस सूरह में आद, —समूद, —और फ़िअ्रौन तीन पुरानो क़ौमों का ज़िक्र आया है । इन तीनों क़ौमों ने अपने अपने ज़माने में बड़ी तरक्की की थी, और अपनी तरक्की के चमण्ड में खुदा को भूल गई थीं । फ़िअ्रौन का हाल सूरह “ताजिआत” में गुज़र चुका है, वह अपने को सबसे बड़ा खुदा कहता था । आद का भी दावा था कि जोर और क़ूवत में उनसे बढ़ कर कोई नहीं ।

फ़िअ्रौन मिस्र में हुआ था और आद और समूद अरब में गुज़रे थे । अरब में सैकड़ों मील लम्बा एक रेगिस्तानी सहरा (मरु-भूमि) है, जो मुल्क के दक्खिन और उत्तर दानों तरफ फैला हुआ है । इसी सहरा के दक्खिनी हिस्से में आद का वतन था, उनको सल्तनत फ़ारस की खाड़ी के किनारे किनारे इराक़ के मुल्क तक फैली हुई थी, उस क़ौम को मकानों और महलों के बनाने का बड़ा शौक़ था और इस फ़न (कला) में उसने बड़ी तरक्की की थी । यह लोग जहाँ पहुँचते किसी ऊँची जगह पर अपनी यादगार (स्मारक) के तौर पर एक बड़ी इमारत बना देते, इसी लिये इस सूरह में इस क़ौम का बड़े बड़े सुतूनां वाली क़ौम कहा गया है, यानो जिन्होंने बड़े बड़े खम्बां वाली इमारतें तामोर (निर्माण) की थीं । उस ज़माने में उस क़ौम के टक्कर की दूसरी कोई क़ौम न थी ।

कोई क़ौम जब तरक्की की हद को पहुँच जाती है तो वह खुदा को भुला बैठती है । और खुदा को भुला देना ही इन्सान

की सब से बड़ी बदबख्ती है, जब वह खुदा को मुला देता है तो उसमें हर तरह की खराबियां पैदा हो जाती हैं जो किसी तरह दूर नहीं होतीं।

‘आद’ उन सच्चे मोमिनों की औलाद थे जो हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) के साथ कश्ती पर सवार होकर तूफ़ान से बच गये थे, लेकिन यह लोग कुफ़्र और शिर्क में फँस गये, जब उन लोगों का फ़साद हृद से बढ़ गया तो खुदा ने उन्हीं में से हज़रत हूद (अलैहिस्सलाम) को अपना पैग़म्बर बना कर उनकी हिदायत पर मुकरर (नियुक्त) किया। हज़रत हूद ने उन लोगों को समझाया और उनको खुदा के एहसानात और उसकी मेहबानियां याद दिलाई, पर वह लोग खुदा की नाकमानी और अपनी शरारत से बाज़ न आये, आखिर खुदा ने उन पर हवा के तूफ़ान का अज़ाब भेजा, जिसकी कैफ़ियत एक जगह यूँ बयान की गई है “खुदा ने उनकी जड़ काट डालने वालों उस हवा को सात रात और आठ दिन तक उन पर चला दिया तो वह उस हवा में इस तरह पड़े हुए थे जैसे खोखले दरख़तों के तने।”

जिन वक्त् कुर्आन शरीफ़ उतर रहा था अरब के लोग आम तौर पर आद को जानते थे, और उनमें उनकी शान शौकत के बहुत से क्रिस्ते मशहूर थे, कहीं कहीं उनकी इमारतों के खंडर भी पाये जाते थे, लेकिन अब उनके आसार मिट चुके हैं, अरब के दक्खिनी हिस्सों में कुछ खंडर मिलते हैं जो इसी काम के बताये जाते हैं। इसी इलाक़े में एक जगह एक क़ब्र (समाधि) भी है जो हज़रत हूद (अलैहिस्सलाम) को बताई जाती है। उन्नीसवीं सदी में एक अंग्रेज़ अफ़सर को एक तख़्ती मिली थी जिसकी इबारत (लेख) से पता चलता था कि वह हज़रत हूद के मानने वालों की तख़्ती थी।

२—समूद का वतन अरब के पच्छिम और उत्तर का रेगिस्तान था जिसका नाम उस ज़माने में 'बादियुल कुरा' था, उस का यह नाम इसलिये पड़ा कि उस मैदान में बहुत सों छोटी छोटी बस्तियाँ थीं। मदीना और तबूक के बीच एक स्टेशन पड़ता है जिसका नाम 'मदाएने सालिह' है। यही समूद का सद्र मक़ाम (मुख्य स्थान) था, पुराने ज़माने में यह 'हिज़्र' कहलाता था। 'समूद' को भी महल और इमारतें बनाते का बड़ा शौक था, वह मैदानों में और पहाड़ों को काट काट कर इमारतें बनाते थे, उनकी इमारतें ऐसी ही थीं जैसे हिन्दुस्तान में ऐनोरा और एजन्ता वगैरह में पहाड़ों को काट कर बनाई हुई इमारतें हैं।

समूद उन लोगों की आलाद थे जो हज़रत हूद अलैहिस्सलाम पर ईमान लाये थे और इसी वजह से ख़ुदा के आज्ञाब से बच गये थे, लेकिन आगे चलकर यह लोग भी कुफ़्र और शिर्क में फँस गये और अच्छे कामों की जगह बुरे काम करने लगे, उनकी हिदायत के लिये ख़ुदा ने उन्हीं में से हज़रत सालिह (अलैहिस्सलाम) को पैग़म्बर बनाया, लेकिन वह उन पर ईमान न लाये और उनके दुश्मन हो गये, उन्होंने कहा अगर तुम ख़ुदा के सच्चे पैग़म्बर हो तो अपनी पैग़म्बरी की कोई निशानी दिखाओ, उनकी मांग पर एक ऊँटनी जाहिर हुई जो उनकी तवाही की तम्हीद (भूमिका) थी, हज़रत सालिह ने फ़र्माया—तुम्हारी मांग पर ख़ुदा की तरफ़ से यह ऊँटनी जाहिर हुई है, यह तुम्हारी ज़मीन पर चरेगी और तुम्हारे कुएं से एक दिन सिर्फ़ ऊँटनी पानी पियेगी और एक दिन तुम पियोगे, अगर तुमने ऊँटनी को कोई नुक़सान पहुँचाया तो तुम पर ख़ुदा का अज़ाब आ जायेगा।

कुछ लोग हजरत सालिह पर ईमान लाये थे उन्होंने आपकी हिदायत की पाबन्दी की, लेकिन जो लोग आपके मुखालिफ (विरोध) थे उन्होंने आपसे वे सलाह करके एक शख्स को मुकर्रर कर दिया जिसने एक रात हमला करके उस ऊँटनी को मार डाला नीजा यह हुआ कि समूद भी खूदा के अजाब में गिरफ्तार हो कर तवाह हो गये ।

हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के जमाने तक समूद की वस्तियों के खण्डर मौजूद थे । जो लोग अरब से तिजारत के लिये शाम जाते थे वह उन्हीं खण्डरों से होकर गुजरते थे, आँ हजरत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तबूक को जाते हुए समूद के खण्डरों से गुजरे तो एक कुएं को बताया कि हजरत सालिह की ऊँटनी इसी से पानी पीती थी, और मुसलमानों को हिदायत की कि इस कुएं का पानी न पियें । आपने एक पहाड़ी दर्रा भी दिखाया जिसमें हजरत सालिह की ऊँटनी रहती थी वह दर्रा अब भी मौजूद है ।

विस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ।

वल्फजि (१) व लयालिन् अशरिन् (२) वरश-
फ्इ, वल्वात्रि (३) वल्लैलि इजा यस्त्र (४) हल् फी
जालिक कसमुल्लिजी हिज्र (५) अलम् तर कैफ
फअल रब्बुक बिआदिन् (६) इर्म जातिल् इमादिल्
(७) लती लम् युरूलक, मिस्लुहा फिल् बिलादि (८)
व समूदल्लजीन जाबुस्सखूर बिल्वादि (९) व फिअ्रीन
जिल् औतादिल् (१०) लजीन तगौ फिल् बिलादि

(११) फ अक्सरू फीहन्फसाद (१२) फसब्ब
 अलैहिम् रब्बुक सौत अज़ाबिन् (१३) इन्न रब्बक
 लविन्मिसाद् (१४) फ अम्मल्हन्सानु इज़ा मब्तलाहु
 रब्बुहू फ अक्रमहू व नऽअमहू, फयकू, लु रब्बी अक्रमन्
 (१५) व अम्मार इज़ा मब्तलाहु फक़्दर अलैहि
 रिज्कहू, फयकू, लु रब्बीर अहानन् (१६) कल्ला बल्ला
 तुक्रिमनन्यतीम् (१७) वला तहाऽइदून अला तअमि-
 न्मिस्कीनि (१८) व तऽकुलूनत्तुरास अक्ललम्मी
 (१९) व तुहिब्बूनल्माल हुब्बन् जम्मा (२०) कल्लार
 इज़ा दुक्कतिल् अर्दु. दक्कन दक्कौ (२१) व जाऽअ
 रब्बुक वल्मलकु सप्फन् सप्फा (२२) व जीऽअ
 यौमइज़िम् विजहन्नम यौमइज़ीं यतज्जक्करुल् इन्सानु
 व अन्ना लहुज़्जिका (२३) यकू, लु या लैतनी कद्मत्तु
 लिह्याती (२४) फयौम इज़िल्ला युअज़्जिबु अज़ाबहू
 अहद् (२५) वला यूसिकु, वसाक़्कहूर अहद् (२६)
 याऽअय्यतुहन्नप्रसुल् मुत्मइन्न (२७) तुजिह, इला
 रब्बिकि रादि, यतम्मदीयः (२८) फदख़ुली फी इवादी
 (२९) वद् खुलीजन्नती (३०)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है ।

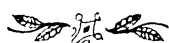
क़सम है सुब्ह को [१] ओर क़सम है दस रातों की [२]

और कसम है जोड़े की और ताक को [३] और कसम है रात को जब वह गुज़रने लगे [४] समझ बूझ वालों के लिये इन (चीजों) में बड़ी कसम मौजूद है [५] (ए पैगम्बर ! क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे पर्वरदगार ने आद एरम के साथ कैसा सुलूक किया ? [६] जो ऊँचे ऊँचे सुतूनों (की इमारतों) के मालिक थे [७] मुल्कों में उनकी नज़ोर नहीं पैदा की गई [८] और समूद के साथ क्या किया जो वादी (उलकुरा) में (इमारतें बनाने के लिये) पत्थर काटा करते थे [९] और उस मीखों वाले फ़िअ्रौन के साथ (क्या किया ?) [१०] यह (सब) वह थे जिन्होंने शहरों में बड़ा सर उठा रक्खा था [११] और उनमें बहुत ही ज्यादा ख़राबी फैला दी थी [१२] आख़िर तुम्हारे पर्वरदगार ने उन पर अज़ाब का कोड़ा बरसाया [१३] बेशक तुम्हारा पर्वरदगार (मुजरिमों की) घात में लगा रहता है [१४]

फिर भा इन्सान (की हालत यह है कि) जब उसका पर्वरदगार उसको (इस तरह से) जाँचता है (कि) उसको इज्जत देता है और उसे नेमत अता करता है तो वह (इतरा कर) कहने लगता है—मेरे पर्वरदगार ने मुझे बड़ा इज्जत दी [१५] मगर जब वह (एक दूसरी तरह से) उसकी जाँच करता है और उसकी रोज़ी उसपर तंग कर देता है तो वह (शिकायत के तौर पर) कहने लगता है—मेरे पर्वरदगार ने मुझको बेइज्जत कर दिया [१६] नहीं (तुम्हारे पर्वरदगार ने तुमसे अपनी दाँ हुई नेमत बे वजह नहीं छीन ली,) बल्कि (तुम्हारा हाल यह है कि) तुम यतीम बच्चे की खातिर नहीं करते [१७] और मुहताज के खाना खिलाने पर एक दूसरे को उकसाते नहीं [१८] और मरे हुए आदमी का माल (उसके

हकदारों को देने की जगह खुद) समेट समेट कर खा जते हो [१६] और दौलत से बहुत ज्यादा मुहब्बत करते हो—[२०]

खबरदार ! जब ज़मीन तोड़ कर चक्रना चूर कर दा जायेगो [२१] और तुम्हारा पवरदिगार आयेगा और उसके साथ फरिश्ते भी परा बांधे आ पहुँचेंगे [२२] उस दिन जहन्नम (सब के सामने) ले आई जाएगी, उस दिन इन्सान याद करेगा कि उसने (दुनिया में क्या किया था) लेकिन अब उसको उस याद (से फायदा उठाने) का मोका ही कहाँ होगा ? [२३] वह (पछता पछता कर) कहेगा—ऐ काश ! मैंने अपना (इस) ज़िन्दगी के लिये (कुछ नेकियां) आगे भेज दी होतीं [२४] तो उस दिन न ख़ुदा के अज़ाब जैसा कोई अज़ाब देगा [२५] न उसके जकड़ने जैसा कोई जकड़ेगा [२६] (ख़ुदा अपने नेक बन्दे से फरमायेगा) ऐ चैन वाली जान ! [२७] अपने पवर-दिगार की तरफ लौट चल, तू उससे ख़ुश वह तुझसे ख़ुश ! [२८] फिर मेरे बन्दों में मिल जा [२९] और मेरी जन्नत में दाखिल हो जा ! [३०]



१३—सूरः बलद्

(मक्के में उतरी और इसमें २० आयतें हैं)

ज़रूरी तशीह

इस सूरह में शह मक्का और पैदा करने वाले और पैदा होने वाले यानी इन्सानको हालत को गवाह बनाकर यह बात समझाई गई है कि यह दुनिया जिसमें इन्सान पैदा किया गया है और इन्सानी ज़िन्दगी पैदाइश ही के वक्त से तकलीफ़ों और मशक्कों से भरी हुई है, किमी इन्सान को इन से छु कारा नहीं ।

इस समझाने में खुदा ने अपने रसूल और मुसलमानों को तसल्ली भी दी है कि वह मक्का में जा रंज और तकलीफ उठा रहे हैं उस से बचारायें नहीं, दुनिया में कोई इन्सान नहीं जिसे किसी तरह का ग़म नहीं, जिसे दीन का ग़म नहीं उसे दुनिया का ग़म है, इसी के साथ इस्लाम के दुश्मनों को भी ख़बरदार किया गया है कि वह जो इस्लाम और मुसलमानों को नुक्सान पहुंचाने के लिये बे धड़क माल ख़र्च कर रहे हैं और इस से बे पर्वा हैं कि खुदा इनके कर्तूतों को देख रहा है। एक रोज़ उनको अपने क्रिये का फल भोगना पड़ेगा खुदाने उनको भलाई बुराई के दोनों रास्ते दिखा दिये और दोनों के नतीजे से आगाह कर दिया। इंसान जिस रंज और मशक्कत की हालत में पैदा किया गया है उससे छुटकारा पाने का यही एक तरीका है कि इन्सान खुदा को माने, उसके दिये हुए माल को बुराई के काम में ख़र्च करने की जगह भूखों, मुहताजों और यतीमों को खिलाये और भलाई के दूसरे कामों में ख़र्च करे, यही है घाटी से गुज़रना और सचमुच जिन्दगी का मैदान जीतना।

बिस्मिल्लाहिररह्मानिररहीम्

ला उक् सिप्पु बिहाज़ल् बलदि (१) वअन्त हिल्लुम्
 बि हाज़ल् बलदि (२) व वालिदिब्बमा बलद् (३)
 लकद् खलक् नल इन्सान फ़ीकवद् (४) अयह सबु
 अल्लंयक् दिर अलैहि अह्द (५) यक् लु अह्लक्तु
 मालल् लुबदा (६) अयह सबु अल्लम्यरहू
 अह्द (७) अलम् नज् अल्लहू ऐनैनि (८) वलिसानौ व
 शफ़तैनि (९) व हदैना हुन्नज्दन् (१०) फ़लक् तह मल् अक्
 बत (११) वमा अद्राक मल् अक्बः (१२) फ़क्कु

रक़्बतिन् (१३) औ इत्आमुन् फ़ी यौमिन्ज़ी मसग़बतीं
(१४) यतीमन् ज़ामक् रबतिन् (१५) औ मिस्कीनन् ज़ा मत्तर-
बः (१६) सुम्म कान मिनल्लज़ीन आमनू वतवासौ बिस्सब्रि
वतवासौ बिल् मर्हमः (१७) उलाइक़ असूहाबल्
मैमनः (१८) वल्लज़ीन कफ़रू बिआयातिना हुम् अस्-
हाबल् मशअमः (१९) अलैहिम् नारुम्मसदः (२०) ।

तर्जमा

(शुरू) ख़ुदा के नाम से जो बड़ा ही मेहबान बहुत रहम वाला है

मैं क़सम खाता हूँ इस शहर (मक्का) की [१] और (ऐ पैग़म्बर ! एक दिन तुम इस शहर में (फ़ातिह (विजयो) की हैसियत) से दाखिल होने वाले हो [२] और क़सम खाता हूँ बाप और बेटे की (यानी ख़ुद इंसान की हालत की) [३] वेशक़ हमने इन्सान को मशक्क़त में (बसर करने वाला) बनाया है [४] क्या वह समझता है कि उस पर कोई क़ाबू न पास करेगा ? [५] वह (बड़े घमण्ड से) कहता है:—मैंने [मुहम्मद की मुख़ालिफ़त में] बहुत सा माल खपा डाला [६] क्या वह समझता है कि उसे किसी ने (यानी ख़ुदा ने) देखा नहीं ? [७] क्या हम ने उस को दो आंखें नहीं दीं ? [८] और एक ज़बान और दो होंट नहीं दिये, [९] और हमने उसे (भलाई और बुराई के) दोनों रास्ते दिखा दिये [१०] फिर भी वह घाटी में से होकर न गुज़रा [११] और तुमने क्या समझा कि वह घाटी क्या है ? [१२] वह घाटी है गुलामी या क़र्ज़ से किसी की) गरदन छुड़ा देना [१३] या फ़ाक़ा के दिन खाना खिला देना [१४] किसी रिश्ता दार यतीम को [१५] या धूल में अटे हुए किसी मुहताज को

(माल खर्च करने की डींग मारने वाले को चाहिये था कि वह नेकी के यह सब काम करता) [१६] फिर वह उन लोगों में से हो जो ईमान लाये और जिन्हो ने एक दूसरे को सन्न की ताकीद की और एक दूसरे को तरस खाने की ताकीद की [१७] यही लोग अच्छे नसीब वाले हैं [१८] और जिन लोगों ने हमारी आयतों का इन्कार किया वही लोग बुरे नसीब वाले हैं [१९] उन पर ऐसी आग मुसल्लत होगी, जो ऊपर से बन्द होगी [२०]



१४—सूरः शम्स

(मक्के में उतरी और इसमें १५ आयतें हैं)

ज़रूरी तथरीह

सूरज, चांद, दिन, रात, आस्मान, ज़मीन और आदमी की जान (आत्मा) को गवाह बनाकर दो ठुक बात वह दी गई है कि नेकी और बदी एक नहीं हैं, और न दोनों का नतीजा बराबर हो सकता है । जिसने ईमान लाकर और भले काम करके अपने को सँवार लिया वह भलाई पा गया, और जिसने बुराई का रास्ता इस्तिथार किया वह तबाह हुआ । मिसाल के तौरपर कहा गया है कि क्रौमे समूद का नतीजा देख लो, खुदा से सर्कशी और नाफ़रमानी करके कोई बच नहीं सकता ।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ।

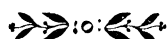
वश्शाम्सि व दुहाहा, (१) वल् क्रमरि इज़ा तलाहा,
(२) वन्नहारि इज़ा जन्लाहा, (३) वन्नलैलि इज़ा यग्शाहा,
(४) वस्समा रेह वमा बनाहा, (५) वल् अदि वमा तहाहा,

(६) व नक्षिंश्चमा सञ्वाहा (७) फ अल्हपहा फुजूरहा
वतक्वाहा, (८) कद् अक्लह मन् जक्काहा (९) व कद्
खाव मन् दस्साहा (१०) कज्जवत् समूदु वित्गवाहा,
(११) इजिम्बअस अश्काहा, (१२) फक्काल लहुम् रसू-
लुल्लाहि नाकतल्लाहि व सुक्याहा, (१३) फकज्जबूहु
फअक्कूहा फदम्दम अलैहिम् रब्बुहुम् धिजिम्बिहिम् फस-
व्वाहा, (१४) वला यखाफु उक्कवाहा (१५)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है ।
कसम है सूरज की ओर उसकी चढ़ता हुई धूप को (१) और
कसम है चांद की जब वह सूरज के पीछे आये (२) और कसम
है दिन की जब सूरज उसे खूब उजाला कर दे (३) और कसम है
रात की जब वह सूरज को ढाँक ले (४) और कसम है आस्मान
की और उसकी जिसने उसे बनाया है (५)
और कसम है ज़मीन की और उसकी जिसने उसे फैलाया है (६)
और कसम है (आदमी को) जान को और उसकी जिसने उसे
ठीक बनाया (७) फिर उसे उसकी बदकारी और परहेज गारी
की समझ देदी (८) कि बेशक वह शख्स मुराद को पहुँच गया
जिसने अपने नफ्स को पाक कर लिया (९) और बेशक वह
शख्स ना मुराद हुवा जिसने उसे धूल में मिला दिया (१०) समूद
(क्रौम) ने अपनी शरारत से (खुदा के पैगम्बर को)
फुटलाया (११) जब कि उनमें का सब से बड़ा बद बख्त
(पैगम्बर की मुखातिफत के लिये) उठ खड़ा हुआ (१२) तो
खुदा के पैगम्बर (सालिह) ने उनसे कहा:—खुदा की (भेजी

हुई) ऊंटनी और उसके पानी पीने की बारी (से खबरदार रहना) (१३) फिर भी उन लोगों ने उस (पैगम्बर) को भुट-ला दिया और ऊंटनी को मार डाला, आखिर उनके पर्वरदिगार ने उनके गुनाह की वजह से उन पर तबाही डाल दी, और उस (बस्ती) को बराबर कर दिया (१४) और वह ऐसे मुजरिमों (की तबाही) के नताने की कुछ परवा नहीं करता (१५)



१५—सूरः लैल

(मक्का में उतरी और इसमें २१ आयतें हैं)

ज़रूरी तररोह

अंधेरी रात, उजियाले दिन, न और मादा की कसम खा कर यानी उनकी हालतों को गवाह बनाकर यह हकीकत समझाई गई है कि जिस तरह इन्सानों के रास्ते और उनके काम जुड़ा जुड़ा हैं, इसी तरह उनके मामले में खुदा के क़ानून भी अलग अलग हैं। जो लोग भले काम करना चाहते हैं खुदा उनके लिये वह काम आसान कर देता है और जो बुरे काम करते हैं उनके लिये उन कामों को आसान बना देता है, दोनों तरह के लोग अपने अपने रास्ते पर चलते हुए अपनी अपनी मंज़िल पर यानी जन्नत और दोज़ख तक पहुँचते हैं।

समाज के ग़रीबों और मुहताजों की मदद पर जगह जगह जोर दिया गया है और माल की बेजा मुहब्बत और इसपर गुरूर करने को बुरा ठहराया गया है। इस सूरः में भी ख़ैरात (दान) की तारीफ़ और कंजूसी की बुराई बयान की गई है। दुनिया और आख़िरत का इस्तिथार खुदा के हाथ में है, नेकी और बदी की जज़ा और सज़ा का बसने जो क़ानून मुक़र्रर कर दिया है उस से कोई बच नहीं सकता।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम् ।

वल्लैलि इज़ा यग्शा (१) वन्नहारि इज़ा तजब्ला
 (२) वमा खलकज़्ज़कर वल्उन्सा (३) इन्न सऽय-
 कुम लशत्ता (४) फअम्मा मन् अऽता वत्तका (५)
 व सदक बिल्हुस्ना (६) फसनयस्सिरूहू लिल् युस्रा
 (७) व अम्मा मम्बखिल वस्तग्ना (८) व कज़्ज़ब
 बिल् हुस्ना (९) फसनयस्सिरूहू लिल् उस्ना (१०)
 वमा युग्नी अन्हू मालुहू इज़ा तग्दा (११) इन्न
 अलैना लल् हुदा (१२) वइन्न लना लल् आखिरत
 वल् ऊला (१३) फअन्ज़तु कुम् नारन् तलज़्ज़ा
 (१४) लायस लाहार इल्लल् अश्कल् (१५) लज़ी
 कज़्ज़ब वतवब्ला (१६) व सयुजन्नबुहल् अत्कल्
 (१७) लज़ी युऽती मालहू यतज़क्का (१८) व
 मा लिअहदिन् इन्दहू मिन् निऽमतिन् तुज्ज़ा (१९)
 इल्लब् तिगाऽअ वज्हि रब्बिहिल् अऽला (२०) वल-
 सौफ़ यर्दा (२१)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है ।

कसम है रात की जब वह छा जाये (१) और कसम है
 दिन की जब वह चमक उठे (२) और कसम है उसकी जिसने
 नर और मादा (दो तरह की मखलूक) पैदा की (३) बेशक

तुम्हारी कोशिश तरह तरह की है (४) सो जिसने (खुदा की राह में अपना माल) दिया और (उसका) डर रक्खा (५) और अच्छी बात (यानी इस्लाम) को सच माना (६) तो हम उसे आराम की राह के लिए आसानी देंगे (७) और जिसने कंजूसी की और बे परवाई बरती (८) और अच्छी बात (यानी इस्लाम) को झुटलाया (९) तो हम उसे तकलीफ की राह के लिये आसानी देंगे (१०) और उसका माल उसे कुछ फायदा न पहुँचायेगा जब वह तबाही (के गड़हे) में गिर पड़ेगा (११) बेशक हमारे ही ज़िम्मा राह बताना है (१२) और बेशक आखिरत और दुनिया (का इखितयार) हमीं को हासिल है (१३) सो मैंने तुमको भड़कती हुई आग से खबरदार कर दिया (१४) उसमें वही जलेगा जो बड़ा बद बरत है (१५) जिसने (हक को) झुटलाया और मुँह फेर लिया (१६) और जो बड़ा परहेज़गार है वह उस आग से दूर ही रक्खा जायेगा (१७) (यानी) वह शरूस जो (गुनाह से) پاک होने के लिये अपना माल (खुदा की राह में) देता है (१८) हालांकि उसके ज़िम्मा किसी का कुछ एहसान नहीं होता जिसका बदला उतारना मक़सूद हो (१९) वह तो सिर्फ अपने आलीशान पर्वरदिगार की रज़ामंदी चाहता है (२०) और वह शरूस जल्द ही (अपने पर्वरदिगार की बख़्शिश से ख़ुश हो जायेगा (२१)



१६—सूरः दुःहा

(मक्के में उतरी और इसमें ११ आयतें हैं)

जरूरी तरीह

यह सूरह हजरत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बारे में है। कुछ दिनों के लिये आप के पास 'वही' यानी खुदा की तरफ से हिदायत का आना बन्द हो गया, इससे आप की तबीअत उदास रहा करता थी आप के दुश्मन भी ताना देने लगे कि आप के खुदा ने आप को छोड़ दिया। यह सूरः इन्हीं तानों के जवाब में उतरी।

दिन रात का आना जाना इस बात का सबूत है कि हालत में हेर फेर जुदरत का एक खास क़ानून है, इसी क़ानून के मुताबिक़ यह बात है कि वही आती थी। फिर रुक गई, रुकने के बाद फिर आयेगी, खुदा ने अपने रसूल के लिये यतीमी की हालत में पर्वरिश का सामान किया वह अपनी क़ौम की ख़ुरी हालत का सुधार करना चाहते थे लेकिन इस का कोई रास्ता दिखाई न देता था तो खुदा ने आप को अपना पैग़म्बर बना कर सारी दुनिया की इस्लाह और भलाई की राह दिखाई। आप के पास माल न था, खुदा ने अपनी मेहबानी से वह कुछ दिया कि उसके आगे बादशाहों की बादशाही की भी कोई हकीक़त न थी। फिर खुदा आप को छोड़ कैसे देगा ? और आप से नाराज़ कैसे हो जायेगा ? आप के शुरू से आप का आख़िर अच्छा है, दूर दूर के मुल्कों और क़ौमों में आप का ज़िक्र पहुँचेगा और आप की तालीम और हिदायत से इस्लाम ख़ूब तरक़्की करेगा और इस के अलावा दुनिया और आख़िरत में खुदा आप को इतना कुछ देगा कि आप ख़ुश हो जायेंगे।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम्

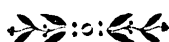
वदुःहा [१] बल्लैलि इज़ा सज़ा [२] मा

वहअक रब्बुकवमा कला [३] वलल् आखिरतु खैरुल्लक
मिनल् ऊला (४) वलसौफ युऽतीक रब्बुक फ़तर्दा (५)
अलम् यजिद्क यतीमन् फ़आवा, (६) व वजदक दा३-
ल्लन् फ़हदा (७) व वजदक आइलन फ़अग़्ना (८)
फ़अम्मल् यतीम फ़ला तक़्हर (९) व अम्मरसाइल
फ़ला तन्हर, (१०) व अम्मा बिनिऽमतिरब्विक फ़हदिस्
(११)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है ।

क्रसम है चढ़ते दिन को [१] और क्रसम है रात की जब
वह अंधेरी हो जाये [२] (कि ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारे पर्वरदिगार
ने न तुमको छोड़ा है और न तुमसे नाराज़ हुआ है [३] और
बेशक आखिरत तुम्हारे लिए दुन्या से बेहतर है [४] और
यक़ीनन जल्द ही तुम्हारा पर्वरदिगार तुम्हें इतना देगा कि तुम
ख़ुश हो जाओगे [५] क्या उसने तुम्हें यतीमी की हालत में
न पाया था (जब कि तुम्हारे लिये कोई ठिकाना न था) फिर उसने
तुमको ठिकाना दिया [६] और (यही नहीं) उसने तुम्हें
भटकता पाया तो तुम्हें राह दिखाई [७] और उसने तुमको
मुहताज पाया तो मालदार कर दिया [८] इसलिये यतीम पर
सस्ती न करना [९] और मांगने वाले को भिड़की न देना
[१०] और अपने पर्वरदिगार के इहसान का चर्चा करते
रहना [११]



१७—सूरः इशिराह.

(मक्का में उतरी और इसमें ८ आयतें हैं)

जरूरी तथीह

इस सूरह में खुदा ने आने रसूत को तस्कीन दी है और फ़र्माया है कि मुश्किलों से घबराना नहीं चाहिये । जुबूवन और पैगम्बरी का हल्म और इक़ान (ज्ञान) ऐसा नहीं जिसकी किसी इन्सानी दिख में समाई हो सके, लेकिन खुदा ने अपने मेहबानों से इसके लिये आप के दिख को खोल दिया । पैगम्बरी की जिम्मादारियों का बोझ आप की पीठ तोढ़े डाल रहा था, इस बोझ को भी अरने फ़ज्र (कृपा) से हल्का कर दिया । इस्लाम फैल रहा है और आपके क़ा के साथ आप का नाम भी ऊंचा होता जा रहा है । इमलिये आप को समझ लेना चाहिये कि कोई मुश्किल नहीं जिसके साथ आसानी न हो, आइन्दा भी खुदा आपकी मुश्किलों को आसान करता रहेगा ।

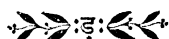
बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम् ।

अलन् नराह् लर सद्दक (१) व वदऽना अन्क
विज्रकल् (२) लजी अरुद ज़हरक (३) व रफऽना
लक जिकरू (४) फइन्न मअल् उस्सि युसन् (५)
इन्न मअल् उस्सि युस्रा (६) फइज़ा फ़गूत् फन्सब्
(७) व इला रन्बिक फ़गूब् । (८)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है ।
(ओ पैगम्बर !) क्या हमने तुम्हारे लिये तुम्हारे साने को खोल

नहीं दिया [१] और हमने तुमसे तुम्हारा (वह) बोझ उतार दिया [२] जिसने तुम्हारी पीठ तोड़ रखी थी [३] और हमने तुम्हारे लिये तुम्हारे जिन्म को ऊँचा कर दिया [४] तो वेशक मुश्किल के साथ आसानी है [५] वेशक मुश्किल के साथ आसानी होती है [६] तो जब तुम (दीन की तब्लीग के काम से) खाली हो तो (इबादत में) मेहनत करो [७] और अपने पर्वरदिगार की तरफ दिल लगाओ [८]



१८—सूर: तीन

(मक्का में उतरी और इस में ८ आयतें हैं)

जरूरी तशरीह

इस सूर: के शुरू में 'तूर' पहाड़, और शहर 'मक्का' के साथ 'इन्जीर' और 'जैतून' की कसम खाई गई है। यह कसम गवाही और सबूत के माना में है। अलिमों ने लिखा है कि इन्जीर और जैतून से मुराद (अभिप्राय) यह दोनों फल नहीं बल्कि वह जगहें हैं जहां के यह दोनों फल अरब में मशहूर थे। मुल्क शाम में दो पहाड़ हैं जिन के पास 'बैतुल् मुकद्दस' या 'यरोश्लम' है, इन्हीं दोनों जगहों में यह दोनों चीजें ज्यादा पैदा होती हैं।

'बैतुल् मुकद्दस' जहां हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) पैदा हुए, और जो 'बनी इस्राईल' के तमाम पैगम्बरों का वतन है, 'तूर' पहाड़ जिस पर हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) को पैगम्बरी और ख़ुदा की किताब 'तौरात' मिली, शहर मक्का जिसमें हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने क़बा बनाया और अपनी औलाद को बसाया, और जिसमें हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पैदा हुए, इन सब

की तारीख़ गवाह है कि खुदा ने इन्सान की बनावट में कैसी कैसी खूबियाँ और सलाहियतें (योग्यताएं) रखी हैं । इन सर ज़मीनों से उठने वाले पाक इन्सानों ने दुनिया में कितनी नेकी फैलाई, इन्सानियत को कितना ऊँचा उठा दिया, कि उनकी तालीम और हिदायत के रौशन चिराग़ों से आज तक दुनिया जगमगा रही है इस रोशनी में चलने वाले कभी बुराई के अंधेरों में नहीं भटक सकते । फिर इन्हीं जगहों में वह लोग भी हुए जो खुदा के इन बुजुर्ग पैग़म्बरों पर ईमान नहीं लाए, उनको झुटलाया, उनकी तालीम और हिदायत के मानने से इन्कार किया, और वह तबाही और बर्बादी के सब से गहरे गड़हे में फँक दिये गये।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम् ।

वत्तीनि वज्रैतूनि (१) व तूरि सीनीन, (२) व हाज़ल् बलदिल अमीनि (३) लक़द् खलक़न् इन्सान फ़ीरअहसनि तक़वीम (४) सुम्म रदद्नाहु अस्फल साफ़िलीन (५) इल्लल्लज़ीन आमनू व अमिलुम् स़ालिहाति फलहुम् अज़रुन् ग़ैरु ममनून् (६) फ़मा युक्ज़िज़बुक् वऽदु बिदीन् (७) अलैमल्लाहु बिअहक़मिल् हाकिमीन् (८)

तजमा

(शुरु) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहज़ान बहुत रहम वाला है ।

क़सम है इंजीर की ओर ज़ैतून की [१] और तूरे सीना (पहाड़) की [२] और इस अमून वाले शहर (मक्का) की [३] कि बेशक़ हमने आदमी को बहुत हसीन साँचे में ढाला है [४] फिर हमने उसे सबसे ज्यादा नीचो हालत की तरफ़ लौटा दिया [५] सिवा उन लोगों के जो ईमान लाये और

नेकियां कीं तो उनके लिये कभी ख़रम न होने वाला सबाब है
[६] तो इस (बात के जानने) के बाद भी (ऐ इंसान !) कौन
सी चीज़ तुम्हें जज़ा और सज़ा के झुठलाने पर आमादा करती है
[७] क्या अल्लाह सब हाकिमों से बढ़ कर हाकिम नहीं है ?
[८]

१६—सूरः अलक़

(मक्का में उतरी और इसमें १९ आयतें हैं)

ज़रूरी तशरीह

हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) रसूल होने से पहले जब आप की उम्र ४० बरस की थी, कुछ दाना और सत्तू लेकर पहाड़ के एक ग़ार (खोह) में जिसका नाम 'हिरा' था चले जाते, वहां प्यासों को पानी पिलाते, भूले भटकों को रास्ता बताते, और अपनी समझ बूझ के मुताबिक़ ख़ुदा की इबादत करते, खाने पीने का सामान ख़त्म हो जाता तो घर आते और सामान लेकर फिर उसी ग़ार में चले जाते, उसी हालत में एक रोज़ ख़ुदा के फ़रिश्ते हज़रत ज़िब्रील आप पर ज़ाहिर हुए और कहा कि ख़ुदा ने आप को अपना रसूल बनाया है और आप के पास यह 'बहो' (आज्ञा) भेजी है। इसके बाद हज़रत ज़िब्रील ने आप को इस सूरह की पहली पांच आयतें 'इकरऽ से 'मालम् यऽलम् तक पढ़ाई'। इन आयतों में आं हज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को बताया गया है कि तुम पढ़ना लिखना नहीं जानते तो क्या हुआ जिसने तुमको अपना रसूल बनाया है वह ख़ुद तुमको सब कुछ पढ़ायेगा और बतायेगा, तुम उस का नाम लेकर पढ़ना शुरू कर दो। इंसान ही क्या था और वह क्या जानता था, ख़ुदा ने उसे जमे हुए खून की फुट्की से बनाया, उसे अन्न और शुज़ूर दिया, क़लम के ज़रीआ लिखने की समझ

ब्रह्म दी, खुदा तुम्हें भी जिब्रील के ज़रीअ़ा रिसालत और पैग़म्बरी की तालीम देगा ।

बाद की आयतों में उन हालतों की तरफ़ इशारा है जिन का रसूल बनने के बाद आं हज़रत को सामना हुआ, । आप ही की कौम आप की दुश्मन बन कर खड़ी हो गई, कौम में बड़े बड़े सर्दार थे, उन में किसी को माल दौलत और जायदाद जागीर का घमण्ड था, किसी को बेटे पोते और नौकर चाकर का, किसी को अपने गरोह और झुल का, उन सब का एक मशविरा घर भी था जिसमें जमा हो कर वह इस्लाम के खिलाफ़ मश्विरे किया करते थे । उन में आं हज़रत का सगा चचा अबू लहब, और रिश्ता का चचा अबू जहल आप की दुश्मनी में सब से आगे थे । आप लोगों को इस्लाम की तरफ़ बुलाते तो अबू लहब आप पर धूल फेंकता, आप को पत्थर से मारता, और आप को झुठलाता, । अबू जहल आं हज़रत को नमाज़ पढ़ते देखता तो आप की हंसी उड़ाता, धमकाता और तकलीफें देता ।

इन्हीं बातों की तरफ़ इशारा करके आगे की आयतों में कहा गया है कि मक्का के सर्दारों का लोगों पर असर है, कितना अच्छा होता कि यह लोग खुद भी नेबी के रास्ते पर चलते और दूसरों को भी उसी रास्ते पर चलाने की कोशिश करते लेकिन यह लोग अपनी बड़ाई के घमण्ड में अपने को तबाह कर रहे हैं ।

आखिर में आं हज़रत को हिदायत की गई है कि यह लोग आप पर जो भी जुल्म करें आप बर्दाश्त करें लेकिन इन की बात कभी न मानें आप खुदा ही के सामने झुकें और उसी की नज़दीकी ढूँढ़ें । आं हज़रत के लिये बड़ी कठिन आजमाइश थी पूरी कौम के मुक़ाबले में खड़ा रहना कोई मामूली बात न थी लेकिन आप खुदा के सच्चे पैग़म्बर थे इस लिये आप मुहत्तों जुल्मों सितम सहते रहे लेकिन खुदा के रास्ते से बाल बराबर न हटे, आखिर में खुदा ने आप को कामयाब

किया । अब जहाँ 'बद्र' की लड़ाई में बद्र जिल्लत के साथ एक मामूली मुसलमान के हाथ से मारा गया और अबूलहब् घर ही पर कुत्ते की मौत मरा ।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम् ।

इक्स् बिस्मि रब्बिकल्लजी खलक् (१) खलकल्
इन्सान मिन् अलक् (२) इक्स् व रब्बुकल् अक्मुल्
(३) लजी अल्लम बिल्कलमि, (४) अल्लमल्
इन्सान मालम् यऽलम् (५) कल्ला इन्नल् इन्सान लयत्
गा (६) अर्रआहुस्तग्ना, (७) इन्नइला रब्बिकर्
ज्जा (८) अरऐतल्लजी यन्हा (९) अब्दन् इजा
सल्ला । (१०) अरऐत इन कान अलल् हुदा (११)
औ अमर बित्तक्वा । (१२) अरऐत इन् कज्जब वत-
वल्ला । (१३)

अलम् यऽलम् बिअन्नल्लाह यरा (१४) कल्ला
लइल्लम् यन्तहि नस्फ़अम् बिन्नासियति, (१५) नासि-
यतिन् काजिबतिन् खातिअह, (१६) फल् यद्इ
नादियह, (१७) सनद् उज्जबानियत (१८) कल्ला,
लातुतिऽहु वसजुद् वक् तरिब् ❀ (१९)

❀ इस आयत को पढ़कर सज्दा करना चाहिये ।

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है ।

(ऐ पैगम्बर !) अपने पर्वरदिगार का नाम लेकर पढ़ो जिसने (सारे जहान को) पैदा किया है (१) जिसने आदमी को खून की फुटकी से पैदा किया है (२) पढ़ो और (जान लो कि) तुम्हारा पर्वरदिगार बड़ा ही करीम है (३) जिसने कलम के जरीआ (लिखना पढ़ना) सिखाया (४) इंसान को वह सब कुछ सिखा दिया जो वह नहीं जानता था (५) हां हां बेशक इंसान (इन्सानियत की) हद से निकल जाता है (६) जब वह अपने को बे पर्वा और गनी पाता है (७) हालांकि (बिल् आखिर) तुम्हारे पर्वरदिगार ही की तरफ (उसे) लौटना है (८) क्या तुमने उस शख्स को देखा जो रोकता है (९) (हमारे) एक बन्दे को जब वह नमाज पढ़ने लगता है (१०) भला तुमने गौर किया कि अगर वह (खुद दीन की) सीधी राह पर होता (११) और (दूसरों को भी अल्लाह से) डरने का हुक्म देता (तो उसके लिए क्या ही अच्छा था) (१२) भला देखो तो कि अगर उसने (हक को) झुटला दिया और उससे मुँह मोड़ लिया (तो अपना कितना नुकसान किया) (१३) क्या वह नहीं जानता कि अल्लाह (उस के कर्तूतों को) देख रहा है (१४) हां हां अगर वह बाज्र न आया तो हम जरूर उसकी पेशानी के बाल पकड़ कर घसीटेंगे (१५) मूठी और खताकार पेशानी (के बाल) (१६) तो उसे चाहिये कि वह अपने मुसाहिबों को बुला ले (१७) हम भी (अपने दोस्तों के) प्यादां को बुलाते हैं (१८) नहीं नहीं (ऐ पैगम्बर !) तुम उस शख्स की बात (हरिज) न मानना, नमाज पढ़ते रहो और खुदा को नज्दीकी चाहते रहो (१९)

२०—सूरः कद्र

(मक्का में उतरी और इसमें ५ आयतें हैं)

जरूरी तशीह

क़र्बान शरीफ़ में एक जगह बताया गया है कि क़र्बान रोज़ा के महीने में उतरा है इस सूरह में है, कि क़र्बान कद्र यानी फ़ैसले की रात में उतारा गया दोनों बातों के मिलाने से साफ़ मालूम होता है कि रोज़े के महीने की एक खास रात में क़र्बान उतरना शुरू हुआ, इस एक रात को हजार महानों से अच्छा कहा गया है ।

क़र्बान शरीफ़ के उतरने से पहले सारी दुनिया में कुफ़्र और शिर्क का दौरा टीरा था, हर तरफ़ बेदानी और गुमराही फैली हुई थी, रूम और ईरान के बादशाह और राजा महाराजा ख़ुदा और ख़ुदा के नाएब बनकर इन्सानों से अपनी पूजा बन्दगी करा रहे थे, अमीर ग़रीब और ऊंच नीच का फ़र्क़, पूरब पच्छिम और आस्मान ज़मीन के फ़र्क़ से भी बढ़ा हुआ था, हिन्दुस्तान में जानवरों तक की पूजा होती थी, वह पाक थे इन्सान अछूत था ।

क़र्बान मज्हबी, समाजी और सियासी इन्क़ि़याब का पैग़ाम था, उसका मक़सद था इन्सान की दुखों को दूर करना, इन्सान को इन्सान की गुलामी और बन्दगी से आज़ादी दिलाना, और ऊंच नीच, छूत छात को मिटाकर इन्सानों में भाईचारा और मुसावात (समता) कायम करना । जिस रात में ऐसी आलीशान (महान) किताब उतरी, जिसने क़ौमों और मुल्कों की किस्मत और इन्सानियत की तारीख़ बदल दी, ज़मीन को उठाकर आस्मान पर पहुँचा दिया, उस रात के एक हजार महीने से बढ़कर होने में किससे शुब्हा हो सकता है ? इन्दीसों में इस रात की जो फ़ज़ीलत (महिमा) बयान हुई है वह इसके मुकाबला है ।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम् ।

इन्ना२ अन्जलुनाहु फी लैलतिल् कद्र, (१) वमार
अद्राक मा लैलतुल् कद्र (२) लैलतुल् कद्रि खैरुम्मिन्
अल्फि शह । (३) तनज्जलुल् मला३इकतु वरूहु
फीहा बिइज्जनि रब्बिहिम् मिन् कुल्लि अमरिन् सलाम् ।
(४) हिय हत्ता मतलइल् फज्र । (५)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है ।

बेशक हमने इस कुर्आन को कद्र की रात में उतारा है (१)
और (ऐ पैगम्बर !) तुमको क्या मालूम कि कद्र की रात क्या
है ? (२) कद्र की रात हजार महीनों से बेहतर है (३) इस
रात में फरिश्ते और रूह (यानी जिवरील) अपने पर्वरदिगार
के हुक्म से तमाम कामों के (इंतजाम) के लिये उतरते हैं
(४) (यह रात पूरी की पूरी) सलामती है, यह सुब्ह निकलने
तक (इसी ख़ैर व बर्कत के साथ) रहती है (५)

—०००—

२२—सूरः बय्यिनः

(मक्के में उतरी और इसमें २० आयतें हैं)

ज़रूरी तर्जिह

कुर्आन शरीफ़ में “अहले किताब” या किताब वाले यहूदियों और
ईसाइयों को कहा गया है, इसलिये कि यहूदियों को खुदा की
किताब तौरात दी गई थी, और ईसाइयों को इन्जील । “मुश्रिकः”

मक्का और अरब के उन लोगों को कहा गया है जा हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के बेटे हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की नस्ल से थे, लेकिन वह हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के सच्चे दीन यानी एक ख़ुदा की इबादत को छोड़ कर ख़ियाला और अपने हाथ से बनाये हुए अनगिनत देवी देवताओं को पूजने लगे थे, यानी पूजा और बन्दगी में ख़ुदा के साथ दूसरों को भी शरीक ठहरा लिया था ।

“काफ़िर” उन लोग को कहा गया है जो हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ख़ुदा का पैग़म्बर और कुर्आन शरीफ़ को ख़ुदा की किताब मानने से इन्कार कर रहे थे, वह किताब वालों में से भी थे और मुश्रिकों में से भी, इसी तरह वह लोग भी मुश्रिक और काफ़िर कहे जा सकते हैं जो इबादत और बन्दगी में दूसरों को ख़ुदा का शरीक ठहराये और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और कुर्आन को न मानें ।

मक्का और अरब के मुश्रिकों के पास तो ख़ुदा की कोई किताब था ही नहीं, वह अपने ख़ियाली और रिवाजी मज़हब पर चल रहे थे और उस पर बड़ी सख़्ती से कायम थे, लेकिन यहूदियों और ईसाइयों के पास भी उन का सच्चा दीन बाक़ी न था, वह बहुत से क्रिस्ती (सम्प्रदायों) में बँट गये थे, और सब ने अपनी अपनी ग़रज़ और पसंद के मुताबिक़ अपने मज़हब में मन गढ़त बातें शामिल कर ली थीं, इसी के साथ वह आपस में लड़ते झगड़ते और एक दूसरे को झुटलाते रहते थे ।

यह यहूदी ईसाई और मुश्रिक अपने बिगड़े हुए और ग़लत मज़हब पर इस तरह जमे हुए थे कि जब तक ख़ुदा का कोई पैग़म्बर न आए और ख़ुदा की तरफ़ से उसके पास कोई किताब न भेजी जाये उनमें से कोई अपने मज़हब से हटने वाला न था, और यहूदियों और

ईसाइयों का तो यह अक्कीदा भी था कि ख़ुदा का एक पैग़म्बर आयेगा, और वही मज़हबी इस्नेलाकां (विभेदों) को मियाएगा । इसी अक्कीदे के मुताबिक वह ख़ुदा की तरफ़ से एक रसूल के आने का इन्तेज़ार भी कर रहे थे । लेकिन जब हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ख़ुदा ने अपना पैग़म्बर बनाया और उनके पास अपनी किताब भेजी तो उन लोगों ने सिर्फ़ इसी वजह से आँ हज़रत पर ईमान लाने और क़र्आन के मानने से इन्कार कर दिया, कि आप उनकी क्रोम से न थे क़ुरैश में पैदा हुए थे हालांकि क़र्आन भा उनी दीन की तालीम देता था जिस की तालीम हज़रत इराहीम, हज़रत मूसा, और हज़रत ईसा (अलैहिमुस्सलाम) ने दी थी, इस तालीम का ख़ुलासा यह था कि दिल की पूरी सच्चाई के साथ सिर्फ़ एक ख़ुदा की इबादत और हुक्म बर्दारी बजा लाओ, नमाज़ कायम करो, जो ख़ुदा के मानने का सबूत है, और ज़कात दो जो ग़रीबों की मदद के लिये ज़रूरी है । यहूदी और ईसाई ख़ूब जानते थे कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ख़ुदा के सच्चे रसूल हैं लेकिन महज़ ज़िद और नफ़सानियत की वजह से वह आप पर ईमान नहीं लाए । कितने बुरे थे वह लोग जिन्होंने ऐसी पाक साफ़ तालीम के मानने से इन्कार कर दिया, और कितने भले थे वह लोग जो इस तालीम को मान कर ख़ुदा के प्यारे हो गये, और ख़ुदा उनका प्यारा हो गया ।

विस्मिल्ला हिरहमा निरहीम्

लम् यकुनिल्लज़ीन कफ़रु मिन् अहलिल् किताबि
बल् मुशिरकीन मुन्फ़कीन हत्ता तातियहुमुल् बय्यिनतु
(१) रसूलुम्मिनल्लाहि यत्लू सुहुफ़्मुतह्हरतन्
(२) फ़ीहा कुतुबुन् कय्यिमः (३) वमा

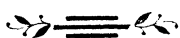
तफ़रक़ल्लज़ीन ऊतुल् किताब इल्ला मिम्बऽदि मा जाश्अत्
हुमुल् बग्यिनः (४) व माश् उमिरूश् इल्ला लियऽबुदुल्ला-
ह मुखलिस्सीन लहुदीन, हुनफ़ाश्अ व युकीमुस्सलात व
यूतुज़्ज़कात व ज़ालिक दीनुल् क़य्यिमः (५) इन्नल्ल-
ज़ीन कफ़रू मिन् अह़लल् किताबि वल् मुशिरकीन
फी नारि जहन्नम ख़ालिदीन फ़ीहा, उलाश्इक हुम् शरूल्
बरीयः (६) इन्नल्लज़ीन आमनू व अमिलुस् स़ालिहाति उला-
श्इक हुम् ख़ैरूल् बरीयः (७) जज़ाश्उहुम् इन्द रब्बिहिम्
जन्नातु अद्निन् तज़री मिन् तह़तिहल् अन्हारु ख़ालि-
दीन फ़ीहार अबदा, रदिय़ल्लाहु अन्हुम् व रदू अन्ह,
ज़ालिक लिमन् ख़शिय रब्बः (८)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत ही रहम वाला है।

किताब वालों (यानी यहूदियों, ईसाइयों) और मुश्रिकों
(मक्का के बुत परस्तों) में से जिन लोगों ने कुफ़ का रास्ता
इस्तेयार कर रक्खा था वह (कुफ़ से) बाज़ आने वाले न थे
जब तक उनके पास खुली हुई दलील न आ जाती [१] (यानी)
अल्लाह की तरफ़ से एक रसूल जो उन्हें पाक वरक़ पढ़ पढ़कर
सुनाता [२] जिनमें पक्की बातें लिखी हुई हों [३] और
जिन लोगों को किताब दी गई थी (यानी यहूदी और ईसाई)
उन्होंने तो इसके बाद ही आपस में फूट डाली जब कि उनके
पास खुली हुई दलील पढ़ चुकी थी [४] हालांकि उनको

सिर्फ यही हुक्म दिया गया था कि वह दीन को अल्लाह के लिए खालिस करके हर तरफ से मुँह मोड़कर उसी की बन्दगी करें और नमाज कायम करें और जकात दें और यही सीधा दीन है [५] बेशक किताब वालों और मुश्रिकों में से जिन लोगों ने कुफ़ किया वह दोज़ख की आग में पड़ेंगे वह हमेशा उसी में रहेंगे, वही लोग तमाम मख़लूक से बुरे हैं [६] बेशक जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये वहा लोग तमाम मख़लूक से अच्छे हैं [७] उनका अच्छा बदला उनके पर्वरदिगार के पास सदा बाँकी रहने वाली जन्नत है जिनके नीचे से नहरें बहती हैं वह लोग सदा उसी में रहेंगे अल्लाह उनसे राज़ी है वह अल्लाह से राज़ी हैं, यह (इन्आम) उसके लिए है जो अपने पर्वरदिगार से डरता है [८]



२२—सूरः जिल्ज़ाल

(नक्के में उतरी और इसमें १५ आयतें हैं)

जरूरी तथीह

बाज़ लोग कहते हैं कि जन्नत और दोज़ख दुनिया ही में हैं, यानी जो जैसा करना है उसका फल उसे दुनिया ही में मिल जाता है, लेकिन यह बात सहीह नहीं है। यह दुनिया हिसाब और बदले की नहीं इम्तेहान और आजमाइश की जगह है, यहां अगर एक शख्स को दौलत और खुशहाली मिलती है तो इस का यह मतलब नहीं है कि वह उसके नेक कामों का इन्आम ही है, न वह इस बात का सबूत है कि वह शख्स जो कुछ करता है वह नेकी का काम है, और खुदा उससे खुश है, क्योंकि एक बुरे आदमी के पास भी यह सब चीज़ें देखी जाती हैं। माल दौलत औलाद, नौकर चाकर, रियासत हुकूमत, और ज़िन्दगी के दूसरे

सामान आदमी को इस लिये दिये जाते हैं कि उनके ज़रीआ उसकी आजमाइश की जाये और देखा जाये कि उसको जिन्दगी का जो सामान और उसे काम में लाने का जो इख्तियार दिया गया है वह उसको कहां तक ठीक तौर पर इस्तेमाल करता है। इसी तरह इन्सान को जिन तकलीफों और मुसीबतों का सामना होता है उनका भी यह मन्सब नहीं होता कि वह उसके बुरे कामों की सज़ा ही हैं, क्योंकि एक अच्छा आदमी भी तकलीफ और मुसीबत में देखा जाता है, यह मुसीबतें कभी तो उस क़ितरी (प्राकृतिक) क़ादूर के मातहत पहुँचती हैं जो दुनिया में काम कर रहा है, और कभी इस्तेहान और आजमाइश के तौर पर मुसीबतें डाली जाती हैं ताकि यह देखा जाये कि यह शख्स मन्चाई के रास्ते पर कायम रहता है या मुसीबतों से घबरा कर उससे हट जाता है, गरज़ यहाँ लोगों की अच्छी और बुरी हालतों को देख कर यह नतीजा निकालना सहीह नहीं कि हर शख्स अपने अच्छे या बुरे अमल का फल पा रहा है। अगर कभी ऐसा देखने में आ जाता है कि एक शख्स ने कोई अच्छा काम किया और उसको उसका अच्छा फल मिल गया या किसी ने कोई बुराई की और उसको उसकी सज़ा मिल गई तो यह बात आम नहीं है, न सबके साथ ऐसा होता है न सब को पूरा पूरा बदला मिलता है, इसके लिये खुदा ने आखिरत का दिन मुक़र्रर किया है जिस दिन इन्सान अपने ज़री ज़री भर अच्छे या बुरे काम और उनके पूरे पूरे नतीजे को देख लेगा।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम् ।

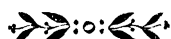
इज़ा ज़लज़िलतिल् अदु ज़िज़्जालहा (१) व
अख़्जर्जतिल् अदु अस्कालहा (२) वक़ालल् इन्सानु
मालहा (३) यौमइज़िन् तुहदिसु अख़्बारहा (४)
बि अन्न रब्बक औहालहा (५) यौमइज़ीं यसूदु-

रुन्नासु अश्तातल् लियुरौ अऽमालहुम (६) फमय्यऽ-
मल् मिस्काळ जर्रतिन् खैरँय्यरः (७) व मय्यऽमल्
मिस्काळ जर्रतिन् शरँय्यरः (८)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है।

जब जमीन अपने भौंचाल से कँप कँपा दी जायेगी [१]
और जब जमीन अपने (अन्दर के) बोझ बाहर निकाल
फेंकेगी [२] और आदमी कहने लगेगा (आज) इस जमीन को
क्या हो गया है ? [३] उस दिन वह अपनी सब खूबों बयान
कर देगी (कि उसके ऊपर बसने वालों ने क्या क्या अऽमाल
किये) [४] क्योंकि तेरे पर्वरदिगार ने उसको यही हुक्म भेजा
होगा [५] उस दिन लोग अलग अलग गरोह होकर निकल
पड़ेंगे, ताकि उन्हें उनके अऽमाल दिखा दिये जायें [६] तो
जिस शरूस ने ज़र्रा भर भी भलाई की होगी वह उसे देख लेगा
[७] और जिस शरूस ने ज़र्रा भर भी बुराई की होगी वह भी
उसे देख लेगा [८]



२३—सूरः आदियात

(मक्के में उतरी और इसमें ११ आयतें हैं)

ज़रूरी तशीह

इन्सान पर खुदा ने कैसे कैसे एहसान किये, उसको सारी चीज़ों से
ज्यादा खूब सूरत बनाया, सब से ज्यादा समझ बूझ दी, सब से ज्यादा
ज़िन्दगी का सामान दिया, सूरज चांद और सितारों तक को उसके

काम पर तगा दिया, लेकिन इन्सान बिना नाशुत्रा और इहारी है, इस का सबूत घोड़े की ज़िन्दगी से मिलता है।

इस सूरह के शुरू में इन्सान की नाशुत्रा और इहारी के सबूत के तौर पर घोड़ों की क्रसम खाई गई है। घोड़े को खुदा ने पैदा किया, वह उसी का पैदा किया हुआ चारा खाता है, इन्सान घोड़े को सिर्फ खिला पिला देता है, घोड़ा इस थोड़े से इन्सान का बदला इस तरह चुकाता है कि इन्सान को अपनी पीठ पर सवार करके इस तेज़ी से दौड़ता है कि हांपने लगता है, पथरीली ज़मीन पर इस तरह टाप मारता हुआ चलता है कि चिंगारियाँ छूटने लगती हैं, सूरह ही सूरह इन्सान की फ़ौज पर धावा करता है और गुबार उड़ाता हुआ उसके बीच में घुस जाता है, मौत से नहीं डरता।

यह तो हैं घोड़े की वफ़ा दारी का हाल, इसके मुक़ाबिल में इन्सान की नाशुत्रा और बे वफ़ाई का हाल यह है कि वह माल की इहबत में पड़ कर खुदा को भूल जाता है और उसके हुक्म की सिर से कोई पर्वा नहीं करता।

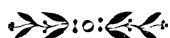
बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वल् आदियाति दब्दन्, (१) फल्मूरियाति कद्-
हन् (२) फल्मुगी राति सुब्दन् (३) फ़असर्न बिही नन्न-
अन् (४) फ़वसत्न बिही जम्अन्, (५) इन्नल् इन्सान
लिरब्बिही लकनूद् (६) व इन्नहू अला जालिक लश-
हीद् (७) व इन्नहू लिहुब्बिल् खैरि लशदीद् (८)
अफ़ला यऽलमु इज़ा बुऽसिर माफ़िल् कुबूरि (९) व
हुस्सिल मा फ़िस्सुदूरि, (१०) इन्न रब्बहुम् बिहिम् यौ-
मइज़िन्तख़बीर (११)

तर्जमा

(शुरू) अब्बाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है ।

कसम है हांपते हुए दौड़ने वाले (घोड़ों) की (१) फिर (पत्थरों पर) टाप मारकर चिंगारियां निकालने वालों की (२) फिर सुब्ह के वक्त (दुश्मनों पर) छापा मारने वालों की (३) फिर उस वक्त (भी अपनी दौड़ से) गर्द उड़ाने वालों की (४) फिर उस वक्त (दुश्मनों की) कौज के बीच घुस पड़ने वालों की (५) कि वेशक इन्सान अपने पर्वरदिगार का बड़ा ही नाशुकरा है (६) और वह इस बात पर खुद हो गवाह है (७) और वेशक वह माल की मुहब्बत में बड़ा ही कट्टर है (८) तो क्या वह (उस वक्त को) नहीं जानता जब वह सब (लोग) उठा दिये जायेंगे जो कब्रों में हैं (९) और (लोगों के) दिलों में जो कुछ (बातें छिपी) हांगी जाहिर कर दी जायेंगी (१०) वेशक उनका पर्वरदिगार उस दिन उनके हाल से पूरी तरह खबरदार होगा (११)



२४—सूरः कारिअः

(मक्का में उतरी और इसमें ११ आयतें हैं)

जरूरी तशरीह

क्रियामत का नक़्श़ा खींच कर बताया गया है कि खुदा के सामने तोल में जिसकी नेकियों का पल्ला भारी हुआ उसके लिये आराम ही आराम है और जिसकी नेकियों का पल्ला हलका हो गया, वह जहन्नम के गड़हे में जा गिरा, उसके दुखों का ठिकाना नहीं । इस लिये इन्सान को चाहिये कि हमेशा नेकी की कोशिश में लगा रहे ।

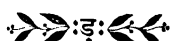
बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ।

अल् कारिअतु (१) मल् कारिअः (२) व मार अ-
द्राक मल् कारिअः (३) यौम यकूनुन्नासु कल् फराशिल्
मब्सूसि (४) व तकूनुल् जिबालु कल् इह् निलमन्फूश
(५) फअम्मा मन् सकुलत् मवाजीनुहू (६) फहुव
फी ईशतिर्रादियः (७) व अम्मा मन् खप्पफत् मवाजी-
नुहू (८) फउम्मुहू हावियः (९) व मार अद्राक माहियः
(१०) नारुन् हामियः (११)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है ।

वह (हर चीज को) खड़खड़ा डालने वाली (१) वह खड़-
खड़ा डालने वाली क्या है ? (२) और तुमको क्या मालूम कि
वह खड़खड़ा डालने वाली क्या है ? (३) (वह क्रियामत है)
जिस दिन सारे इन्सान बिखरे हुए पतंगों जैसे हो जायेंगे (४)
और पहाड़ धुनी हुई रंगीन ऊन की तरह हो जायेंगे (५) सो
(उस दिन) जिस (के नेक अमल) का पल्ला भारी ठहरेगा
(६) वह मन माने ऐश में होगा (७) और जिस (के अमल)
का पल्ला हल्का हो जायेगा (८) तो उसका ठिकाना हावियः
होगा (९) और तुमको क्या मालूम कि वह हावियः क्या चीज
है (१०) वह एक दहकती हुई आग है ? (११)



२५—सूरः तकासुर

(मक्का में उतरी और इसमें = आयतें हैं)

जरूरी तरीह—

क़ुर्आन माल और औलाद को बुरा नहीं ठहराता लेकिन उसके नज़दीक यह सहांह नहीं है कि आदमी माल और औलाद की ज़ियादती ही को अपनी ज़िन्दगी का मज़सद बना ले और उसकी फ़िक्र में ऐसा डूब जाए कि उसको न हक़ का ख़याल रहे न नाहक़ का, और न इस का कि उसकी आख़िरत बन रही है या बर्बाद हो रही है। क़ुर्आन इन्सान को इस हाज़त से ख़बर दार करते हुए कहता है—तुम मौत को भूल कर माल और औलाद के बढ़ाने में इस तरह लगे रहते हो जैसे तुम्हें कभी मरना ही नहीं है, यहा तक कि क़ब्र के किनारे पहुंच जाते हो, अब तुम को पता चलता है कि तुम्हें क्या करना चाहिये था और तुम क्या करते रहे, फिर आख़िरत में जब तुम दोज़ख़ को अपनी आंखों से देख लोगे तो तुम्हें मालूम होगा कि जिस दोज़ख़ को तुम ढकोसला समझते थे वह तो सच मुच सामने पड़क रही है। उस दिन तुम से पूछा जाएगा कि ख़ुदा ने तुम को जो नेमते दी थीं बताओ तुमने उनका क्या हक़ अदा किया ? उनको काम में लाने में तुमने ख़ुदा को मज़ी को कहां तक पूरा किया ?

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम् ।

अल्हाकुमुत्तकासुरु (१) .हत्ता जुतु'मुल् मक्काबिर् (२)
कल्ला सौफ़ तऽलमून (३) सुम्म कल्ला सौफ़ तऽल-
मून (४) कल्ला लौ तऽलमून इन्मल् यकीन् (५)
लतर वुन्नल् जहीम् (६) सुम्म लतरवुन्नहा ऐनल्

यक्कीन (७) सुम्म लतुसअलुन्न यौमइजिन् अ-
न्निई.म् (८)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है ।

(लोगो ! माल और औलाद की) बहुतात की चाह तुमको
गफलत में डाले रखती है (१) यहाँ तक कि (एक दिन) तुम
कब्रों में जा पहुँचते हो (२) (तुम्हारा यह तरीका) हर्गिज
(दुरुस्त) नहीं, तुम बहुत जल्द (कब्र में पहुँचते ही) जान लोगे
(३) फिर (समझ लो कि तुम्हारा यह तरीका) हर्गिज (दुरु-
स्त) नहीं, तुम जल्द ही जान लोगे (४) हां, हां, अगर तुम
इस बात को यक्कीन का जानना जान लेते (तो कभी ऐसा न
करते) (५) तुम जरूर बोज़ख को देख लोगे (६) फिर (हम
कहते हैं) कि तुम उसे जरूर देख लोगे, यक्कीन की आंखों से
(७) फिर उस रोज़ तुमसे (दुनिया की) नेमतों के बारे में जरूर
पूछ होगी (८)

—०००—

२६—सूरः अस्त्र

(मक्का में उतरी और इसमें ३ आयतें हैं)

जरूरी तशरीह

यह सूरः देखने में जितनी छोटी है हिदायत और ताळीम में उतनी
ही बड़ी है । हज़रत इमाम शाफ़िई फ़र्माते हैं कि अगर कुर्आन में कुछ न
होता यही एक सूरः होती तो इन्सान की हिदायत के लिये काफी थी ।

इन्सान की निजात और फ़लाह (कल्याण और मुक्ति) के लिये

चार बातें ज़रूरी ठहराई गई हैं ।

१—खुदा और रसूल पर ईमान

२—वह अच्छे काम करना जिनका खुदा और रसूल ने हुक्म दिया है । और जिनकी अच्छाई से किसी को इन्कार नहीं ।

३—अपनी ही नेक अमली, सच्चाई, और इस्लाम को काफ़ी न समझना बल्कि पूरे समाज को सच्चाई और नेकी की तालीम और हिदायत करते रहना,

४—नेकी और सच्चाई फैलाने में जिन मुसीबतों का सामना हो उसे बर्दाश्त कर के उस काम को जारी रखना और दूसरों को भी इस की हिदायत करते रहना ।

यह कभी न बदलने वाले सच्चे और पक्के उसूल हैं । दुनिया में बेशुमार क़ौमों हो चुकी हैं जो अपने अपने वक्त पर बनी ओर बिगड़ीं ज़माना गवाह है कि सारी क़ौमों के बनाव और बिगाड़ की जड़ में एक ही सच्चाई काम करती रही, किसी क़ौम का जब तक खुदा पर ईमान रहा, वह नेकी और सच्चाई की ज़िन्दगी गुज़ारती रही और दूसरों को भी इसकी हिदायत करती रही, वह सच्ची इन्सानियत अन्न, और सलामती का नमूना रही, । और जब वह भलाई के रास्ते से हट कर बुराई के रास्ते पर पड़ गई तो धारे धारे तबाही के गड़हे में जा गिरा । आज दुनिया की तमाम बड़ी बड़ी क़ौमों का क्या हाल है ? उनका खुदा पर ईमान नहीं रहा तो उनकी ऊपरी बातें तो बड़ी पाक और पवित्र होती हैं लेकिन काम देखिये तो बिल्कुल शैतानों की तरह-दिन रात दूसरी क़ौमों को गुलाम बनाने और उनको लूटने के मन्सूबे बनाती रहती हैं । इस का नतीजा यह है कि इन्सानियत मिट चुकी है और दुनिया तबाही के गड़हे के किनारे खड़ी है ।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम् ।

बल् अस्मि (१) इन्नल् इन्सान लफी ख़ुस्रिन्

(२) इल्लल्लज़ीन आमनू व अमिलुस्सालिहाति
वतवासौ बिल्हक्कि वतवासौ बिस्सत्र (३)

तजमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहवान बहुत रहम वाला है।

कसम है ज़माना की (१) कि वेशक आदमी घाटे में है
(२) अगर वह लोग (घाटे में नहीं) जो ईमान लाये और
अच्छे काम किये और एक दूसरे का हक़ की ताकीद करते रहे
और एक दूसरे को सत्र की ताकीद करते रहे (३)



२७—सूरः हुमज़ः

(मक्के में उतरी और इसमें ६ आयतें हैं)

ज़रूरी तशरीह

कुर्आन अफ़्लाक़ (नैतिकता) का सब से बड़ा मुअल्लिम और
मुस्लेह (शिक्षक और सुधारक) है। जितनी चीज़ें इंसानी अफ़्लाक़ को
बर्बाद करने वाली हैं उन पर कुर्आन बराबर नज़र रखता है और पहलू
बदल बदल कर बार बार उन पर चोट लगाता रहता है। इन्सानी
फ़ितरत की यह बड़ी कमज़ोरी है कि वह माल की हद से ज्यादा मुहब्बत
करता है और उसे सीने से लगाये रहना चाहता है। कुर्आन कहता है
कि माल का सब से बड़ा मक्सद यह है कि उससे अपनी भी जायज़
ज़रूरतें पूरी की जायें और ग़रीबों और नेक कामों की भी मदद की
जाये, लेकिन जिन लोगों के दिल में खुदा का डर और आख़िरत का
ख़य़फ़ा नहीं होता वह ग़रीबों का हक़ मार कर और बेईमानी से दौलत
कम कर मालदार बन जाते हैं और समझते यह हैं कि उन से बढ़ कर

कोई शरीफ और इज्जत दार इन्सान नहीं । वह इस धोके में पड़ जाते हैं कि उनको कभी मरना नहीं है, वह इसी तरह ग़रीबों का खून चूसते और हमेशा जीते रहेंगे ।

ऐसे लोगों की नज़रों में खुदा से डरने वाले और ईमान दार आदमियों की कोई क्रूर और इज्जत नहीं होनी, वह उन के मुंह पर उनकी ग़रीबी और बेइज्जती के ताने देने हैं क्यों कि उनको इसकी पर्वा नहीं होती कि उनका दिल दुखेगा और जब अपने जी दुर्ज़रियों की मज्लिस जमा कर बैठते हैं तो पीठ पीछे भी नेकी की ज़िन्दगी गुज़रने वाले ग़रीब लोगों को बुरा भला कहते हैं ।

इस तरह के लोग इस्लाम के शुरू में मक्के में भी थे और हर ज़माने में हर जगह होते हैं । ऐसे दौलत मन्दों के दिल इ सानी हमदर्दी और नेकी से बिल्कुल खाली होते हैं, इस लिये उनको जो अज़ाब दिया जाएगा उसका सीधा हमला खास तौर पर उमके दिल ही पर होगा । दुनिया में यह ग़रीबों का दिल जलाते रहते हैं आखिरत का अज़ाब इन का दिल जलाएगा ।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम् ।

वैलुल्लि कुल्लि हुमज़तिल्लुमज़ति (१) निलल्जी
जमअ मालौ व अद्दहू (२) यह सबु अन्न मालहू
अख़्लदः (३) कल्ला ल युम्बजन्न फ़िल् हुतमति
(४) वमा २ अद्राक मल् हुतमः (५) नारुल्लाहिल्
मूक़दतुल् (६) लती तत्तलिउ अलल् अफ़्दः (७)
इन्नहा अलैहिम् मुऽसदतुन् (८) फ़ी अमदिम् मुमद्दः
(९)

तजमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है।

खराबी है हर उस शख्स के लिये जो मुंह पर ताना देता और पीठ पीछे ऐब निकालता है (१) जिसने माल इकट्ठा किया और उसे गिन गिन कर रक्खा (२) वह समझता है कि उसका माल उसे (दुनिया में) हमेशा ज़िन्दा रखेगा (३) हर्गिज़ नहीं, वह शख्स ज़रूर रौंद डालने वाली (आग) में फेंक दिया जायेगा (४) और तुमको क्या मालूम कि वह रौंद डालने वाली (आग) क्या है ? (५) वह अल्लाह की जलाई हुई आग है (६) जो (बदन से लगते ही) दिलों तक चढ़ जाती है (७) और वह आग उन पर (इस तरह) बन्द कर दी जाएगी (८) कि वह उस के लम्बे लम्बे खम्बों में घिरे हुए होंगे (९)



२८—सूरः फील

(मक्का में उत्तरी और इसमें ५ आयतें हैं)

ज़रूरी तररीह

मक्का की जिस कौम से हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) थे उसका नाम कुरैश था। यही कौम काबा शरीफ़ की मुतबल्ली (प्रबंधक) थी। इस लिये सारे अरब में इज़्ज़त और एहतेराम की नज़र से देखी जाती थी ख़ुदा ने इस सूरह में एक वाक़ेआ की तरफ़ इशारा कर के कुरैश को अपने एक खास एहसान की तरफ़ ध्यान दिखाया है।

वाक़ेआ यह है कि हबशा के बादशाह की तरफ़ से यमन में जो अरब का हिस्सा है अब्रहा अभ्रम गवर्नर था। वह धीरे २ यमन का खुद मुक़्तार हाकिम बन गया, इस तरह उसको असर और इत्तिदाद

(प्रभावभौरसत्ता) कीचाटपड़ गई, उसने चाहा किअपनेपायएतख्त (राज-धानी) “सुनआ” में एक खूब सूरत और शानदार गिर्जा बनवाए और ऐसी कोशिश करे कि अरब के लोग काबा की ज़ियारत के लिये मक्का जाने की जगह ‘सुनआ’ आय करें और काबा की जगह उसको ज़ियारत किया करें, ताकि अरब में मक्का और काबा को जो इज्जत हासिल है वह सुनआ औरउसके गिर्जा को हासिलहो जाए। इसगरज़ से अब्रहा ने सुनआ में क़लीस के नाम से एक गिर्जा बनवाया लेकिन काबा को खुदा के एक बहुत बड़े पैग़म्बर हज़रत इब्राहीम ने बनाया था और मक्का को अपनी औलाद से बसाया था खुदा ने खुद काबा को सारी दुनिया के लिये मज्हबी मर्कज़ (धार्मिक केन्द्र) बनाने का फ़ैसला कर दिया था, और मक्का में खुदा के आखिरी रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पैदा होने वाले थे, इस लिये अब्रहा अपने इरादे में कैसे कामयाब हो सकता था ?

अब्रहा की तबाही की सूरत यह पैदा हुई कि मक्का का कोई रहने वाला सुनआ गया और उससे क़लीस को कुछ नुत्रसान पहुंच गया। अब्रहा को हीला मिल गया और उसने काबा को ढाने के लिये मक्का पर चढ़ाई कर दी। उसकी फ़ौज में बड़े बड़े तेरह हाथी थे जो उस ज़माने की लड़ाई के सामान में बहुत खास चीज़ समझे जाते थे।

अभी अब्रहा की फ़ौज मक्का से कुछ दूर ही पर एक मैदान में थी कि छोटी २ चिड़ियों के गोल समुन्दर की तरफ़ से आए और अब्रहा की फ़ौजपरछा गए। हरचिड़ियाकी चोंच और उसके पंजों मेंछोटी २ कंकरियां थीं, इन चिड़ियों ने अब्रहा की फ़ौज पर कंकरियों की गोलियां बरसानी शुरू कीं। इन कंकरियों में ऐसा असर था कि आदमी या जानवर जिस के बदन पर गिरतीं आर पार हो जातीं और घाव में एक ज़हर पैदा हो जाता। इस तरह अब्रहा की पूरी फ़ौज तबाह हो गई, जो सिपाही या

जानवर करियों की चोट खा कर भागे वह भी मर गए।

यह वाक्किआ ५७० ई० में हुवा; उसके ५० दिनों के बाद हज़रत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पैदा हुए, हज़ूर के वक्त में ऐसे बहुत से लोग ज़िन्दा थे जिन्होंने अपनी आँखों से यह वाक्किआ देखा था।

इस वाक्किआ को बयान करने के दो पहलू हो सकते हैं, एक पहलू तो यह कि इस वाक्किआ को याद दिला कर मक्का के लोगों को झिड़का गया है कि जिस खुदा ने तुम पर यह एहसान किया कि तुम अब्रहाम का मुकामला न कर सकते थे उसने अपनी क्रुद्धत से उनको बर्बाद कर दिया उसकी इबादत और बन्दगी छोड़ कर तुम अपने हाथ से गढ़े हुए देवी देवताओं को क्यों पूजते हो ? और खुदा के पैगम्बर और उनके साथ मुसलमानों को काबा में खुदा की इबादत क्यों नहीं करते ? हालांकि वह इसी के लिये बनाया गया है।

और दूसरा पहलू इस वाक्किआ के बयान करने का यह है कि हज़रत मुहम्मद (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को तसल्ली दी गई है कि जिस तरह मक्का के लोग कमज़ोर और बेसरोसामान थे, खुदा ने काबा की हिफ़ाज़त की इसी तरह कमज़ारी और बेसरोसामानी के बावजूद तुम्हारी भी हिफ़ाज़त करेगा।

मक्का में जब आं हज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और मुसलमानों पर दुश्मनों की तरफ़ से बड़े बड़े जुल्म हो रहे थे और देखने में हिफ़ाज़त और कामयाबी की कोई सूरत मौजूद न थी खुदा की तरफ़ से उनको तसल्ली दी जाती थी और कामयाबी की उम्मीद दिलाई जाती थी। क़ुरआन शरीफ़ में ऐसी बातें बहुत आई हैं जो मदीने पहुँचने पर सब पूरी हो गईं। शौर करने वालों के लिये यह क़ुरआन के खुदाई किताब और इस्लाम के खुदाई दीन होने का एक बहुत बड़ा सुबूत है।

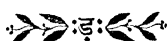
बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम् ।

अलम् तर कैफ़ फ़अल रब्बुक बिअस्हाबिल फ़ील
 (१) अलम् यजूअल् कैदहुम् फी तदलीलिव (१)
 व अर्सल अलैहिम् तैरन् अबाबील (२) तर्मीहिम्
 बिहिजारतिम् मिन् सिज्जीलिन् (४) फ़जअलहुम्
 कअसफ़म्माकूल (५)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है ।

(ऐ पैगम्बर !) क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे पर्वरदिगार
 ने हाथी वालों के साथ (जो काबा को ढाने आये थे) कैसा
 मुलूक किया ! (१) क्या उसने उनके दांव को गलत नहीं कर
 दिया ? (२) और उन पर झुण्ड के झुण्ड परिन्द भेजे (३)
 जो उन पर कंकरीले पत्थर फेंकते थे (४) सो खूदा ने उनको
 (जानवरों के) खाये हुवे भूसे की तरह कर डाला (५) ।



२६—सूरः कुरैश

(मक्का में उतरी और इस में ४ आयतें हैं)

ज़रूरी तशरीह

मक्का में गल्ला और ज़रूरत की दूसरी चीज़ें पैदा नहीं होती थीं
 इसलिये कुरैश को बाहर जाना पड़ता था । यमन गर्म मुल्क था और
 लम (सीरिया) ठण्डा, इसलिये कुरैश जाड़े में यमन जाते और गर्मियों
 में लाम का सफ़र करते, अपने मुबक की पैदावार खजूर और चमड़ा

इन मुल्कों में ले जाते और अपनी ज़रूरत की चीज़ें वहां से ले आते ।

अरब में हमेशा चारों तरफ़ कूट मार होती रहती थी, जो लोग सफ़र करते कूट लिये जाते, डाकुओं के जत्थे बस्तियों को भी कूट लेते लेकिन क़ुरैश काबा के मृतवल्ली (प्रबन्धक) थे, इसलिये न कोई सफ़र में इनको नुक़सान पहुंचाता और न मक्के पर हमला करता ।

क़ुरैश ख़ुदा के इन एहसानों को भुला कर दूसरी दूसरी चीज़ों की इबादत और बन्दगी कर रहे थे, और ख़ुदा के रसूल को जो उनको ख़ुदा की इबादत और बन्दगी की हिदायत कर रहे थे सता रहे थे । ख़ुदा ने इस सूरः में क़ुरैश को याद दिलाया है कि तुम्हारे वतन में खाने को न था, ख़ुदा ने तुम्हारे दिलों में तिजारती सफ़र की रग़बत (इच्छा) पैदा कर दी, तुम्हारे सफ़र के रास्ते कूटमार के डर से भरे हुए थे, इस डर से ख़ुदा ने तुम्हें अमन दे दिया । अब्रह्म के हमले से तुम्हारे शहर को बचा लिया । यह सब कुछ इस काबे की बर्क़त से हुआ तो तुम्हें चाहिये कि तुम झूठे ख़ुदाओं की पूजा बन्दगी छोड़कर इस घर के ख़ुदा की जो सारे जहान का पर्वरदिगार है इबादत और बन्दगी करो और उसके रसूल की दुश्मनी से बाज़ आ जाओ ।

विस्मिल्लाहिररहमानिररहीम्

लिईलाफ़ि क़ुरैशिन् (१) ईलाफ़िहिम् रिह्-
लतश्शिताइइ वस्सैफ़् (२) फ़ल् यऽबुदू रब्ब हाज़ल्
बैतिल् (३) लज़ी अत्अमहुम् मिन् जूइ'व्व आमन
हुम् मिन् ख़ौफ़् (४)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है ।

चूँकि (ख़ुदा ने) क़ुरैश को रग़बत दिलाई (१) (यानी)

उनको रगवत दिलाई जाड़े और गर्मी के (तिवारती) सफर की (२) तो उन्हें चाहिये कि वह इस घर (काबा) के पर्वरादिगार ही की इबादत करें (३) जिसने उनको भूक में खाने को दिया और उन्हें खोफ से अन्न बरखा (४)



३०—सूरः माऊन

(मक्का में उतरी और इसमें ७ आयत हैं)

ज़र्रा तशरीह

क्रियामत का अक़ीदा नेकी और भलाई का सर चश्मा (खोत) है । इसी लिये क़र्आन ने बार बार इस अक़ीदे पर जोर दिया है । जो आदमी क्रियामत पर यक़ीन नहीं रखता वह बड़ा मलबूबी और दिल का सफ़ल होता है । यतीमों से हम्ददी करने की जगह उसे धुत्कार देता है, मुहजार्जों को न ख़ुद खिळाता है न दूसरों को इसके लिये उभारता है, जैसे उसके दिल में इन्सानो हम्ददी के लिये कोई जगह ही नहीं, इसी तरह उन लोगों का हाल भी अफ़सोस के लायक़ है जो आखिरत पर सच्चा यक़ीन न रखने ही की वजह से नमाज़ की तरफ़ से बे पर्वाई करते हैं, वक्त बे वक्त उल्टी सोधी नमाज़ पढ़ लेते हैं, वह भी ख़ुदा के लिये नहीं दिखावे के लिये, इसी तरह उनका जो काम भी होता है दिखावे ही के लिये होता है ।

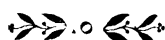
उनकी तंग दिखी और ख़ुद गर्जी का हाल यह होता है कि पास पड़ोस के लोगों को ऐसी छोटी मोटी चीज़ें भी मंगनी नहीं देते जिन के लेने देने का आम रिवाज़ है, एक शख्स अपने को मुसलमान कहता है और नमाज़ भी पढ़ता है लेकिन ख़ुदा के साथ इख़लास और मख़्लूक से हम्ददी नहीं रखता तो वह इस्लाम के दावा में सच्चा नहीं, यह दिखावे की इबादत और मख़्लूक के साथ कज़ूसी तो उन लोगों का तरीका है जो इस्लाम और क्रियामत पर यक़ीन नहीं रखते ।

विस्मिल्लाहिरहमानिर्हीम ।

अरऐतन्नलजी युकाज़िब् बिदीन् (१) फजालि-
कन्नलजी यदुऽ. उल्पीतीम (२) वला यहूद उला
तआमिल् मिम्कीन् (३) फदैल्लिल मुसल्लीनल्
(४) लजीन हुम अन् सलातिहिम् साहूनल् (५)
लजीन हुम एराउएन (६) व यमनएनल् माउन्
(७)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है ।
(१) पैगम्बर ।) क्या तुमने उस शरस को देखा जो
(क्रियामत की जज़ा व सज़ा को भुनकाता है । १ तो (देखो)
यही वह शरस है जो यतम को धक्के देता है (२) और (आप
तो आप दृस्नों को भी मुहताज वे खाना खिलाने पर नहीं उभा-
रता (३) सो, खराबी है उन नमाज़ियों की (४) जो अपनी
नमाज़ों से शान्कल हैं (५) और जो अपनी नमाज़ों का)
दिखावा करते हैं (६) और ज़रूरत की मामूली चीज़ें भी मांगे
से नहीं देते (७)



१—सूरः कौसर

(मक्के से उतरी और इसमें ३ आयेंतें हैं)

ज़रूरी तशरीह

इस सूरह का अल्लुफ़ हज़रत पैगम्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)
से है । इसमें 'कौसर' और 'अन्तर' दो लफ़्ज़ ऐसे हैं जिन का मख़लूब

पहले समझ लेना ज़रूरी है ।

१—कौसर के म॰ऽनी खैरे कसीर यानी बहुत ज्यादा भलाई और बहुत ज्यादा खैर व बरकत के हैं । कौसर से मुराद (तात्पर्य) क्या है ? इसके बारे में उलमा ने बहुत सी बातें लिखी हैं, उनमें से कुछ यह हैं—क़र्बान शरीफ़, शरीअत, क॰ऽबा शरीफ़, आँदज़रत (सल्लाहु अलैहि वसल्लम) की अज़मन और बुज़ुर्गी, आप के ज़िन्दे मुबारक की शुहरत और बलन्दी, आप को उम्मत (अनुयाइयों) की इयादती, इस्लाम का सारी दुनिया में फैलना और बाक़ी रहना, जन्नत की एक महर या हौज़, जिस का नाम हदीसों में कौसर आया है ।

२—अवतर ऐसी चीज़ को कहते हैं जिसका पीछा न हो, या ऐसे जानवर को जिसकी दुम कटी हुई हो, या ऐसे शरूस को जो अपने गरोह और अपने मदद गाँों से कट कर अलग हो जाये, या ऐसे शरूस को जिस की कोई ओलाद न हो कि उसके बाद उसका नाम चले ।

रवायतों में आया है कि हज़रत पैग़म्बर (सल्लाहु अलैहि वसल्लम) का कोई बेटा ज़िन्दा नहीं रहा, जो बेटे पैदा हुए वह इन्ते-क़ाल कर गये । इस पर आँ हज़रत के दुश्मनों ने आप को त॰ऽना दिया और कहा कि आर अवतर हैं आप के बाद आप का कोई बेटा नहीं है जिससे आप की नस्ल चले और आप का नाम बाक़ी रहे ।

रवायतो में ज़िक्र है कि एक और मौक़॰ पर दुश्मनों ने आप को यही कह कर त॰ऽना दिया और कहा कि आप अवतर हैं । मदीने के यहूदियों का सदीर और मज़हबी पे़श्वा क॰ऽब बिन अशरफ़ एक बार मक्के आया । उस ज़माने में आँ हज़रत मक्का से मदीना जा चुके थे, और वहाँ क॰ यहूदी भी आप से दुश्मनो रखते थे । मक्का वालों ने क॰ऽब बिन अशरफ़ से आँ हज़रत के बारे में सवाल किया कि वह मक्का से जिसमें क॰ऽबा है मदीने चले गये, और क॰ऽबा की वजह से हम लोगों को जो इज़्ज़त और बढ़ाई हासिल है हमसे उनका सिक़सिला कट गया, तो

वह हम से अच्छे ठहरे या उनसे अच्छे हम ?—यह सवाल करते हुए मक्का वालों ने आँ हज़रत के लिये अब्तर का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया । कऽब बिन अदरफ़ आँ हज़रत का दुश्मन तो था ही उसने मक्का वालों को जवाब दिया कि तुम ही अच्छे हो ।

दुश्मनों के इन्हीं तऽनों के जवाब में सूरह कौसर उतरी, खुदा ने आँ हज़रत को तसल्ली दी और फ़र्माया कि ऐ पैग़म्बर ! हम ने तुम को कौसर यानी बहुत बहुत भलाई और ख़ैर व बरका दी, तुम्हें क़ुर्आन जैसी ज़िन्दा किताब दी, जो हमेशा बाकी रहेगी, इस्लाम जैसा दीन दिया जो सारी दुनिया में फैल जायेगा, और रहती दुनिया तक बाकी रहेगा । तुम को ऐसी उम्मत (अनुयायियों की जमाअत) दी जिस में दुनिया भर के मुल्कों और क़ौमों के लोग शामिल होंगे और उनके ज़रीआ सारी दुनिया में इज्ज़त के साथ तुम्हारा ज़िक्र किया जायेगा, और तुम्हारी के साथ तुम्हारा नाम पुकारा जायेगा, वह कऽबा भी जल्द ही तुम्हारे इस्तिनयार में आ जायेगा जिस पर तुम्हारे दुश्मनों को घमण्ड है, अब्तर तुम कैसे हो ? अब्तर तुम्हारे वही दुश्मन हैं जो तुम को अब्तर कहते हैं ।

ख़ुदा ने इस सूरह में अपने पैग़म्बर के बारे में जो कुछ फ़र्माया था कुछ साल बाद वही हुआ, जिन दुश्मनों ने तऽना दिया था वह मर मिट गये उनकी औलाद मुसलमान हो गई, मक्का फ़तह हो गया, कऽबा का इन्तेज़ाम आँ हज़रत के सहाबा के हाथ में आ गया । इस्लाम सारी दुनिया में फैल गया, क़ुर्आन आज तक बाकी है, हर मस्जिद में अल्लाह के नाम के साथ उसके रसूल का नाम भी पुकारा जाता है, आप को अब्तर कहने वालों का नाम लेना कोई नहीं, वह खुद अब्तर हो गए ।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम्

इन्नार् अऽतैना कल् कौसर् (१) फ़सल्लि लि
रब्बिक वन्हर् (२) इन्न शानिअक हुवल अब्तर (३)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेह्रवान बहुत रहम वाला है ।

(हे पैगम्बर !) वेशक हमने तुमको वे इन्तेहा खैर व बर्कत अता का है (१) सो इसक शुक्रिया में अपने खालिये नमाज पढ़ा और क़ुर्बाना करा (२) वेशक जो तुम्हारा दुश्मन है वही वे नस्त (यानि वे नामो निशान और हर भलाई से महरूम) है (३)



३२—सूरः काफ़रून

(मक्का में उतरी और इसमें ६ आयतें हैं)

ज़रूरी तशीह

मक्का में हज़रत रयूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को इस्लाम की तरफ़ बुलाते हुए दस वरस से ऊपर हो चुके थे वहां के लोग मुसलमानों को और खुद आँ हज़रत को हद से ज्यादा मना रहे थे, बहुत से सल्मान मक्का छोड़कर हयशा (अबामीनिया) चले गए थे, जो मुसल्मान रह गए थे वह ज़ालम सहें बग़ैर आज़ादी से अपना मज्हबी क़र्ज़ अदा नहीं कर सकते थे । अब आँ हज़रत को खुदा का हुक्म होने ही वाला था कि आप मुसलमानों को लेकर मक्के की मदीने चले जाएं, ऐसे नाज़क ज़माने में यह सूरः उतरी ।

यह एक छोटी सी सूरः है और थोड़े से अल्फ़ाज़ हैं जो हेर फेर के साथ आए हैं लेकिन इस्लाम की यह सबसे बड़ी और सबसे सच्ची बात पूरी सफ़ाई के साथ दो टूक कह दी गई है कि हालात चाहे कैसे ही नाज़क और मुश्किल हों, इस्लाम किसी ऐसे मज्हब के साथ एक क़दम भी नहीं चल सकता जिसमें खुदा के सिवा किसी और की भी

पूजा बन्दगी होती हो ऐसे मजहब से इस्लाम का रास्ता बिल्कुल अलग है ।

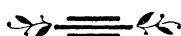
बिस्मिल्लाहिर्रह्मानर्रहीम् ।

कुल या२ अय्युहल् काफिरून (१) ला२ अऽबुदू
मा नऽबुदून (२) वला२ अन्तुम् आबिदून मा२ अऽबुदू
(३) वला२ अना आबिदुम् मा अयत्तुम् (४) य२ अन्तुम्
आबिदून मा२ अऽबुद् (५) लकुम् दीरु कुम् वलिय
दीन् (६)

तजेमा

(शुरू। अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहवान बहुत रहम वाला है।

(ऐ पैगम्बर !) कह दो कि ऐ कुफ़र करने वालो ! (१)
मैं उनका पूजा नहीं करता जिनकी तुम पूजा करते हो (२) और
न तुम उसका इबादत करने वात हो जिसकी मैं इबादत करता
हूँ ३ और न मैं उन चीजों को पूजूंगा जिनको तुम पूजते हो
(४) और न तुम उनकी इबादत करागे जिसकी मैं इबादत
करता हूँ (५) तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन है और मेरे लिये
मेरा दीन (दीन में हम तुम एक नहीं हो सकते) (६)



३३—सूरः नस्र

(मक्के में उतरी और इसमें ३ आयत हैं)

जरूरी तशीह

यह सूरह हज़रत पैगम्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बारे
में है, यह आप की वफ़ात (स्वर्गवास) से कुछ महीने पहले उतरी ।

इस छोटी सी सूरह से आं हज़रत की नुबूत और पैगम्बरी और इस्लाम की दावत व तब्लीग (निमंत्रण और प्रचार) की पूरी तारीख लिपटी हुई है ।

सूरः अलक की तशरीह में बताया जा चुका है कि जब ख़ुदा ने आं हज़रत को अपना रसूल बनाया और आपने इस्लाम की दावत व तब्लीग का काम शुरू किया तो आपकी कौम आप की दुश्मन हो गई । यह कौम काबा की मुतवल्ली (पबन्धक) और हज का इन्तेज़ाम करने वाली थी, इसलिये उसके साथ सारा मुल्क आरका दुश्मन हो गया गिने चुने आदमी आप पर ईमान लाए, जो बड़े दिल गुर्दे वाला होता वही इस्लाम कबूल करता था, क्योंकि मुसल्मान होना सारी कौम के ज़ुल्मो सितम का निशाना बनना था ।

क़स्बा इसीलिये बनाया गया था कि उसमें एक ख़ुदा की इबादत की जाये, लेकिन उसमें तीन सौ साठ पुतों (मूर्तियों) की पूजा होती थी, और जो मुसल्मान उसमें एक ख़ुदा का नाम पुकारता या उसकी इबादत करता वह इतना पीटा जाता कि उसकी जान पर बन जाती, ख़ुद आं हज़रत उसमें आज्ञादी से नमाज़ न पढ़ सकते थे, कभी कोई बदमाश आप पर ऊट की ओझड़ी डाल देता, कभी कोई शरारती आप के गले में मोटी चार डाल कर इस तरह पेंठता कि आप का दम घुटने लगता, मुसल्मान मर्दों और औरतों की एक जमा-अत इसलिये मक्का छोड़कर हब्शा चली गई कि वह मक्का में आज्ञादी से इस्लाम पर अमल न कर सकती थी, जो मुसल्मान मक्का में रह गये थे उनका और आं हज़रत का बाईकाट कर दिया गया, आपको तीन साल तक मुसल्मानों के साथ नज़र बन्दों की तरह एक पहाड़ की घाटी में गुज़ारना पड़ा ।

जब आप मक्का वालों से नाउम्मीद हो गये तो उस इलाके के दूसरे बड़े शहर 'ताएफ़' गये, और वहां के रहसों को इस्लाम की

दावत दी और उनसे मदद चाही, उन्होंने आप के साथ बहुत बुरे सुझाव किये, गुण्डों और बद मआशों को मुकर्रर कर दिया, जिन्होंने आप की फवती उड़ाई, और पथराव करके आपको लुट्टा लहान कर दिया। आप वहां से मक्का चले आये। इतना होने पर भी आप अपना काम करते ही रहे, अरब में जहां सालाना मेले लगते और हज के दिनों में जब सारे अरब के लोग मक्का आते, आप उनको इस्लाम की दावत देते, अबू जहल और अबू लहब वगैरह लोगों को बहकाते, कहते—“लोगो ! इस शास्त्र की बात न मानना, यह अपने बाप दादा के दीन से फिर गया है,” और आपको ढेले पत्थर भी मारते।

एक साल हज के मौका पर मदीना के कुछ लोगों को आप ने इस्लाम की दावत दी और वह मुसल्मान हो गए। दूसरे साल मदीना के कुछ और लोग भी हज को आये, और मुसल्मान हुए। मक्का के लोगों का जुल्म बढ़ता ही जा रहा था, मदीने के लोगों से बात चीत हुई, और यह तय हो गया कि आँ हज़रत मुसल्मानों को लेकर मदीना चले जायें, खुदा की भी यही मर्ज़ी थी। तेरह बरस की लम्बी मुद्दत तक मक्का वालों को समझाने और उनके हाथ से हर तरह की मुसीबतें उठाने के बाद आप मक्का से मदीना चले गये, इसी को हिज़रत कहते हैं, यानी दीन की की राह में वतन छोड़ कर दूसरी जगह चले जाना।

मदीना में पूरी एक कौम इस्लाम की मदद के लिये मिल गई, जो ‘अन्सार’ यानी इस्लाम की मददगार कहलाई। मक्के के लोगों ने मदीना पर चढ़ाई की, मुसल्मानों को भी खुदा की तरफ़ से मुकाबले और हिफ़ाज़त की इजाज़त मिल चुकी थी, ‘बद्र’ नामी मकाम पर मुसल्मानों में और मक्का के लोगों में जंग हुई, मुसल्मानों की तादाद भी कम थी और उनके पास लड़ाई और रसद का सामान भी पूरा न था, फिर भी खुदा की तरफ़ से मदद का जो वादा होता आ रहा था वह पूरा हुवा, मक्का के बहुत से लोग मारे गए, और गिरफ़्तार हुए,

मरने और गिरफ्तार होने वालों में बड़े बड़े सदाँर भी थे, अब जहल भी इसी लड़ाई में मारा गया। दूसरे साल फिर मुसलमानों और मक्का वालों में एक डी लड़ाई हुई जो 'उहुद' की लड़ाई के नाम से मशहूर है। हिज्रत के पाँचवें साल मक्का के लोगों ने अरबों का बहुत बड़ा लश्कर जमा करके, जिन में मदीना के यहूदी भी शामिल थे एक होस्ले से मदीने पर हमला किया कि वह इस्लाम और मुसलमानों को मिटा कर रहेंगे, लेकिन इस हमले में भी उनको कामयाबी नहीं हुई और वह नुकसान उठ कर वापस चले गये।

दूसरे साल आँ हज़रत ने सहाबा को लेकर 'उमरा' (छांटे हज) के लिये मक्का का सफ़र किया, लेकिन मक्का के लोगों ने आगे बढ़ कर एक काम पर जो 'हुदैबिया' कहलाता है आप को रोक दिया। बहुत सी बात-चीत के बाद दोनों फ़रीक़ में सुलह हुई, और तय पाया कि इस साल आँ हज़रत मदीना लाट जायें, आइन्दा साल आ कर उमरा करेंगे। इस सुलह नामा के मुताबिक आँ हज़रत वापस लाट गए।

अपनी काम की तरफ़ से कुछ महलन मिली तो आँ हज़रत ने रुम, ईरान मिस्र हब्शा वगैरह के बा-शाहों के पास इस्लाम की बात के खत भेजे, खतों को लेकर उन बड़े बड़े देवाँगों में जाने वाले वह मुसलमान थे जिन का बदन पर साबन कपड़े भी न थे, लेकिन ख़ुदा के उन सच्चे बन्दों ने बे-झिझक जाकर ख़ुदा-रसूल का पैग़ाम पहुँचाया।

मक्का के लोगों ने हुदैबिया की सुलह को तोड़ डाला, आँ हज़रत को इसकी ख़बर मिली तो आपने मक्का पर चढ़ाई की, यह हिज्रत का आठवाँ साल था। ख़ुदा ने अपने पैरम्बर से दुश्मनों पर फट्टा देने का जो वादा किया था उसके पूरा होने का वक्त आ चुका था, मक्का पर आँ हज़रत का कब्ज़ा हो गया, मक्का के बड़े बड़े सदाँर जो बीस बरस से आप के साथ दुश्मनी कर रहे थे और जिन्होंने आप के ओर इस्लाम के मिटाने में कोई कसर उठा न रखी थी, हारे हुए दुश्मन

की हैसियत से आप के सामने हाज़िर हुए, लेकिन आं हज़रत इतने रहम दिल और दगुज़र (क्षमा) करने वाले थे कि आपने उनसे किसी तरह का बदला नहीं लिया, कोई शस्त्र बात भी नहीं कही, सबको बिल्कुल मुआफ़ कर दिया ।

मक्का के बाद ताएफ़ रह गया, वहां के लोग बड़े दावे के साथ लड़ने पर तय्यार हुए, लेकिन वह भी हार गए, पूरे अरब की आंखें मक्का वालों पर लगी हुई थीं, उनके हार मान लेने के बाद पूरे अरब को यक़ीन हो गया कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के सच्चे रसूल हैं, इस्लाम खुदा का सच्चा दीन और क़र्आन खुदा की सच्ची किताब है, खुदा ने अपने पैग़म्बर की मदद और इस्लाम भी फ़तह का जो वादा किया था वह पूरा हो गया, इसलिए अरब के काने कोने से गरोह के गरोह मदीना आने और मुसलमान होने लगे ।

इस सूरह में इन्हीं हालात की तरफ़ इशारा करके आं हज़रत से फ़र्माया गया है कि आप जिस काम पर मुक़र्रर हुए थे वह पूरा हो गया, खुदा की मदद आ गई, मक्का फ़तह हो गया, लोग आ आ कर मुसलमान हो रहे हैं, अब वह दिन करीब है कि खुदा आपको अपने पास बुला ले, इसलिये अब आप खुदा के पहरसानों का शुक्र अदा करने के लिये तारीफ़ और पाकी के साथ उसको याद कीजिये, और मुसलमानों से दीन की ख़िदमत और खुदा की हुक़म बर्दारी में जो कमी और कसर रह गई हो उसके बारे में खुदा से बख़्शिश की दुआ कीजिये, खुदा और बन्दे का तअल्लुक किम किस्म का है और इस्लाम ने उसको क्या अहमियत दी है इसका अन्दाज़ा इससे हो सकता है कि आं हज़रत और आप के सहाबा की बीस साल की लगातार क़र्बानियों और जानिसारियों पर भी यह हिदायत की जा रही है कि आप खुदा से मुआफ़ी और बख़्शाइश मांगिये, बन्दा सब कुछ करने के

बाद भी खुदा की बन्दगी का हक अदा नहीं कर सकता, वह अपनी बन्दगी की कबूलियत के लिये भी उसका मुहताज ही रहेगा ।

कुछ लोगों के दिलों में एक खटक पैदा हो सकती है, उसका दूर कर देना भी ज़रूरी है । यह खियाल गुज़र सकता है कि जब आँ हज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) खुदा के सच्चे रसूल थे तो खुदा ने शुरू ही से आप की ओर आप के सहाबा की मदद क्यों नहीं की जो बीस बरस तक आप को तकलीफ़ें और मुसीबतें न उठानी पड़तीं । बात यह है कि खुदा ने दुनिया को इम्तेहान की जगह बनाया है, यहाँ अच्छे और बुरे दोनों रास्ते इन्सान को दिखा दिये गये हैं, और इन्सान को आज्ञा दी दे दी गई है कि वह जिस नतीजे को पसंद करे जो रास्ता चाहे इस्तिस्नान करे । अगर खुदा अपने पैगम्बरों और उनके मानने वालों का बेग़ैर किसी आज्ञा-माइश ही के मदद कर दिया करता और उनके दुश्मनों को सज़ा दे दिया करता तो फिर आज्ञा-माइश आज्ञा-माइश न रह जाती, खुला हुआ फ़ैस्ला हो जाता, फिर हर शख्स मजबूर हो जाता कि वह सर झुका कर पैगम्बरों के पीछे होले, और यह बात उस मसलहत के ख़िलाफ़ थी जिसके मुताबिक़ यह दुनिया बनाई गई है, यहाँ खुदा के पैगम्बरों और उनके साथियों ही की ज़िन्दगी तो इस बात के लिये नमूना होती है कि किस तरह हर किस्म की तकलीफ़ों और मुसीबतों को बर्दाश्त करके हक़ और सच्चाई पर कायम रहना चाहिये, और खुदा के हाँ बोलें और इन्आम हैं वह हक़ और सच्चाई के लिये तकलीफ़ और मुसीबत उठाने ही पर मिलते हैं ।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ।

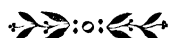
इज़ा जा३अ नसूरुल्लाहि वन्फतहु. (१) व रये
तन्नास यद् खुलून फी दीनिल्लाहि अफ़्वाजन् (२)
फ़सब्विह् बिहम्दि रब्विक वस्तगफ़िहु इन्नहू कान

तब्बाबा (३)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है :

(ऐ पैगम्बर) जब अल्लाह की मदद आ गई और फतह (हासिल होगई) [१] और तुमने लोगों को देख लिया कि वह गोल के गोल अल्लाह के दीन (इस्लाम) में दाखल हो रहे हैं [२] तो अपने पवरदिगार को तारीफ के साथ उसकी पाकी बयान करो और उससे माफी मांगो, बेशक वह बड़ा माफ करने वाला है [३]



३४—सूरः लहब

(मक्के में उतरी और इसमें ५ आयतें हैं)

ज़रूरी तशरीह

सूरह 'अलक' में बताया जा चुका है कि अबू लहब हज़रत पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चचा था मगर आप से सख्त दुश्मनी रखता था । जब आप लोगों को खुदा का पैग़ाम सुनाते तो आप पर पत्थर फेंकता, कहता लोगो ! इस शख्स की बात न सुनो, यह झूठा बेदीन है ।

एक बार आं हज़रत ने सफ़ा पहाड़ पर चढ़ कर मक्का के लोगों को पुकारा, लोग जमा हो गए, तो आपने लोगों को खुदा की इबादत व बन्दगी की दावत दी और उनको क़ियामत के अज़ाब से डराया । लोगों में अबू लहब भी था, आपकी बात सुनकर बोला—“तुम बर्बाद हो जाओ” क्या तुमने हमको इसीज़िये बुलाया था ?

जब उस को खुदा के अज़ाब से डराया जाता तो क़त्ना अगर आख़िरत का अज़ाब सच है तो भी कुछ धर्मा नहीं, मेरे पास बहुत मात्र औलाद है इन सबको बदले में देकर अज़ाब से छूट जाऊंगा ।”

अबू लहब की बीबी का नाम ‘उम्मे जमोल’ था, माला दोज़त होने पर भी वह जंगल जाती और लकड़ियां चुन लाती, अबू लहब की तरह वह भी आं हज़रत की बड़ी दुश्मन थी, जंगल से कांटे लाकर आं हज़रत के रास्ते में डाल देती ताकि आते जाते आपको तकलीफ़ पहुंचे ।

इस सूरह में इन्हीं बीबी शौहर की ख़ुब बी की ख़बर दी गई है । खुदा ने फ़रमाया कि अबू लहब के हाथ टूट गए यानी उसकी बर्बादीय क़ांती है उसको अपने माल पर बड़ा ग़ुर्र है लेकिन उसका माल उसे बर्बादी से बचा नहीं सकता । चुनान्नि दुन्या में तो वह इस तरह बर्बाद हुआ कि बद्र की लड़ाई के सातवें रोज़ उसके बदन पर एक ज़हराला दाना निकला, बीमारी को छूत के डर से घर वालों ने उस अलग डाल दिया वह उसी हालत में मर गया, तीन रोज़ तक उसकी लाश सड़नी रही इसके बाद घर वालों के हुक्म में हब्बा गुलामों ने गड़हा खोद कर उसमें लकड़ी से लाश ढकेल दी और उसे पत्थर से भर दिया, अबू लहब की बीबी भी इस तरह मरी कि जिस रस्सी से वह जंगल से लकड़ी बांधकर लाया करती थी, एक रोज़ वही उसके गले का फन्दा साबित हुई उसीसे उसका दम निकल गया । यह सज़ा तो दोनों को दुन्या में मिली, हो सकता है कि दोज़ल में भी उस औरत के गले में आग की रस्सी लिपटी हुई हो ।

बिस्मिन्लाहिर्रहमानिर्रेहीम् ।

तब्वत् यदा२ अबी लहबिन्व तब्व् (१) मा२ अग़्ना
अन्हु मालुहू व मा कसब् (२) सयसला नारन् ज़ात
लहबिन् (३) वम्रर अतुः हम्मालतल् इतब् (४)

फी जीदिहा हब्लुम् मिम्मसद् (५)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत ही रहम वाला है।

अबू लहब के हाथ टूटें (यानी वह बर्बाद हो) और (समझलो) वह बर्बाद हो गया [१] न उसके माल ही ने उसे कुछ फायदा पहुँचाया न उसी चीज़ ने जो उसने कमाई [२] वह जल्द ही लपटें मारने वाली आग में दाखिल होगा [३] और उसके साथ उसकी बीबी भी जो ईंधन ढोने वाली है [४] उसकी गर्दन में खजूर की बटी हुई रस्सी होगी [५]



३५—सूरः इक्लास

(मक्का में उतरी और इसमें ४ आयतें हैं)

ज़रूरी तशरीह

इस सूरह के बहुत से नाम हैं, जिसमें से कुछ यह हैं—सूरः तौहीद, सूरः निजात, सूरः मऽरिफ़त, सूरः समद, सूरः बर्अत, सूरः नूर, लेकिन सब से मशहूर नाम सूरः इक्लास है, इक्लास के मऽनी हैं ख़ालिस करना, और ख़ालिस ऐसी चीज़ को कहते हैं जिसमें कोई खोट और मिलावट न हो। इस सूरह के सूरः लक्लास कहने की वजह यह है कि यह सूरह खुदा के बारे में ऐसे ख़ालिस और پاک साफ़ अक़ीदे की तालीम देती है जिसमें किसी किस्म की बद अक़ीदगी की आमेज़िश और मिलावट नहीं है, जो शक्स इस सूरह के मुताबिक़ खुदा को मानता है उसका अक़ीदा हर किस्म के ग़लत और बुरे अक़ीदे की आमेज़िश और मिलावट से پاک हो जाता है।

दीन की सब से बड़ी बुनियाद खुदा की ज्ञात और उसकी सिफ़ात (अस्तित्व और गुणों) के बारे में ठीक ठीक अक़ीदा है। इस्लाम और दूसरे मज़हबों में एक बुनियादी फ़र्क़ यह है कि खुदा के बारे में जैसे साफ़ और बे लाग अक़ीदे की तालीम इस्लाम देता है दूसरेम ज़हब नहीं देते, जो लोग भी खुदा को मानते हैं वह किसी न किसी सूरत में इस बात को ज़रूर मानते हैं कि खुदा अकेला है, उसी ने सब को पैदा किया है, कोई उसकी बराबरी का नहीं है, लेकिन इन्सानी समझ बूझ का यह कितना अज़ूबा पन है कि इस्लाम के सिवा कोई ऐसा मज़हब नहीं जिस ने इस सब से सीधी सादी और सब की मानी हुई बात में गड़बड़ न कर दिया हो, और घुमा फिरा कर दूसरों को खुदा का शरीक न बना दिया हो, इस्लाम से दूसरे मज़हबों की लड़ाई की सब से बड़ी बुनियाद यही है कि इस्लाम खुदा ही को क्यों मानता है ? जिन को वह खुदा या खुदा का शरीक मानते हैं उनको भी क्यों नहीं मानता ? हिन्दोस्तान में अज़ान और नमाज़ पर सैकड़ों फ़साद हो चुके हैं, अज़ान क्या है ? एक खुदा की इबादत का बुलावा, नमाज़ क्या है ? एक खुदा की इबादत, और एक खुदा को सब मानते हैं, और एक खुदा की इबादत करने पर लड़ते भी हैं, इससे ज़्यादा तअज़्जुब और अफ़सोस की बात और क्या हो सकती है ?

अरब के लोगों का भी इसी बात पर झगड़ा था कि इस्लाम यह क्यों कहता है कि देवी देवताओं को न पूजो, खुदा ही की इबादत करो, आखिर वह खुदा है कैसा ? उसकी सिफ़ात (गुण) क्या हैं ? भौं हज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से बड़े दावे के साथ यह सवाल किया गया था, उन्हीं के जवाब में यह सूरह उतरी ।

इस सूरह में अल्लाह का नाम लेकर उसके बारे में पांच बातें बताई गई हैं, अल्लाह के मानी माबूद (पूज्य) के हैं, और जो माबूद है उसी के लिए सारी बड़ाइयाँ हैं, वही सब से बड़ा हाकिम है और उसी का हुक्म सब हुक्मों के ऊपर है ।

अल्लाह के बारे में जो पांच बातें ऊपर बताई गई हैं वह यह हैं—

१—वह सबसे निराला और अकेला है, उसके सिवा और कोई खुदा नहीं है, वह अपनी ज़ात (व्यक्ति) के लिये किसी का मुहताज नहीं, जब कुछ न था जब भी वह मौजूद था, और जब कुछ न होगा जब भी वह मौजूद रहेगा ।

२—वह सब का मजसूद (उद्देश्य) सबका सहारा और सबका ठिकाना है और खुद वह सबसे बेपर्वा है, उसको किसी के सहारे की जरूरत नहीं ।

३—खुदा किसी का बाप नहीं, लेकिन अल्लाह का जो मफ़हूम है वह बाप से भी बढ़ कर है ।

४—वह किसी का बेटा नहीं है क्योंकि जो सबका ख़ालिक और सबका बनाने वाला है वह किसी का बेटा कैसे हो सकता है, यह उसकी शान के ख़िलाफ़ है ।

५—कोई उसकी बराबरी का नहीं, वह ज़ात बिरादरी के भगड़े से पाक है, सब मख़लूक हैं वही ख़ालिक है, सब मुहताज हैं वही ग़नी है, सब अविद हैं, वही माबूद है, सब मर मिट जाने वाले हैं, वही बाकी रहने वाला है, कोई उसके जोड़ का कैसे हो सकता है ?

बिस्मिल्ला हिरह्मा निरहीम्

क़ल् हुवल्लाहु अहद् (१) अल्लाहुस्समद्
(२) लम् यलिद् वलम् यूल्द् (३) वलम् यकुल्लहु
कुफ़ुवन् अहद् (४)

तजमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है ।

(ऐ पैग़म्बर !) कह दो कि वह अल्लाह एक है [१]

अल्लाह वे पर्वी है [२] न कोई उसकी औलाद है और न वह किसी की औलाद है [३] और न कोई उसकी बराबरी का है [४]



३६—सूरः फलक

(मदीना में उतरी और इसमें ५ आयतें हैं ।)

ज़ल्ला तशरीह

बहुत सा चीज़ें ऐसा हैं जिनमें अच्छाइयों के साथ बुराइयां भी होती हैं । और उनसे आदमी को नज़ा और आराम के साथ नुक़सान और तकलीफ़ भी पहुँचता रहती हैं । उनमें से कितनी चीज़ें ऐसी हैं जिनको आदमी देखता है और उनसे बच जाता है, कितनी चीज़ों का उसे पना नहीं चक़ता और उनकी बुराइयों से उसे नुक़सान और तकलीफ़ पहुँच जाती है, सारी चीज़ें खुदा की पैदा की हुई हैं और उसी के अख़्तियार में हैं, इस लिये इन्सान को तालीम दी गई है कि वह सारी बुरी चीज़ों की बुराई से खुदा की पनाह (शरण) मांगता रहे ।

हर चीज़ अपना एक असर रखती है, हक़ों और लफ़्ज़ों में भी असर होता है, हक़ों और लफ़्ज़ों के बुरे असरात का नाम जादू और सिहर है । इसद (ईश्या) कहने को मामूली चीज़ है, लेकिन जब किसी शक़्स, समाज या क़ौम में इसद की आग भड़क उठती है, तो अमून, इत्तिहाद, मुहन्बन और दोस्ती सबको जलाकर रख देती है । इसलिये इन दोनों चीज़ों से ख़ासतौर पर पनाह मांगना सिखाया गया है ।

इस तालीम से एक ख़ास बात यह माक़ूम हुई कि इन्सान खुदा की मदद और हिक्माज़त से बेपर्वा होकर अमून और सलामती से नहीं रह सकता ।

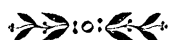
विस्मिल्लाहिरहमानिरहीम् ।

कुल् अऊज़ु बि रब्विल् फलकि (१) मिन् शरि
मा खलक (२) वमिन् शरि गासिकिन् इजा वकब् (३)
वमिन् शरिन्नफ़ासाति फ़िल् उक़द् (४) व मिन् शरि
हासिदिन् इजा हसद् (५)

तजमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है ।

(ऐ पैगम्बर !) कह दो कि मैं सुब्ह के पर्वरदिगार की पनाह मांगता हूँ [१] उन सारी चीज़ों की बुराई से जो उसने पैदा की हैं [२] और अँधेरी रात की बुराई से जब वह छा जाये [३] और (गंडे की) गिरहों पर (मंतर पढ़ कर) फूँकने वाली आँरतों की बुराई से [४] और हसद करने वाले की बुराई से जब वह हसद करे [५]



३७—सूरः नास

(मदीना में उतरी और इसमें ६ आयतें हैं)

जरूरी तशरीह

सूरह फ़लक में जिन चीज़ों की बुराई से पनाह मांगने की तालीम दी गई है उन सब की बुराइयों से बढ़ी हुई शैतान की बुराइयां हैं । इसी ख़सूसियत (विशेषता) की बिना पर उसकी बुराइयों से खास तौर पर पनाह मांगने की तालीम दी गई है ।

क्रुर्आन शरीफ में बताया गया है कि इन्सानि ज़िन्दगी आजमाइश (परीक्षा) और जांच की ज़िन्दगी है, उसके चारों तरफ़ अच्छाइयां भी हैं और बुराइयां भी, उसके सामने खुदा की तालीम और हिदायत भी है और शैतान का मक़ और फ़रेब भी । इन्सान बहुत से कामों का इख़्तियार भी रखता है और बहुत से कामों में बेबस भी है, क्रुर्आन में बार बार ख़बर्दार किया गया है कि शैतान इन्सान का दुश्मन है, अगर इन्सान खुदा के कहने पर चलेगा तो निजात और भलाई पाएगा, और शैतान की बात मानेगा तो तबाह और बर्बाद हो जायेगा, इन्सान की शख़्सी (व्यक्तिगत) ज़िन्दगी को देखिए या इज्तेमाई (समाजी) ज़िन्दगी, को वह नेकी और बदी की एक कश्मक़श और जंग हैं । इस जंग को जीतने के लिये ज़रूरी है कि आदमी शैतान की बुराइयों से खुदा की पनाह (शरण) मांगता रहे ।

वह इन्सान भी शैतान ही हैं जो रिश्ते नाते के नाम पर, मज्हब और फ़िर्क के नाम पर, मुल्क और क़ौम के नाम पर इन्सानों को नेकी, इन्सानियत और खुदा परस्ती के रास्ते से हटा कर बेईमानी, बेइन्साफ़ी, ज़ुल्म, फ़साद, कुफ़्र और शिर्क की तरफ़ बुलाते हैं ।

यह क्रुर्आन शरीफ़ की आखिरी सूरह है, इसमें यह मार्के की बात बताते हुए इस्लाम की सब से बड़ी बुनियादी बात बता दी है, वह यह कि खुदा इन्सान का रब (पालन कर्त्ता) और माबूद (पूज्य) ही नहीं है वह इन्सानों का बादशाह भी है, यानी इन्सान खुद मुस्त्तार नहीं है वह खुदा का नाएब (प्रति निधि) है, इस लिये जिस इन्सान के हाथ में भी हुक्मत का इख़्तियार आए, उसका फ़र्ज़ है कि वह अपना हुक्म न चलाये, खुदा का हुक्म चलाये और खुद भी खुदा ही का हुक्म माने ।

कोई बादशाह हो या पार्ली मेन्ट, कोई सद्र (राष्ट्र पति) हो या डिक्टेटर (अधिनायक) अगर वह खुदा के हुक्म की जगह अपना

हुकम चलाता है तो क़ुर्आन के नज्दीक वह खुदा से बगावत करता है, चाहे वह खुदा के मानने का कितना ही दावा करता हो, नमाज़ पढ़ता हो, पूजा करता हो, और खुदा के नाम का वज़ीफ़ा (स्मरण) करता हो ।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ।

कुल अऊज़ु बिरब्बिन्नासि (१) मलिकिन्नासि,
(२) इलाहिन्नासि (३) मिन् शरिल् वस्वासिल् खन्नासिल्
(४) लजी युवस्विमु फ़ी सुदूरिन्नासि (५) मिनल्
जिन्नति वन्नास् (६)

तर्जमा

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम वाला है ।

(ऐ पैगम्बर !) कह दो कि मैं पनाह मांगता हूँ इंसानों के पर्वरदिगार की (१) इंसानों के बादशाह की (२) इन्सानों के मऽबूद (पूज्य) की (३) (दिलों में) बुरा ख्याल डालने वाले, छिप जानेवाले (शैतान) की बुराई से (४) जो लोगों के दिलों में (बुरे) ख्याल डालता है (५) (चाहे वह) जिनों में से हो या इन्सानों में से (६)



सूरः फ़ातिहा

(मक्का में उत्तरी और इसमें ७ आयतें हैं)

यह सूरह अम पारे की नहीं पहले पारे की है, इसी से क़ुर्आन शरीफ़ शुरू होता है, यह तमाम नमाज़ों में बार बार पढ़ी जाती है,

इसके पढ़े बगैर नमाज़ नहीं होती । इसलिये अम्पारे के साथ इसका देना बहुत ज़रूरी है ।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम्

अल् हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन् (१) अर्-
ह्मानिर्रहीम् (२) मालिकि यौमिदीन् (३) ईयाक
नऽबुदु व ईयाक नस्तईन् (४) इह्दिनस्सिरातल् मुस्तक़ीम
(५) सिरातल्लज़ीन अन्अम्त अलैहिम् (६) गैरिल्
मग़्दूबि अलहिम् वलद्दुअल्लीन् (७)

तर्जमा

सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिये है जो तमाम जहान वालों
का परवर्दिगार है (१) बड़ा मेहरवान निहायत रहम वाला है
(२) जज़ा और सज़ा के दिन का हाकिम है (३) (ऐ अल्लाह !)
हम तेरो ही इबादत करते हैं और तुम्ही से मदद मांगते हैं (४)
हमें सीधा रास्ता दिखा (५) उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने
इन्आम फ़र्माया, (६) उन का (रास्ता) नहीं जो तेरे ग़ज़ब में
आगये, और न उनका जो सीधे रास्ते से भटक गये (७)

ज़रूरी तशरीह

हदीसों में इस सूरह की बहुत फ़ज़ीलत और बुज़ुर्गी बयान की
गई है । इसके बहुत से नाम हैं जैसे असासुल कुर्बान सूरह दुआ,
सूरह मुनाजात, सूरह सलात; यानी कुर्बान की बुन्याद दुआ, प्रार्थना
और नमाज़ की सूरह । इसका सबसे मशहूर नाम फ़ातिहा यानी कुर्बान
की खोलने वाली या उसका दीवाचा (भूमिका) है, यह सूरह पूरे

क़ुरआन का निघोड़ है, देखिये—

१—ख़ुदा का अक़ीदा (धारणा)—सारी तारोफ़ें और ख़ूबियां ख़ुदा ही के लिये हैं, वह तमाम ज़हान वालों का पालने वाला है और मालिक और निहायत रहमोकरम वाला है ।

२—क्रियामत और आख़िरत का अक़ीदा-यानी ख़ुदा क्रियामत के दिन का हाकिम है, वह उस रोज़ हर इन्सान को उसके अच्छे और बुरे काम के मुताबिक़ जज़ा और सज़ा देगा ।

३—हर तरह के शिक़ का रद्द, यानी वही इस लायक़ है कि उसकी इबादत और हुक्म बर्दारी की जाये, हर मुसीबत और ज़रूरत में उसी से मदद मांगी जाये, जिन्दगी के तमाम सामान और वसीले उसी के इस्तिथार, में हैं ।

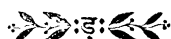
४—‘वही’ और रिसालत का अक़ीदा, यानी जिन्दगी गुज़ारने का सहीह रास्ता ख़ुदा ही के पास है, उसी के बताये हुए रास्ते पर चलने से इन्सान सच्ची राहत और खुशी और सच्चा आराम और इत्मीनान पा सकता है, यही सच्चा दीन और धर्म है ।

५—ख़ुदा के बताए हुए जिन्दगी के रास्ते पर चलने वाले ख़ुदा के रसूल और उनके पैरव (अनुयायी) जिन पर ख़ुदा का फ़ज़लो करम हुआ ।

६—ख़ुदा की बताई हुई राह के छोड़ देने वाले और और अपनी नादानी से उससे भटक जाने वाले जो ख़ुदा के ग़ज़ब (कोप) में पड़े और उसके फ़ज़लो करम से महरूम (वंचित) हो गये ।

कुछ ग़ैर मुस्लिमों ने सूरह फ़ातिहा को देखकर यह लिख दिया कि यह ख़ुदा का नहीं, आदमी का कलाम है । उनको यह बात मालूम नहीं कि दूसरी चीज़ों की तरह ख़ुदा ने दुआ (प्रार्थना) की भी तालीम दी है, यह सूरह नमाज़ में बार बार पढ़ी जाती है । दुआ के ढंग में होने के वजह से आदमी के दिल पर इसका खास असर

होता है, और खुदा की वड़ाई और बुजुर्गों के एहसास (भावना) और उसकी इबादत और बन्दगी के जज़बे से उसका दिल लबरेज़ हो जाता है ।



खात्मा

आप ने पूरा अम पारा पढ़ लिया, हमने दीबाचे में जो बातें लिखी हैं वह पूरे क़ुर्आन शरीफ़ के बारे में हैं और अम पारा क़ुर्आन शरीफ़ का सिर्फ़ एक पारा है, लेकिन आपने देख लिया कि पूरे क़ुर्आन शरीफ़ के बारे में जो बातें लिखी गई हैं वह सब अमपारे में भी मौजूद हैं, क़ुर्आन शरीफ़ की मिसाल एक दरख़्त की सी है, दरख़्त जहां तक भी बढ़ता और फैलता चला जाता है, उसकी डालियां, पत्ते, फूल और फल एक ही तरह के होते हैं, उसकी किसी भी डाली को देख कर आदमी पहचान ले सकता है कि वह किस दरख़्त की है, इसी तरह क़ुर्आन शरीफ़ के किसी हिस्से को भी देखा जाये साफ़ माळूम हो जायेगा कि यह क़ुर्आन शरीफ़ है ।

क़ुर्आन शरीफ़ की तालीम से आप को यह बात अच्छी तरह माळूम हो गई कि क़ुर्आन किसी ख़ास नस्ल, किसी ख़ास क़ौम, किसी ख़ास मुल्क, या किसी ख़ास ज़माने के लिये नहीं है, बल्कि सूरज और चांद की रोशनी की तरह यह सारी दुनिया और तमाम ज़माने के इन्सानों के लिये है । हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अरब में पैदा हुए, और क़ुर्आन शरीफ़ वहीं उतरा और वहीं के लोगों ने इसे पहले क़ुबूल किया, इन बातों की बिना पर क़ुर्आन शरीफ़ को ख़ास अरब के लिये या उस ज़माने के लिये जब वह उतरा ख़ास नहीं ठहराया जा सकता, यह जब भी उतरता और जहां भी उतरता एक ही ज़माने और एक ही मुल्क में उतर सकता था, इस लिये देखने की चीज़ यह

नहीं है कि वह कब उतरा और कहां उतरा ? देखना यह चाहिये कि उसका तालीम क्या है । कुर्आन नस्ल, खान्दान, मुल्क और वतन की बिना पर इन्सानियत की तज्जसीम को जापूज नहीं ठहराता, वह अकीदा और अमल के प्रतिबार से इन्सान की दो किस्में करार देना है, एक किस्म नेक इन्सानों की जो खूदा और उसके भेजे हुए तरीक़े के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारने वाले हैं दूसरी किस्म उन बदकार लोगों की जो खूदा का इन्कार करने वाले हैं और खूदा के बताये हुए तरीक़े पर चलने की जगह अपनी खाहिशों के पीछे चलने वाले और दुन्या में बद अम्नी और फ़साद फैलाने वाले हैं ।

कुर्आन की तालीम का खुलासा है—

(१) सारी काएनात (ब्रह्माण्ड) का एक खूदा और एक हाकिम है ।

(२) इन्सानी ज़िन्दगी का एक कानून जिसे लेकर कुर्आन आया है, और जो बुन्यादी तौर पर तमाम दुन्या की खूदाई किताबों के मुताबिक है ।

(३) एक इन्सानियत जिस में नस्ल, कौम, मुल्क और वतन की बिना पर कोई तज्जसीम नहीं ।



हिन्दी में इस्लामी किताबें

(१) अम पारा (मानीदार) (२) पंज सूरह (मानीदार)
 (३) मुनाजात मक्बूल (४) तालीमाते इस्लाम (५) पैगम्बरी
 दुआयें (६) अक्कायद नामा (७) इस्लाम की बुन्यादी तालीम
 (८) हमारे रसूल (९) रसूलुल्लाह का दीदार (१०)
 मुअज्जजाते रसूल (११) प्यारे नबी की प्यारी बातें (१२) रसूल
 के सहाबा (१३) चार यार (१४) खातूने जन्नत (१५) क़ससुल
 अंबिया (१६) तज्जकेरतुन् औलिया (१७) मुअल्लिमे नमाज़ ॥)

ऊपर की सारी किताबों की ज़बान 'क़र्आन का परिचय' से भी
 ज्यादा सादा और आसान है। मगर नीचे लिखी हुई किताबें
 मुसल्मानों और ग़ैर मुस्लिमों सब के लिये लिखी गई हैं इसलिये
 इनकी ज़बान हिन्दी रखी गई।

इस्लाम का परिचय १॥) इस्लाम और ग़ैर मुस्लिम विद्वान ३)
 रसूल का परिचय २॥) रसूलुल्लाह का जीवन चरित्र ५) रहमतुल
 लिल् आलमीन ४) सलामती का रास्ता १-) नबूवते मुहम्मदी
 का अक़ली सबूत १-) दोने हक़ १-) इस्लाम में ज़बरदस्ती
 नहीं १-) शान्ति पथ प्रदर्शन ॥) इस्लाम प्रबोधनी २)

नीचे की सात किताबें "इस्लाम और ग़ैर मुस्लिम विद्वान"
 और "इस्लाम का परिचय" के अलग अलग हिस्से हैं।

(१) पैगम्बरे इस्लाम की अज़मत ॥) (२) पैगम्बरे-
 इस्लाम की सदाक़त १-) (३) इस्लामी तालीमात की
 सदाक़त ॥) (४) इस्लाम के आलमगीर असरात १-) (५)
 इस्लाम के बुन्यादी अक्कायद ॥) (६) इस्लामी अक्कीदां के
 असरात १-) (७) क़र्आन और सीरत यूरुय में ॥)

इस्लामी साहित्य सदन, रामनगर, (बनारस स्टेट)

मुद्रक—काशी राज मुद्रणालय, रामनगर (बनारस)।

